के॰ मा॰ १

कैलासमार्ग

अर्थात्

स्कंदपुराण का ब्रह्मोत्तर खण्ड

जिसको

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी रामकृष्ण-
भारती शिष्य माधवानंद भारती ने दोहा चौपाई छन्द
रीति से श्री काशी जी में भाषा किया

वही

ज़िलअ़ ग़ाज़ीपुर के डिपुटी कलक्टर बहादुर श्री पंडि
त देवीप्रसाद साहब के आज्ञानुसार

आगरा

सत्यप्रकाश यंत्रालय में ज्वालाप्रसाद भार्गव के प्रबंध
से छपा

संवत् १९२८ पहली बार ३००

कैलास मार्ग का सूचीपत्र

ॐ

श्री गणेशायनमः श्लोक - भक्त्यासदा विघ्नहरं गणेशमु
माभजं देवपतिंदिनेशं कृपार्णवंदेववरं रमेशं वंदे सुह
त्कल्पतरुं महेशं १ श्री गुरुंपरमानंदं दक्षिणामूर्तिवि
ग्रहं सर्वभीष्टप्रदं वंदे कर्मणा मनसा गिरा २ ॥ ७ ॥

सोरठा

विनवौं गिरिजानंद मंगलायतन गजवदन
गुनमय आनंदकंद सिद्धिभवनकल्याणप्रद
विश्वरूप भगवान सतचित आनंद ज्ञानमय
एक अनंत प्रमाण गिरामगोचर ध्यावहूं ॥ १ ॥
वंदौं राम कृपाल जासु चरित मंगलभवन ॥
जेहिकर नाम विशाल मुक्तिहेतु पावन परम ॥
व्रजवनिता रतिहेतु परम रूप मन्मथ मथन
वंदौं यदुकुलकेतु वासुदेव करुनाभवन ॥ २ ॥
विनवहुँ श्रीपति नाथ शिव स्वरूप शंकर सुखद
कीन्हो लोकसनाथ भाष्यामृत वर प्रगट करि ॥
पद्म पाद शिर नाय श्री सुरेश की विनय करि ॥

हस्तामलक मनाय तोटक पद वंदन करौं ६
वंदौं शंभु सुजान भक्त कल्प तरु ज्ञान निधि ॥
आशुतोष भगवान उमानाथ जननाथ प्रभु ७

चौपाई

पुनि वंदौं त्रिपुरारि पिआरी । गणपति जननि तिहूंपुर उजियारी
शारद मातु मनाय वहोरी ॥ चतुरानन विनवों कर जोरी
रमानाथ बहु भाँति मनावों ॥ पुनि पयोधि तनहि शिर नावों
वंदौं दिनकर भूरि प्रकाशा ॥ जगसुखदायक तम कृत नाशा
इंद्रादिक सब देव मनाई ॥ ऋषि मुनि कवि लोगन शिर नाई
श्रीगुरुवर गुन ज्ञान निधाना । विश्वनाथ वपु श्रीभगवाना
सीतापति पर्य्याय सुनामा ॥ कृष्ण नाम युत प्रभु सुखधामा
भारतीश इव तेज प्रभावा ॥ आशुतोष सम सहज सुभावा
तासु पाद पंकज शिर नाई । प्रेम सहित बहु विनय सुनाई
श्रीगुरुवर पदरज अतिपावनि । ब्रह्मज्ञान की हेतु सुहावनि ॥
सकल मनोरथ प्रद दुख हारी । तासु तिलक निज भाल सँवारी
शिव की रति वरनौं दुखहरनी । भवसागर की जो शुभ तरनी
हरिहर यश सब भांति उदारा । व्यासादिक मुनि कृत विस्तारा
कौन पुरान भयो जेहि मांहीं ॥ श्रीगिरिजापति की रति नांहीं
श्रीगिरिजा वरपद मन दीन्हे । बहुत ग्रंथ अवलोकन कीन्हे
जहँ प्रभु यश गायो सुखमूला । मंगलमय नाशक सब शूला
एहु भल बहु अनभल किमि कहई । जो गुन महिमा जानत अहई
है परंतु यह रीति सुहाई ॥ जासु द्वार जेहि लही भलाई ॥
तेहि को सर्वोत्तम है सोई ॥ ताहि सराहत दोष न होई ॥
एहि प्रकार सर्वोपर जोई ॥ तेहि यश की बरनत रुचि होई

दो॰ ॥ श्रीब्रह्मोत्तरखंड महँ शंकर चरित उदार ॥
शैव धर्म को जहँ भयो वरनन भली प्रकार ८

सो पुनि २ जब कीन विचारा ॥ गाथा गाय कही बहु वारा ॥
शिवकीरति अतिशय प्रियलागी गाथा रुचिर प्रेम रस पागी ॥
हर आराधन विधि परिपाटी शंभु धाम पंथा उद्घाटी ॥२॥
मन अति मोद बढावनि हारी शिव गाथा जेहि में अति प्यारी
बहु प्रकार मन पाय हुलाशा मधुर मनोरथ कीन्ह प्रकाशा
जो भाषा महँ यह यश पावन वरनो जाय लोक मन भावन
देवगिरा नहिँ अभ्यासिन केरा ॥ तिनहूं को हित होय घनेरा ॥
यह अभिलाष रही मन माहीं कर्म विवश पूरन भै नाहीं ॥
अध्यातम रामायण मांहीं ॥ जो गीता रामानुज पांहीं ॥
उत्तर में वरनी सुख सारा ॥ दोहा तासु स्व मति अनुसारा
कीन्हे पुनि शिवविजय सोहाई शंभु प्रसाद यथामति गाई ॥

दो॰ ॥ महा मनोरथ सिंधु को जब पायो मैं पार ॥ २ ॥
तब ब्रह्मोत्तरखंड को भयो उछाह अपार ९ ॥

विश्वनाथ प्रेरक उर वासी ॥ सत चित आनंदमय अविनाशी
जेहि प्रकार निज विजय सँवारी पुज बहु माहि तथा त्रिपुरारी
वार वार हर गौरि मनाई ॥ श्रीगुरुपद चरनन शिर नाई
शिवकीरति वरनौ अति पावनि श्रवण सुखद सज्जन मन भावनि
इंदु अंक विंशति षट् साला ॥ आनंद वन यह चरित रसाला
फागुन सुखद पाख उजियारा दशमी रैनि पुष्य शनि वारा
करहुँ अरंभ शंभु गुन गाथा पुनि २ गुरु चरनन धरि माथा
है शिवलोक दानि यह ग्रंथा जनु कैलास केर कर पंथा ॥
हैं अध्याय रूप विश्रामा ॥ सज्जन पथिकन कहँ सुखधामा

जे साधन बरने बहु भांती ॥ ८ ॥ सोइ सुखदायक तहँ बर पांती

दो॰॥ जे आवहिं इतिहास बर सुंदर कथा विभाग
ते एह मारग के रूचिर वापी कूप तडाग २०॥

जहँ शिवभक्ति प्रवाह उदारा। सो अति पावनि सरि बर धारा
सब श्रम नाशक अह सुखमूला। सुखप्रद हरनि सदा सब शूला
है जहँ शिव स्वरूप कर ज्ञाना। सो तारक दृढ सेतु समाना॥
श्रद्धा बर पाथेय समाना॥ पथ दर्शक गुरु ज्ञान निधाना
जे हर भक्त विमल गुण पांती। ते एहि पथ के सुहृद संघाती
तजि विचार दूसर एहि मांहीं। मारग को कोउ नहु श्रम नांहीं॥
काम क्रोध मत्सर अभिमाना। लोभ मोह मग तस्कर नाना
यदपि चोर दुखप्रद मग मांहीं। नृप बल्लभ कहँ देखि डरां हीं
तिमि जगदीश भक्त कहँ देखी। कामादिक भय लहहिँ बिशेखी
जिन के शिव त्राता जग मांहीं। तिन को कहूं कोउ नहु भय नांहीं
यद्यपि सुगम न कछु संदेहा। शंभु कृपा बिन दुर्लभ एहा
नाथ कृपा भाजन है जोई। पांव धरै एहि मारग सोई॥
एह विधि मग महिमा दर्शाई। बरणों प्रभु कीरति मन भाई

सो॰ श्री माधव को शिर नाय बहुरिउ माधव को सुमिरि
सो मारग मन लाय बरनहि माधव भारती ११

अथ ग्रंथारंभः

दो॰॥ ज्योति रूप आनंदमय निर्मल ज्ञान स्वरूप॥
सब गुन भासक नित्य प्रभु बंदौं शिव सुरभूप ११

शौनकादि मुनि परम सुजाना। कलि के दोष देखि बलवाना
नीमषार अति पावन जानी। तहाँ बसहिं बहु ऋषि मुनि ज्ञानी
योग समाधि आन बिसराई। प्रभु के चरित सुनहिं मन लाई

सूत सुनावहिं प्रभुगुण गाथा । एहि प्रकार सब ऋषय सनाथा ॥
आनंद वारिधि मगन विराजहिं । जिन्हहिं देखि कलि अघ गुन भाजहिं ॥
एक बार ते सब बड भागी ॥ चंद्रकला धर पद अनुरागी ॥
सूतहि बहु प्रकार सन्मानी ॥ बोले बहुत सराहि सुबानी ॥
विष्णु महातम आपु सुनावा ॥ अति उत्तम सुनि बहु सुख पावा ॥

दो० पाप विनाशक पुन्य प्रद हरि गुन दियो सुनाय ॥
अब पुरारि की रति विमल कहु बरनौ मुनि राय ९३

तासु मंत्र महिमा अति पावन । पुनि शिव के व्रत परम सुहावन ॥
पूजा की महिमा मुनि राई ॥ कथा महातम देहु सुनाई ॥
भक्ति प्रवाह कहो गुनवाना ॥ बहुरि शंभु के भक्त सुजाना ॥
तिनकी महिमा सब अघ हरनी । कहो मुनीश मोह तम तरनी ॥
मुनिवर प्रश्न सुनत हर्षाने ॥ सूत सप्रेम सकल सन्माने ॥
ऐ तोहि परम श्रेय सुखदाई । शंभु कथा में प्रीति सोहाई ॥
सो तुम्हारि अति पावन देखी । उमानाथ पद प्रीति विशेखी ॥
शंभु भक्ति महिमा विस्तारा ॥ को अस जो जग पावहि पारा ॥
ब्रह्मादिक नेहि सकहिं नगाई । सो किमि मोपै बरनि शिराई ॥
नाथ प्रेम महिमा विस्तारा ॥ तासु लेश निज मति अनुसारा ॥
बरनत हौं तुम सन मुनि राई ॥ श्रवण करहु सादर मन लाई ॥
जेते यज्ञ कहे श्रुति मांहीं ॥ जाप यज्ञ सम दूसर नाहीं ॥
सब पुन्यन महँ परम सुहायो । सकल श्रेय महँ जो मन भायो ॥
परम यज्ञ जप यज्ञ सुजाना ॥ गायो गीता में भगवाना ॥

सो० जानहु मोर स्वरूप यज्ञन में जपयज्ञ को ॥ ॥
तेहि ते परम अनूप प्रथमहि सोइ बरनन करौं ९३

शंकर मंत्र जिते संसारा ॥ अहै षडक्षर परम उदारा ॥

दिव्य परम कल्याण स्वरूपा। कहहिं अवय तेहि परम अनूपा
सब देवन्ह में जिमि त्रिपुरारी॥ तिमि यह मंत्र न में सुखकारी
प्रणव हीन पंचाक्षर सोई॥ मुक्ति हेतु ऐसो नहिं कोई॥
जे चाहैं जग सिद्धि अपारा॥ तेसे बहु हर मंत्र उदारा॥
तासु परम महिमा दर्शाई॥ श्री चतुरानन सकहि न गाई॥
सब श्रुति को जहँ परि अवसाना। सो सर्वज्ञ शंभु भगवाना॥
पूरन सतचित आनंद रूपा। रमो जहाँ सो नाथ अनूपा॥

दो॰॥ मंत्रराज यह मंत्र वर उपनिषदन को सार॥
परब्रह्म पावत भये मुनिवर जासु विचार १४

नमस्कार ते जीव स्वरूपा॥ शिव पद ते परब्रह्म अनूपा
उभय अभेद दिखावन हारा। जानहु मुनिवर अंक यकारा
तेहि त अनुभग मंत्र वर एहा॥ परब्रह्म मय नहिं संदेहा॥
जे भव पाश बंधे संसारा॥ तिन के हित शंकर निर्द्धारा॥
प्रथम प्रणव जानहु गुनवाना। नमः शब्द पुनि परम सुजाना।
पुनि शिवाय यह रीति गुणाकर परम मंत्र वर नो करुणाकर
जासु हृदय एह मंत्र सोहावा वसहिं सदा निगमागम गावा
बहु तीरथ बहु मंत्र सोहाये बहु जप मख अनेक मन भाये
सब कर फल कर तल है तासू सो पुनि करै न और प्रयासू॥
ताहि को जब लौं नहिं उच्चरहीं॥ तौ लौ भ्रम सागर नर परहीं॥
तौ लौ अति दारुन संसारा॥ भ्रमहि जहाँ दुख राशि अपारा
जैते सकल मंत्र अधि राजा॥ तिन सब को एहि जानहु राजा॥

सो॰॥ सर्वज्ञान निधान शेखर सब वेदांत को॥ ३२॥
शौनक परम सुजान शंभु षडाक्षर मंत्र यह १५
मुक्ति पंथ श्रुति गान दर्शायो तासु दीप एह मंत्र सुहायो॥

जो अज्ञान सिंधु गंभीरा ॥ वडवानल सम यह मति धीरा ॥
पातक वन कहँ दाव समाना मंत्र राज एह जानु सुजाना ॥
नारि शूद्र संकीरण जोई ॥ जपत मुक्ति पावत सब कोई
नहि दिक्षा नहि होम प्रकारा संसकार तर्पन न्यवहारा ॥
नहिं पुनि काल नेम उपदेशा अति पुनीत यह कह्यो महेशा
दुइ अक्षर को जो शिव नामू ॥ महापाप नाशक गुन धामू ॥
नमस्कार युत किमि कहि जाई मुनिवर तासु प्रभाव वडाई ॥
एहि कारण सद्गुरु पहँ जाई सुनै मंत्र नायक सुखदाई ॥
पुन्य क्षेत्र महँ जपहि सुजाना सद्यसिद्धि प्रद मंत्र वखाना

दो॰॥ गुरु के लक्षण अब सुनो मुनिवर परम सुजान ॥
मन वच क्रम निर्मल सदा शमरत ज्ञान निधान १६

साधु सुभाव लोकहितकारी जिनहिं परम प्रिय हर कामारी
मितभाषी मिथ्या नहिं कहहीं काम क्रोध वर्जित नित रहहीं
सदाचार निर्मल जिन केरा॥ इंद्रीजित परितोष घनेरा ॥
इत्यादिक गुन गृह गत माना देहिं कृपा करि मंत्र सुजाना॥
तौ तत्काल सिद्धि प्रद सोई जो साधक गुरु पद रत होई
जपलायक सुनु सुथल विभागा पुष्कर अरु केदार प्रयागा ॥
सेतुवंध गोकर्ण सोहाया॥ नैमिष वन पावन मुनि राया
संक्षेपहि थल दिये सुनाई॥ सद्यसिद्धि दायक मुनिराई॥

दो॰॥ इहाँ एक इतिहास वर वरनन करहिं सुजान ॥
एक वार वहु वार के सुनत होत कल्यान ॥ १७ ॥

यदु वंशिन महँ परम सुजाना मथुरा के नरपति मतिमाना
अत्युत्साह महावलवाना शूर धीर अतिशय द्युतिमाना
अप्रधर्ष्य गंभीर उदारा ॥ २ ॥ काम देव सम रूप अपारा ॥

नीति निपुन सब लक्षन धामा । महा धनुषदास है सु नामा
काशिराज कन्या गुन खानी । नाम कलावति परम सयानी
रूप शील भय तासु विवाहा । माथुरेश संग सहित उछाहा
भयो जबहि आये निज गेहा । प्रिया वदन लखि सहित सनेहा
निशा समय निज सयन बुलाई । प्राणप्रिया नृप ढिग नहिं आई
काम विवश बहु विनय सुनाई । तदपि न भै नरपति मन भाई
तब नरेश निज सयन विहाई । तासु गहन हित कीन उपाई

दो. महाराज मोहि छिमहु जनि साहस को नाहि काम
धर्माधर्म विवेक युत श्री नरपति गुन धाम १८

प्रिय प्रीतम संगम है जोई । उभय प्रीति युत सुखप्रद सोई
जब मम प्रीति लाभ सरसाई । तब हू है संगम सुखदाई
कौन प्रीति कह सुख नरनाहा । बल करि चहहिं जो भोग उछाहा
प्रीति रहित रोगिनि जो दारा । गर्भवती पुनि जेहि व्रत धारा
रजस्वला अथवा नहिं कामा । भोग योग ऐती नहिं वामा ॥
प्रीणन पालन लालन रंजन । नारि कुसुम कर वर नहिं सज्जन
इत्यादिक बहु नीति बुझाई । काम विवश मन तर नहिं आई
बलकरि तेहि भुज सो गहि लीन्हा । भोग हेतु परिरंभन कीन्हा

दो. ॥ तप्त लोह के पिंड सम कुच तजरो महिपाल ॥
भय विह्वल अति शाप भयो छोड़ि दियो तत्काल १९

भामिनि यह अचरज बड भारी । मोहि भयो तव गात निहारी
पंकज सम कोमल नव गाता । अनल रूप क्यों भयो विधाता
इहि प्रकार भय विस्मय देखी । विहँसि कह्यो करि विनय विशेखी
कारन सुनहु नाथ मन लाये । दुर्वासा मुनि मम गृह आये ॥
बाल वयसि मम रही सुजाना । श्री मुनिवर तप ज्ञान निधाना

शंभु मंत्र पंचाक्षर जोई ॥ करुणा करि दीन्हो मोहि सोई
तासु मंत्र कर परम प्रभावा ॥ मम तन कल्मष सकल नशावा
तव सों मम अति पावन काया पाप सहित जो नर समुदाया
देव भक्ति वर्जित जे लोगा ॥ ते नहिं मम तन परशन योगा

दो॰॥ तुम पुनि राजस्वभाव वश कुलटा गणिका नारि
मदिरास्वाद न जे करहिं सेवहु सदा संवारि २०॥
नित्य स्नान न तुम करहु तुम मंत्र जपो नहिं कोय ॥
भजहु न शंकर चरण मम पर्श शक्ति किमि होय २१

एह प्रकार सुनि प्रिय की वानी नरपति कहन लगो सुनरानी
पंचाक्षर विद्या जो गाई ॥ २॥ आण प्रिया मोहि देहु सिखाई
जासु प्रभाव होय पावन तन ॥ लहौं तोर संगम मन भावन
नाथ उचित उपदेश न मेरो ॥ गर्ग महा मुनि कुल गुरु तेरो
तिनकी शरण होहु नरपाला ते करिहैं उपदेश कृपाला
एह विधि सुनि वनिता की वानी दंपति गे जहँ मुनि विज्ञानी
हाथ जोरि करि दंड प्रणामा प्रीति सहित पूजे गुनधामा
बहु प्रकार करि विनय बडाई नरपति निज अभिलाष जनाई

दो॰॥ नाथ कृतारथ करो मोहि शरण गही मैं आय
शिव पंचाक्षर मंत्र मोहि उपदेशहु मुनिराय २२
राजकर्म वश जो भयो पातक जान अजान ॥ २॥
नाश होंहि जेहि मंत्र ते सो दीजै भगवान ॥ २३॥

एह प्रकार सुनि नरपति वानी यमुना तीर गये मुनि ज्ञानी
कालिंदी तट परम सुहायो ॥ पावन तहँ मंडप जहँ छायो
करि नृपाल यमुना अस्नाना व्रत धरि कीन्हो नेम विधाना
नृप कहँ प्राची दिशि बैठायो मुनिवर शिवपद शीश नवायो

उत्तरमुख बैठे मुनिराया ॥ धरि माथे कर मंत्र सुनाया
शिवस्वरूप वर मंत्र प्रतापा नृप तन सों निकरे सब पापा
कोटिन काक रूप दर्शाहीं ॥ दग्धपक्ष ते भूतल माहीं ॥
गिरि २ भस्म होत सब जाहीं दंपति भे विस्मित मन माहीं
दुनहु श्रीगुरुपद शिर नाई ॥ प्रीतिसहित यह गिरा सुनाई
नाथ बड़ो अचरज हम देखा वायस कुल कहि भाँति विशेखा
तन सों प्रगट भयो मुनि राई ॥ भली प्रकार कहो प्रभु राई
संचित सहस जन्म कर पापा जिन सों रहा नृपति तन व्यापा
अघवश बहुत योनि भ्रमि आयो पुन्य प्रभाव मनुज तन पायो

दो॰ ॥ शंभु मंत्र वर हृदय महँ कीन्हो जबहिं प्रवेश ॥
काकरूप सब पाप तब निकरि गये मधुरेश ॥ २४

कोटिन ब्रह्म घात अघ नाना ॥ तथा अगम्यागमन सुजाना
स्वर्ण स्तेय पाप नरपाला ॥ भ्रूणघात अघ परम कराला
कोटि जन्म के पाप अपारा ॥ तुरत नृपाल होंहि जरि क्षारा
पंचाक्षर जबही उर आवे ॥ पाप लेश तन रहन न पावे ॥
तासु प्रभाव जरे सब पापा ॥ भयो दूरि सब तब संतापा
जपहु सदा पालहु निज राजू भोगहु अभिमत भोग समाजू
अस कहि गे निज गृह मुनिराया दंपति हृदय मोद अति छाया
प्रिया सहित नरपति गृह आये मंत्र प्रभाव परम द्युति छाये

छं॰ अनुकूल तब अति देखि प्यारिहि नृपति परिरंभण कियो
श्रीखंड शीतल गात रानिहि भेटि अतिशय सुख लह्यो
निर्धन महा निधि पाय जेहि विधि लहहिं मुद मनभावनो
तेहि विधि प्रिया संयोग सुख पायो नरेश सुहावनो १

दो॰ सकल वेद उपनिषद को अह पुराण को सार ॥ २ ॥

अघ नाशक पंचाक्षरी महिमा जासु अपार ॥ २८ ॥
सो॰ तासु प्रभाव मुनीश गायो हम संक्षेप ते ॥ २९ ॥
वश्य होंहि जगदीश अति वरिष्ट एह्न मोद प्रद २६

इतिश्री मत्परम हंस परि व्राज काचार्य्य श्री० स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे पंचाक्षर मंत्र माहिमा प्रकाशनं नाम प्रथमोविश्राम: १ ॥ २ ॥

चौपाई

सूतकह्यो पुनि अति हर्षाई ॥ और एह्न शिव महिमा मुनि राई ॥
कहिहौं तुम सन सहित सनेहा सुनत मिटहिं सब उर संदेहा ॥
भक्ति सहित शंकर पद पूजा परम धर्म एहि सम नहिं दूजा ॥
पाप विनाशक और उपाया एहि समान नहिं कछु मुनिराया
सकल मनोरथ पूरण होई सब आनँददायक है सोई ॥
आयु बढै विजयी नर होई ॥ रोग समीप आव नहिँ कोई ॥
भुक्ति मुक्ति दायक मुनिराया ईशाराधन श्रुति दर्शाया ॥
सूखो गीलो जो अघ होई ॥ छोट वडो सब रहै न कोई ॥
श्रुति पुराण कर संमत एहा ॥ बिन छल उमानाथ पद नेहा ॥
महादेव के हित पुनि जोई ॥ जान अज्ञान करै नर कोई ॥
शंभु तोष प्रद जौन विधाना सो सब मुक्ति हेतु नहिँ आना ॥
माघ कृष्ण चौदशि जो होई तेहि को व्रत अति दुर्लभ होई ॥

दो॰ ताहू में निशिजागरण दुर्लभ महा मुनीश ॥ २८ ॥
तेहिते अति दुर्लभ कह्यो दर्शन श्री जगदीश १ ॥
अति दुर्लभ परमेश को तहं पूजन मुनिराय ॥ २ ॥
मिलै जबहि बहु जन्म को मुनिवर पुन्य सहाय २

बिल्वपत्र सों श्री शिव पूजन अति दुर्लभ वरनत हैं मुनिजन

अयुत वर्ष सुरसरि अस्नाना। कीन्हे जो फल होय सुजाना॥
बिल्वपत्र अर्पन करु जोई। सहजहिं में पावत नर सोई॥
युग २ जेजे दिन मुनिराया॥ पावन वरने श्रुति समुदाया।
माघ चतुर्दशि में सब आई। स्थित होहिं सकल मुनिराई॥
करहिं अजादिक जासु प्रसंसा। जे मुनिवर कुल मानस हंसा॥
वशिष्ठादि मुनि परम प्रभावा। माघ चतुर्दशि को दर्शावा॥
एहु उपवास करे जो कोई। सो मख सम तेहि कहँ फल होई॥
कल्प कोटि तप कर फल जोई। निशि जागरण पाव नर सोई॥
एकहु बिल्वपत्र मुनिराया। जेहि शंकर के शीश चढाया॥
तीनि लोक महँ पुन्य सो हाई। तेहि समान नहिं श्रुति दर्शाई॥
इहाँ परम पावन एह गाथा। प्रगट करी गौतम मुनि नाथा॥

दो॰॥ गोपनीय यद्यपि रहा तद्यपि एह इतिहास।
करुणा करि सब लोक पर मुनि करि दियो प्रकाश॥३॥

दिनकर कुल महँ एक महीपा। परम धर्मरत निज कुल दीपा॥
नाम मित्र सह वीर सुजाना। शस्त्र अस्त्र विद्या सब जाना॥
सर्व धनुर्धर महँ वरयारा॥ निगमागम कर जानन हारा॥
उत्साही अतिशय बलवाना। अति उद्योगी दयानिधाना॥
पुन्य केर मानहु समुदाया। तेजन को पंजर महिराया॥
अचरज को जनु खेत विराजा। शोभनीय मूरति अतिराजा॥
दीप क्रांत शुचि मन जेहि केरा। श्रियाक्रांत वपु रुचिर घनेरा॥

दो॰॥ बहु सामंत मुकुट मणि किरण प्रकाश अनूप।
जगमगात जाके चरन अति प्रभाव तेहि भूप॥४॥

एक बेर मृगया लोलुप मन। कियो प्रवेश घोर गह्वर बन॥
बहुत सेन संग सो नरनाहा। मारे बान चलाप बराहा॥१॥

शार्दूल रुरु गवय पछारे ॥ महिष मृगेंद्र भूमिपति मारे
मृगयासक्त चढ़ौ रथ माहीं ॥ कानन विचरहिं कछु भय नाहीं
एक निशाचर तहँ नृप मारा ॥ तासु अनुज लख्यो शोक अपारा
तदपि विचार कियो मन माहीं ॥ नृप वध केरि शक्ति मोहि नाहीं
देव दनुज जे परम कराला ॥ सब कहँ दुराधर्ष नरपाला
बिन छल नृपति जीति नहि जाई। यह विचार निज मन नहि दृढाई
पाप धाम सुंदर धरि वेषा ॥ मनुज रूप अति रुचिर विशेषा।
आयो जहाँ रहा महिपाता ॥ मूर्त्तिमान मानहु उतपाता॥
नम्राकृति देखा महि राई ॥ आयो करन हेतु सेवकाई ॥
बिन जाने तेहि कर अघ भारी कियो पाक सेवा अधिकारी ॥
करि वन में कछु काल विहारा मृगया तजि निज पुर पगु धारा
मदयंती नृप नारि सयानी॥ जिमि दमयंती नल पटरानी
सो राजा कहँ प्राण पियारी सती शिरोमणि जग उजियारी
श्राद्ध केर वासर जब आयो॥ गुरु वशिष्ठ कहँ वोलि पठायो।

दो०॥ पाचक वपु निश्चर कियो शाक मिलो नर मांस
गुरु सन्मुख नरनाह सोइ परसो सहित हुलास ५

गुरु वशिष्ठ करि क्रोध अपारा शाप दियो बिन किये विचारा॥
पापी महिप तोहि धिक्कारा ॥ नर आमिष भोजन महँ डारा
छल करि लै आयो मम आगे होहु निशाचर परम अभागे
पुनि विचारि निश्चर अघ जाना। वोले गुरुवर दयानिधाना॥
द्वादश संवत निश्चर भावा॥ बहुरि लहोगे अपन सुभावा।
सुनि सकोप बोला नरपाला वृथा दियो मुनि शाप कराला
नहि कीनो अपराध हमारा॥ सो तुम नहि मुनि नाथ विचारा
मैं हूं शाप देहौं जस दीन्हा ॥ अस कहि अंजुलि में जल लीन्हा

रानी पति चरनन शिर राखी ॥ बारन कीन विनय बडि भाखी

दो० मानि लियो प्यारी वचन गुरुहि शाप नहिं दीन्ह
पुनि नरेश निज हृदय महँ यह विचार शुभ कीन्ह ६

कौन ठौर यह भूतल माहीं ॥ जीव समूह भरे जहँ नाहीं
भूत विनाशक अंजुलि वारी ॥ डारा चरन भूत भय हारी ॥
श्याम चरन नृप को ह्वै गयेउ ॥ कल्मषपाद नाम तेहि भयेउ
गुरु वर शाप विवश नरपाला ॥ दनुज रूप ह्वै गयो कराला
मनहु काल यम रूप भयावन ॥ खान लगे मनुजादि अपावन
वन में सदा फिरै भयकारी ॥ एक मुनीश्वर तासु पियारी
वय किशोर कामातुर दंपति ॥ रमत रहे देखी तिन की रति
मुनि नंदन यक ऐ नृप धाई ॥ शार्दूल जिमि मृग लै जाई
खायो चहै शाप वश निश्चर ॥ तासु प्रिया तेहि देखि भयंकर
कांपत रोवत डरत सयानी ॥ राजा सन बोली यह बानी ॥
सविता कुल यश धर नरपाला ॥ मदयंती पति दीन दयाला
राजन के पति निश्चर नांही ॥ पापन यह लावो मन माहीं
आरत शरणागत रखवारे ॥ पतित होंहि ये प्राण हमारे
इन्हहिं खाव नहिं ये द्विज राया ॥ निगमागम तप राशि अमाया
प्राण दान इन कर जो कीन्हा ॥ जग को अभय दान जनु दीन्हा
भूसुर नारि अनाथ न होई ॥ कृपासिंधु अब कीजे सोई ॥

दो० जे अनाथ अरु दुखी जन तिन के तुम रखवार
तुम समान जे साधु सुठि करहिं न जग अपकार ७

एहि प्रकार बहु विनय सुनाई ॥ निश्चिर उर करुना नहिं आई
खाय गयो शिर तोरि कराला ॥ दुखी भई अति शाप द्विज वाला
क्रोशित दीन करि विपुल विलापा ॥ बीनि लिये पति अस्थि कलापा

चिता रोपि पावक तहँ लाई ॥ पुनि भूपहि यह गिरा सुनाई ॥
रे पापी मम पति तैं खायो ॥ पतिव्रता को दुख उपजायो ॥
अब सों लै जब हीं ढिग नारी ॥ जैहौ ह्वै है मृत्यु तुम्हारी ॥
एहि विधि शाप नृपति कहँ दीन्हा सती प्रवेश अनल महँ कीन्हा
शाप अवधि बीते नरनाहा ॥ निज गृह गवनो सहित उछाहा
मिला रूप निज गा संतापा ॥ रानी जाना द्विज तिय शापा ॥
रति प्रिय पतिहि विलोकि सयानी कीन्ह निवारन कहि मृदु बानी
दारा सुख गत भा सुत नाहीं ॥ अति विराग उपजो मन माहीं
सब धन भूतल राज विहाई ॥ बहुरि गयो कानन मुनिराई

दो॰ ॥ सूर्यवंश थिति हेतु पुनि कीन्ह पुनीत उपाय ॥
मदयंती के पुत्र वर उपजाये मुनिराय ८ ॥ ९ ॥

राजा वन घूमत एक बारा ॥ घोर रूप अति विषमाकारा
धरे पिशाची केर स्वरूपा ॥ द्विज हत्या देखत भयो भूपा
ऋषि लोगन सों पूछि उपाया करन लगे तीरथ मुनिराया
सेये तीरथ सकल सप्रीती ॥ यह विधि गयो काल बहु बीती ॥
द्विज हत्या छांडो नहिं साथा ॥ मिथिला गमन कियो नरनाथा
उपवन में बैठो नरपाला ॥ द्विज हत्या की शोच कराला ॥
श्री गौतम कहँ आवत देखा पावक सम अति तेज विशेखा
तापस वर सेवित मुनिराया नाशहिं रवि सम तम समुदाया
उदित महा गुण पांति विराजा निज कर सह मानहु उडराजा
जिमि द्विज राज कला शिव धरहीं कला तथा मुनि धारन करहीं
तप भाजन संग शिष्य घनेरे जाप प्रणाम कीन नृप नेरे ॥
गौतम देखि हंस कुल नंदन प्रीति सहित कीन्हो अभिनंदन
हँसि पूछी नृप की कुशलाता अव्याहत है तव पद ताता ॥

क्षेम प्रजा सब तव परिवारा॥ केहि कारन मिथिला पगु धारा
राज छोडि विचरहु एहि देशा जनु चिंता कछु तुम्हहिं नरेशा

दो॰॥ सब है मेरी कुशल प्रभु नाथ कृपा मुनिराय
जिन राजन के वंश के भूसुर सदा सहाय ६॥

नरपति संपति सकल प्रवीना। द्विजवर के नित अति आधीना
एक दुःख मोहि अति द्विजराई सो मुनिवर तोहि कहौं बुझाई
एक पिशाची अति विकराला पग पग पर मोहि दीनदयाला
अति डरापावति है दुखदाई नहिं कोउ ताहि लखै मुनिराई
शापविमोहित मैं अघ कीन्हा तेहि कर दारुण फल विधि दीन्हा
प्रायश्चित्त किये बहु तेरा॥ एहि दुख को नहि होय निबेरा
बहु लयज्ञ मुनिवर मैं कीन्हे॥ सर्व सुदान तथा हम दीन्हे॥
कीन्हो सर सरिता अस्नाना॥ जे भूतल पर पुन्य निधाना
भूमी बहुत महि मंडल माहीं तीरथ कौन कियो हम नाहीं
जपे मंत्र सुर ध्यान लगाये॥ व्रत धरि कंद मूल फल खाये
कियो यदपि यह सकल उपाई मम मन सुस्थिर नाहिं मुनिराई

दो॰॥ आजु जन्म भा सफल मम देखा चरन तुम्हार
तव दर्शन ते मम हृदय भयो प्रमोद अपार १०

सो॰ करै मनोरथ कोय बहुत वर्ष लों जो पुरुष॥
सो पुनि पूरो होय यह जनवाद सोहावनो ११

सो सांचो अब भा मुनिराई॥ दीन्हे जो तव चरन देखाई
बहुत जन्म को पुन्य घनेरो॥ उदय भयो करुनानिधि मेरो
जो तुम भवभय हर सुखदाई मम चख गोचर भयेहु गोसाई
श्री मुनि भवभय ते रखवारे॥ कौन देश ते अब हि पधारे॥
मम मन की यह तर्क गोसांई बहुत देश भूमि के मुनिराई

आयो हौं कछु अचरज देखी ॥ तव मन में है मोद विशेखी ॥
प्रेम सहित जो भाषण करहू । मम उर जनु आनंद सो भरहू
अब मैं पाप राशि मुनिराया । शरण गही कीजै प्रभु दाया
अघ निवृत्ति सुख जेहि विधि होई । करुनापयानिधि कीजै सोई
यह प्रकार मुनि विनय सुजाना । दयासिंधु गौतम भगवाना ॥
महा घोर जे पाप अपारा ॥ तिनकी निष्कृति के प्रकारा
कहन लगे तेहि सन मुनिराई । साधु २ नृप सुनहु उपाई ॥
नरपति धन्य धन्य वड भागी । सुखी होहु अव सव भय त्यागी

दो॰ विद्यमान भय हरण प्रभु भक्तन के प्रतिपाल ॥
शरण भये जे शंभु की तिन्ह दिन भय नरपाल १२

सुनु नरपति वड भाग सुजाना । तीरथ अतिशय सुकृत निधाना
महापाप हर परम सुहायो । नाम गोकरण सुर मन भायो
सकल पाप जे छोट वडेरे ॥ जहाँ गये अवहिं नहि नेरे ॥
सुमरन सो सव पातक हरहीं । गौरीपति निवास जहँ करहीं
जिमि कैलाश शिखर के ऊपर । यथा वसहिं शिव मंदरगिर पर
तिमि गोकरण वसहिं भगवाना । निश्चय जान नरेश सुजाना
होय अनल कर तेज अपारा । विधु तारागण ग्रह उजियारा
करे अपर पुनि कोटि उपाई । जिमि सविता विन तम न नशाई
तेहि प्रकार जग तीरथ जेते ॥ तथा क्षेत्र पावन सव तेते ॥
तुरत पाप नहि देंहि नसाई । जिमि गोकरन देखि अघ जाई
वरु कीन्हो नर पाप घनेरा ॥ तहाँ गये नहिं भय यम केरा
प्रथमहि तप करि अति सिधि पाई । विधि इंद्रादि रहे सव छाई ॥

दो॰ लाख वर्ष तप किये को फल पावै करजौन ॥२५
तहाँ एकादिन व्रत किये पावत है नर तौन १३

हरि ब्रह्मा सुरपति हित लागी । वास करैं तहँ जन अनुरागी ॥
शंकर बरदायक सुखधामू ॥ अगद महावल है अभु नामू ।
महा घोर तप करि दश शीशा । पायो शंकर लिंग मुनीशा ॥
गणनायक कीन्हो अस्थापन । करहिं देव को सब कोउ पूजन
हरि विधि सुरपति वायु निकाया । द्वादश सविता गण मुनिराया ।
तथा अष्ट वसु रुद्र समाजा ॥ देव वैद उड़गन उड़राजा ॥
एते सुर भूसुर नरपाला ॥ प्राची द्वार वसैं महिपाला ।
मृत्यु रूप यम औरकृशानू । चित्रगुप्त यम सचिव सुजानू
पितृ रुद्र सह दक्षिण द्वारा ॥ वरुन और सरिता परिवारा ।
सरितापति गंभीर उदारा ॥ वास करहिं सब पश्चिम द्वारा ।
भद्रकर्णी का मातु भवानी ॥ सहित मातृगण सब सुखखानी
पवन देव अरु धनद सुजाना । उत्तर द्वार कियो इन थाना ॥

दो॰ ॥ विश्वावसु अरु महावल चित्रसेन सह आय
गंधर्वन सह चित्ररथ पूजहिं गाय बजाय २४
रंभा मेना उर्वशी तथा घृताची नाम ॥ २ ॥
सुखमा धाम तिलोत्तमा पूर्वचित्ति सुरवाम २५

इत्यादिक शिव सन्मुख जाई । नृत्य करहिं वर भाव दिखाई
कश्यप कण्व वशिष्ट सुजाना । भरद्वाज मुनि ज्ञान निधाना ।
जैमिनि विश्वामित्र उदारा ॥ जासु महातप कर नाहिं पारा ।
तेज धाम अंगिरा महामुनि । कतुजावाल मुनीश महपुनि
ये सब ब्रह्म करषय तहँ जाई ॥ चहुँ दिशा शिव सेवहिं मन लाई
अत्रि मरीचि दक्ष भगवाना । नारदादि मुनिनाथ सुजाना ।
सनकादिक देवर्षि गंभीरा ॥ ऊपर दिशि सेवहिं मतिधीरा
ते सेहि और दूजे मुनिराया । पहिरे अजिन साध्य समुदाया ।

दंडी वृति मुंडी अस्नातक ॥ दग्ध भये जिनके सब पातक
ब्रह्मचारि तापस गण भारी भक्तिसहित सेवहिं त्रिपुरारी
त्वचा अस्थि शोधित मतिधीरा तपसो अतिशय कृशित शरीरा

सो॰ देव पितर गंधर्व चारण खग अरु किंपुरुष ॥
किंनर गुह्यक सर्व जे विद्याधर सिद्ध वर १६

नाग पिशाच और वैताला निश्चर बलतर विभव विशाला
नाना भूषण नाना वाहन ॥ चंद्र प्रकाशित रुचिर विमानन
सकल शंभु अस्तुति उच्चरहीं गुन गावैं प्रणाम सब करहीं
नाचहिं हर्षहिं सुख सरसाई मुदित होंहि अभिमत वर पाई
तासु सरिस नरपति महि माहीं तीरथ वर दूसर कोउ नाहीं ॥
कुंभज ऋषिवर सनत कुमारा अग्नि देव तिह्नु पुर उजियारा
नृपति प्रियव्रत सुत बलवाना तिनहु कियो तप केर विधाना
भद्रकालि मनसिज शिशुमारा तप कीन्हो बहु भांति अपारा
सर्य नर्मे दुर्मुख बहुतेरा ॥ मणिनाग हु तप कीन घनेरा
इलावर्त आदिक जे नागा ॥ हरि वाहन पुनि गरुड सुभागा
कुंभकर्ण रावन बलवाना तथा विभीषण परम सुजाना
औरहु देव सिद्ध नर निश्चर प्रेम सहित आराधि शिवंकर
निज २ नाम केर वर लिंगा मानहुं निज यश केतु अभंगा
कीन्हे अस्थापन तहं नाना पावत भे बहु सिद्ध सुजाना
पुनि कीन्हे तीरथ तिन नाना सब देवन के तहं अस्थाना
देव देव माधव चतुरानन श्री गणनायक और षडानन
धर्म क्षेत्रपालक वर धामू ॥ श्री दुर्गा मद मन अभिरामू

दो॰ असंख्यात तीरथ तहां पग पग पर महिपाल
तैसेहि कोटिन लिंग वर जानहु परम विशाल २७

सो॰॥ बहुत कहौं कहागाय जे पाथर गोकरण महँ
सो जानौ मुनिराय श्री शंकर के लिंग सब १८

जेतो वारि तहाँ मुनिराया॥ तीरथ रूप पुरानन गाया
जैसे लिंगन की मिति नाहीं तैसे बहु तीरथ तेहि माहीं
जिमि गोकरण मुख्य अस्थाना तथा महाबल लिंग सुजाना
कृतयुग श्वेत रूप रह सोई अरुन बरन त्रेता महँ होई॥
पीतवरन द्वापर महँ गायो॥ ह्वैहै कलि में श्याम सोहायो
सप्त विवर व्यापी पुनि सोई॥ सृदुल रूप कलि में पुनि होई
वरन्यो जो गोकरण महीपा॥ तीरथ पश्चिम सिंधु समीपा
द्विज हत्या आदिक जे पापा॥ नाश करै सब भव संतापा॥

छं॰ जे ब्रह्मघातक भूतद्रोही शठ सकल गुन हीन हैं॥
पर दार रत दुर्वृत्त लोभी अति कृपण जे दीन हैं॥
दुःशील क्रोधी चोर खल कामी दुराचारी घने॥
ते जाय के गोकरण में अस्नान करि जल पावने १

सो॰ होय पाप सब खीस पाय महाबल को दरश॥
पावहिं पद जगदीश है महिमा अतिशय अकथ १९

तहाँ जाय पावन तिथि पाई पुन्य नखत वासर शुभदाई
ईशहि पूजहिं सहित सनेहा रुद्र होंहि जे विन संदेहा॥
जब कब जो कोई नर होई॥ तहाँ जाय शिव पूजै जोई॥
ब्रह्मलोक सो जाय नरेशा॥ छूटि जाय भव रोग कलेशा
रविविध सौम्य वार जब होई दर्शयोग महँ जो नर कोई॥
सिंधु सलिल तर्पण अस्नाना शिव पूजा व्रत जप अरु दाना
द्विज पूजा पुनि होम विधाना करै जौन शुभ कर्म सुजाना
तेहि कर फल अनंत मुनिराया बहुधा श्रुति पुराण दर्शाया

॥ अंगावति

व्यतीपात आदिक वर योगा ॥ रवि संक्रमण केर संयोगा ॥
अरु प्रदोष वेला जब होई ॥ तेहि अवसर शिव पूजा जोई
सो विमुक्ति दायक नरनाहा औरहु सुनि अब सहित उछाहा
गोपनीय तोहि सन नृप भाषौं लखि तव दुख दुराव नहिं राखौं
जो तिथि मुक्ति प्रदा श्रुति गाई तासु प्रभाव सुनो मन लाई ॥
महाव्याध पुनि जासु प्रभावा शंकर धाम परम पद पावा ॥

दो॰ माघ मास अरु पुन्य तिथि कृष्ण चतुर्दशि जोय ॥
बिल्वपत्र शिवलिंग नृप चारौं दुर्लभ होय
अहो शंभु माया प्रवल जेहि बश लोग अयान ॥
नहि सेवत यह महा तिथि यथा मूक श्रुति गान

श्रीगोकर्ण महा अघ हरनू ॥ तेहि तिथि मैं नृप व्रत जागरनू
शिव पूजा निशि मैं तहं वासा करहिं महा दुख के रवि नाशा
एहु विधि जो मैं गाय सुनाई शंभु लोक सोपान सोहाई
मैं गोकरन गयो नरनाहा ॥ देखा तहं रहि सकल उछाहा
शिव तिथि को उपवास विधाना कीन्हा पूजे हर भगवाना ॥
तेहि दिन परम महोत्सव होई देश देश वासी सब कोई ॥ २० ॥
नर अरु नारि वृद्ध अरु वाला ग्रही वटू भिक्षुक तपशाला
देखि महोत्सव करि शिव दर्शन सकल कृतारथ होहिं मुदित मन

सो॰ शिष्य सहित नरनाह लौटे हौं गोकरण ते ॥
तिमि सब देखि उछाह निज २ आश्रम कहं गये ॥ २२

जे सुरर्षि सनकादि सुजाना राजऋषय भूसुर ऋषि नाना
करि अस्नान महावल पूजन जन्म सफलता लहिं आनंद मन
सव दिशि सकल गये तप साला हम महिं वोला वाजनक नृपाला
तासु निमंत्रण सौं हम आये करिहैं नरपति यज्ञ सोहाये ॥

शिव मंदिर गोकरण सोहावा । जासु महातम तोहि सुनावा ।
मग मैं कौतुक परम विशाला । तहँ सो फिर तीवार नृपाला ॥

दो॰ मैं देखो अचरज महा सो नहि बरनि सिराय ॥
भयो कृतारथ रूप मैं आनंद उरन समाय २३

इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे गोकरण महिमा प्रकाशनं नाम द्वितीयो विश्रामः २ ॥

चौपाई

यह सुनि पुनि बोला नरपाला । अचरज देखो कौन कृपाला ॥
सो प्रभु दीजै मोहि सुनाई ॥ सफल जन्म मम करु मुनिराई
सुनहु कथा हमसौं नरनाहा । जब हम लौटे देखि उछाहा
एक देश के तीर सुजाना ॥ २ ॥ जबहि भयो हम को मध्याना ।
विमल सरोवर पाय नहाये ॥ मारग के श्रम दूरि बहाये ॥
सरतट वट तरु परम सोहाया । सघन सुखद अति शीतल छाया
बैठे तहँ सुख पाय विशेखी । निकट एक चंडालिनि देखी
अंध वृद्ध कृश गात मलीना ॥ निराहार भूखो मुख दीना
बहुत रोग पीडित अति व्याकुल । कुष्ट घाव तहँ पूरन कृमि कुल
रुधिर पीव बूडो जीरन पट ॥ लपटि रह्यो जेहि के कृश कटितट
पस्मा कंठ स्थित अति भारी । कंठ रोध सों परम दुखारी ॥
एक हु दांत रह्यो मुख नाहीं । लोटि रही धरती तल माहीं
रज सों रह्यो सकल तन व्यापा । दिनकर किरनन को संतापा ॥
मूत्र पुरीष भर्यो सब अंगा । परम दुरासद गंध प्रसंगा
बढ्यो श्वास कफ रोग अपारा । शिथिल नारि का कर परिवारा
ध्वस्त केश सब अंग विचारी । मस्यो चहै छिन में दुख भारी ॥

दो॰ तासु दशा यह देखि के वंठीकुपा उर मांहि ॥ ८ ॥
ठहरे हम छिनु भरि तहां गमन कियो नृप नांहि ९

तुरतहि देखा रुचिर विमाना । आवत है विधु विंद समाना ॥
शिव किंकर बैठे जनु चारी ॥ दामिनि पावक हूं दुति मारी ॥
अर्द्ध चंद्र भूषण वर भाला ॥ कानन कुंडल मुकुट विशाला ॥
कंकणादि शुचि भूषण धारी । शुभ लक्षण शंकर गण चारी ॥
कर त्रिशूल चर्मासि मनोहर । अरु खट्वांग टंक अति सुंदर ॥
कुंदु इंदु वर्चस वर नीके ॥ शंकर किंकर भावत जीके ॥
वेग सहित हम जाय समीपा । पूछा यह शिर नाय महीपा ॥

छं॰ तुम श्री त्रिलोचन चरन किंकर लोक रक्षा हित फिरै
तेहि हेतु खड्ग त्रिशूल चर्महि अरु गदा धारन करौ ॥
मैं जानि लीन्हो आपु कहं तुम अनुग गिरिजा रमन के
हे देव वर प्रणाम मि पुनि २ बलि तुम्हारे चरन के ९
दो॰ जग रखवारी हेतु है के विनोद मिष पाय ॥ २ ॥
अथवा जन अघ हरन हित गमन कियो सुरराय ९

मोहि कृपा करि देहु सुनाई । कौन हेतु आये सुरराई ॥
बोले दूत सुनहु मुनिराया । प्रभु करुनाकर मोहि पठाया ॥
आये शिव अनुशासन पाई । जो वृद्धा सन्मुख दर्शाई ॥
याहि लेन कारन मुनिराई । सुनि मन महं विस्मय अति पाई ॥
हाथ जोरि पूछी यह बानी ॥ अहो देव वर यह अघ खानी ॥
यह विमान के लायक नाहीं । यथा शुनी क्रतु मंडप माहीं ॥
जन्म अवधि यह सदा अपावनि । पाप रूप यह परम भयावनि ॥
दुराचार रत विमल विशोका । कैसे लैजे हो शिव लोका ॥
शिव स्वरूप कर याहि न ज्ञाना । नहिं विचार नहिं ध्यान विधाना ॥

रहा शूद्र नामक धनवाना ॥ निज गृह लाय कियो सन्माना
भूषण वसन रुचिर पहिराई रमै अहर्निशि मोद बढ़ाई

दो॰ गृह स्वामिनि तेहि की भई पायो अति सन्मान ॥
आमिष भोजन नित्य प्रति करै वारुनी पान ६ ॥

एहि प्रकार विहरै रति प्यारी बालक उपजाये दुइ चारी
एक वार वाहर पति गयेऊ सुरापान अवला बहु करेऊ
मदिरा के वल विहूल नारी ॥ आमिष भोजन रुचि भै भारी
गाइन में भेडी तेहि केरी ॥ २ ॥ गेंडा में वांधी बहु तेरी ॥ २ ॥
रहा परम तम निशि अंधियारी लै कृपाल हाथ में पगु धारी
मेष जानि जब कियो प्रहारा पापिनि धेनु वत्स को मारा
गृह में लाय वत्स जब चीन्हा शिव शिव शिव उच्चारण कीन्हा
भय वश अरु कछु पुन्य सहाई शंकर नाम लियो सुखदाई
कछुक देर कर शोच विचारा पुनि छेदन करि पाक सँवारा
आधे वछरा को करि भोजन ॥ आधो वाहर फेंकि तासु तन
कीन्हि पुकार कपट दर्शाई ॥ आयो वाघ वत्स गयो खाई
सुनत पुकार दासगण आये वत्स घात सव हि न दुख पाये
सकल लौटि गे तेहि समुझाई प्रात भये निज काज बनाई
प्रीतम तासु धाम निज आयो रमणी को विहूल नहि पायो
यह प्रकार वहु समय विताई काल विवश यम लोक सिधाई
तासु कर्म यमराज विचारी महा घोर नरकन महँ डारी
नरक यातना बहु विधि पाई जन्मी अंत्यज के गृह जाई ॥
जन्म अंध भै परम कुरूपा ॥ बुरे अंगारे के अनुरूपा ॥
मातु पिता सम कौन दयाला ऐसिहु को कीन्हो प्रतिपाला
अन्न कदन्न अपावन जोई ॥ पूति श्वान भक्षित पुनि सोई

= दुर्गंधयुक्त

तथा अपावन रस वहु ताई। तिन सों जननि कुमारि जिवाई॥
राजरोग तेहि के ह्वै गयऊ। तेहि कारण विवाह नहि भयेऊ॥
वालभाव त्यागो जब वाला। मातु पिता का ह्वै गयो काला॥
वंधुजनन लखि तासु अभागा। सवहि न करि दीन्हो तेहि त्यागा॥
क्षुधा व्याप्तित व्याकुल अति दीना। शोक दुखित तन वसन विहीना॥
लाठी हाथ फिरै सव देशा॥ तन पालै सहि कठिन कलेशा॥

सो॰ ॥ भीख मांगि नित खाय चांडाल के घरन में॥
एहि प्रकार मुनिराय वीती तेहि की वहु वयसि॥

वृद्ध शरीर भयो सव भांती॥ दुःख दशा नहिं कछु कहि जाती॥
कवहूं भोजन वसन विहीना। जाति रही मारग अति दीना॥
जाना लोग चले वहु जाहीं॥ अति कोलाहल मारग माहीं॥
शिव तिथि आवति है तेहि कारन। देश देश के लोग हजारन॥
श्रीगोकरण जाहिं हर्षाने॥ नर अरु नारि न जाहिं वखाने॥
सपत्नीक द्विज वर वहु जाहीं। अग्निहोत्रजिन के संग माहीं॥
राजसमाज सहित वहु राजा। गज रथ पैदर वाजि समाजा॥
परिजन रानिन की असवारी। छत्रादिक शोभा अति भारी॥
धनी महाजन दासनि काया। संकरजातिन को समुदाया॥
खाहिं पियहिं सूंघहिं अरु गावहिं। नृत्य करहिं कोउ हंसहिं वजावहिं॥
गर्जहिं कोउ २ कौतुक धारी॥ हर्षित चले जाहिं नर नारी॥

दो॰ ॥ कौतुक संयुत देव वर चढे विमानन जाहिं॥
तिनके हर्ष समाज सुख नाहिं मुनिवर निसि राहिं॥ ८

असन वसन की दुख अति भारी। यह चंडालिहु परम दुखारी॥
महाजनन सों जाचन काजा। जाय मिली तेहि पथिक समाजा॥
सहज २ करि मन दृढ ताई। कछु दिन में पहुंची तहं जाई॥

गतभव कर कोउ सुकृत सोहावा। तेहि को करगहि जनु लै आवा
मारगतर बैठी शिर नाये॥ याचन हित द्वौ कर फैलाये
करति याचना धरम दुखारी वार २ यह गिरा उचारी॥
प्रथम जन्म के पाप अपारा॥ मैं पीडित नहिं दुख कर पारा
भरि आहार देहु मोहि भोजन कृपा करौ मो पर सिगरे जन
भोजन हीन वसन मम नाहीं लोटति हौं प्रथिवी तल माहीं
सब प्रकार मोहि दीन विचारी कृपा करौ सिगरे नर नारी
शीतातप को दुख बहुतेरा॥ महारोग पीडित तन मेरा॥
लोचन हीन वृद्ध मोहि देखी कृपा करौ सब लोग विशेखी
हा मैं चिर उपवास दुखारी अति प्रचंड जठरानल भारी
जरे जाहिं मेरे सब गाता॥ कृपा करौ सज्जन सुखदाता
सहस्र जन्म जन्मांतर माहीं मो सन सुकृत बना कछु नाहीं
मैं पापिनि मति मंद अभागी दया करौ सज्जन बडभागी
दुखिअन के जे तुम रखवारा सब अभिलाषन के दातारा
बहु पुन्यन के तुम करतारा दया करौ लखि दुःख हमारा

सो॰॥ यह प्रकार अति दीन याचत हाथ पसारि कै
बिल्वपत्र धरि दीन एक पथिक ने हाथ में ९

मांगत सिगरो दिन गयो ताही राति भई पावा कछु नाही॥
पाई तीन बेल की पाती॥८॥ मन विचार कीन्हा बहु भांती
भोजन योग वस्तु एक नाहीं यह विचारि फेंकी महि माहीं
कौन हु पुन्य उदय ह्वै आवा॥ तहां रहा शिवलिंग सोहावा
बिल्व पत्र तेहि के शिर जाई गिरत भयो विधि वश मुनिराई
मिला न कछु तेहि दिन व्रत रहऊ दैव योग तेहि को व्रत भयऊ॥
भद्रकालि मंदिर पिछवारे॥ नीद परी नाहिं क्षुधा के मारे॥

भोर होत तजि आस भरोसा	शोक भरयो मन में अतिरेषा

दो॰॥ लौटी अपने देश को सहज सहज वल हीन ॥२॥
पग पग पर गिरि गिरि परत वहुव्रत सों अतिदीन

रोग विकल क्षुधयातुर भारी	दह्यमान तन तापत मारी॥
जेहि तेहि विधि पहुंची सर तीरा	अति व्याकुल गिरि परी अधीरा
करुणामृत सागर भगवाना	विश्वनाथ जन पाल सुजाना
याहि लेन हित हमहि पठायो	विधु सम रुचिर विमान सोहायो
यहि को मुनिवर चरित वखाना	जेहि प्रकार शिव कृपानिधाना
करहिं दयादीनन कहँ देखी	कहि न जाय प्रभु कृपा विशेखी
कर्मन के फल की मुनिवर गति	देखि लेहु प्रत्यक्ष महामति
अधम अपावनि पापिनि जोई	जाति परम पद को अब सोई
प्रथम जन्म अन्नादिक दाना	नहिं कीन्हे तेहि हेतु सुजाना
क्षुधा पियासा को दुख भारी॥	वार वार पायो एहि नारी॥
मदिरा के मद सों एहि नारी॥	कीन्हो गोवध को अघ भारी॥
तासु कर्म फल नयन विहीना	दुखिया रही जन्म भरि दीना
यद्यपि जानि लियो मुनिराया	तद्यपि धेनु वत्स एहि खाया
तेहि को द्विजनायक फल एहा	चांडालिनि की पाई देहा॥
आपन धर्म त्याग एहि कीन्हा	जार पंथ में पगु धरि दीन्हा
तेहि अधर्म कर यह फल भोगा	लह्यो न पति कर सुख संयोगा
विधवा है मद वेग अयानी	जार गमन कीन्हो मुनिज्ञानी
तेहि को फल रोगन की पीरा॥	कुष्ट शरीर परे तन कीरा॥
काम व्यथित है पुनि स्वच्छंदा	दास साथ भोगे आनंदा॥
तिन पापन कर यह फल अहई	कृमि दुर्गंध रुधिर तन वहई
अतिशय मूढ भाव उर आना	प्रथम जन्म कीन्हो मद पाना

तेहि अघ कर परिपाक सुजाना भे यक्ष्मादिक रुज बलवाना

दो॰ एही लोक में लखि परैं पाप चिन्ह समुदाय ॥
लखैं विवेकी लोग सब कछुक सुनो मुनिराय ९१

जे अतिव्याकुल पुत्र विहीना धन वर्जित अरु अतिशय दीना
जे दुर्लक्षण और दुखारी ॥ लाज हीन जे लोग भिखारी
असन वसन शय्या आभूषन लहहिं न कबहूं तन उद्वर्त्तन
विद्याहीन कुरूप जिते जन ॥ करहिं सदा जे लोग कुभोजन
जो दुर्भाग विनिंदित जोई ॥ जो जन पर सेवा रत होई ॥
ते सब प्रथम जन्म मुनिराया जानहु कृत बड पाप निकाया
यहि प्रकार करि विमल विचार देखि लोक जन को व्यवहारा
पाप करै नहिं जो बुध होई ॥ करहिं जो आतम घाती सोई
मानुष देह दई भगवाना ॥ कर्म सुभाजन ज्ञान निधाना
तेहि कारन दुः कर्म विहाई शुभग कर्म सेवै मन लाई

सो॰ ॥ सुख की जेहि रुचि होय पुन्य कर्म सो करै नित
करहु पाप नर सोय चाह दुःख की होय जेहि ९२
दो॰ ॥ पाप पुन्य द्वौ कुशल नर निज मन लेय विचारि
जेहि में जानै आपन हित सोई करै संवारि ९३ ॥

मानुष तन दुर्लभ मुनिराया सो दीन्हो करि कै प्रभु दाया
निज हित सब विधि चाहत जोई सब छल छांडि भजै प्रभु सोई
अथवा बनि आये अघ भारी ॥ ऐसेहु यद्यपि हैं नर नारी ॥
शिव को ध्यान सदा मन लाई करैं तरैं पातक समुदाई ॥
प्रथम जन्म महं एह मुनिराजा मरि गवनी यमराज समाजा
बैठे तहां सभासद नाना ॥ कीन्ही सब निवितर्क सुजाना
एह द्विज नारि त्यागि निज धर्मै यद्यपि कीन्हा विविध कुकर्मै

अब आई हमरे पुर माहीं ॥ एहि को नरक देहिं किमु नाहीं

दो॰ बालपनेमें सुकृत कुछ एह को है किमु नांहि ॥
दंड दीजिये भली विधि करि विचार मन मांहि ॥
जन्म सहस्रन को सुकृत उदय भये द्विज देह ॥
पावत है सो मिली एहि यामें नहिं संदेह ९५

जौन होत बहु पुन्य सहाया मिलति कौन विधि भूसुरकाया
बन्यों पाप याही भव माहीं ॥ बहुधा नर्क योग यह नाहीं
है परंतु यह पाप अपारा ॥ जो एह धेनु वच्छ संहारा ॥
पुनि विचारि शिवाशिव शिव कहेउ। कौनहु सुकृत उदय ह्वै गयेउ
बहु मंगलमय जो शिव नामू लेती भक्तिसाहित सुखधामू
तबही जाति परम पद एहा ॥ एह में नहिं कौनहु संदेहा ॥
एक जन्म के पाप घनेरे ॥ जिनके फल हैं दुख बहुतेरे
क्रमसों सकल भोग ह्वै जाई दुखमय चंडाली तनु पाई ॥
जो अनेक दुख भाजन देहा परम नर्क है बिन संदेहा ॥

दो॰ ॥ दुःकुल जन्म दरिद्रता महा व्याधि अज्ञान ॥
एक एक पै नर्क हैं किमु जहँ सकल सुजान ९६

प्रथम जन्म को पुन्य अपारा बिवशा लियो शिव नाम उदारा
तेहि प्रभाव भावी तन माहीं। अंत समय संशय कछु नाही
भूरि पुन्य एहि सो बनि अैहे तब श्री शंकर लोक सिधैहै
ऐसे जे जन हैं महि माहीं ॥ हमरे दंड योग ते नाही ॥
तिनके योग उचित है जोई ॥ आपु विचार करिह प्रभु सोई
तबहिं चित्रगुप्तादि सुजाना यमसचिव न विचार विधि नाना
दई त्यागि जन्मी सोइ जाई ॥ महि में चांडाली तन पाई ॥

सो॰ प्रथम लियो शिव नाम यदपि महा अघ राशि तिय

तासु पुन्य परिणाम महा सुकृत एक बनि पस्यौ १७

बिल्व पत्र शिव शीश चढायो। शिव तिथि को तहं व्रत बनि आयो

पुनि जागरन कीन्ह मुनिराया। यद्यपि आकस्मिक बनि आया

तेहि कर फल मुनिवर है जोई। तब देखत भो गति है सोई

अस कहि ते शिव दूत सोहाये। चंडालिनि के ढिग चलि आये

तेहि को जीवा कर्षण जबहीं। कियो दिव्य तन पायो तबहीं

तेज राशि अति बिमल प्रकाशा। यान चढायो सहित हुलाशा

परम उदार रूप तेहि पावा॥ दिव्य भूषण की द्युति छावा

दिव्य बसन सोहैं सब गाता। दिव्य गंध तन नाहि कहि जाता

दिव्य माल अवतंस सोहावा। तथा विमान परम छवि छावा

दो॰॥ रत्नन को बर छत्र जहँ ध्वज पताक चहुं पास
गीत मनोहर बाजने सुनि मन होय हुलास १८

शिव दूतन के बीच विराजी॥ चंद्र वदन अतिशय छवि छाजी

बहुत जन्म की सुधि तेहि आई। बिस्मय त्रास हर्ष रह्यौ छाई

जिमि कोउ देखै स्वप्न अपारा। जागे पर नहि सो ब्यवहारा

बहु बिचार कियो मतिधीरा। कहां गयो वह मोर शरीरा॥

कुष्ट ग्रसत चंडाल स्वरूपा। किमि पाई यह देह अनूपा

को मैं के ये सिद्ध सुजाना॥ कौन लोक है यह मन माना

प्रभु माया विलाश सरसाना। अति अचरज देखहुं भगवाना

लाखन योनि भ्रमत दुख पावा। देखहु पूजन केर प्रभावा॥

एक पत्र हर्षित त्रिपुरारी॥ निज पद दै करि दैहि सुखारी

यह विधि करि निज हृदय विचारा। बढा प्रेम शिव चरन अपारा

छं॰ यहि भांति सों शिव दूत तेहि को दिव्य यान चढाय कै
पुनि पूछि मोसन बहुत विधि सन्मान तासु बढाय कै

करुनानिधान सुजान शंकर लोक महँ तब लै गये ॥ १ ॥
मन चकित देखत लोक सब लोकेश पुनि विस्मित भये २
दो॰ ॥ श्री गिरिजापति भक्ति को लेश कह्यो मैं गाय ॥ १ ॥
जेहि की अचरज रूप अति महिमा बरनि न जाय १९

सकल अघौघ विनाशन हारी । शंभु प्रेम महिमा अति भारी ॥
सुनि नरेश अतिशय हर्षाई । पुनि कीन्ही एह प्रश्न सोहाई ॥
नाथ शंभु को लोक सोहावा ॥ जो अति उत्तम मुनिवर गावा
तेहि को लक्षण देहु सुनाई ॥ जो मो पर करुना अधिकाई
सुनि सनेह युत नरपति वानी । कह्यो लोक महिमा मुनि ज्ञानी
ब्रह्मादिक देवन के लोका ॥ जे हैं सब विधि परम विशोका
तिनहूं में अति दुर्लभ सुख जोई । शंभु लोक महँ पावत सोई ॥
सब गत आनंद रूप उदारा ॥ जहाँ प्रतिष्ठित ज्योति अपारा
जेहि समान दूसर नहिं लोका । सो शंकर को लोक विशोका
गुणन्हविन के है परवारा ॥ योगि लहैं जेहि तरि संसारा
जेहि पाये पुनि नहिं संसारा ॥ शंभु धाम तिहुं पुर उजियारा
जहाँ बसहि नहिं तृष्णा लोभा ॥ काम क्रोध कृत मद नहिं छोभा
जन्म जरा मरणादिक लेश ॥ शिशु यौवन वय भेद विशेश
जाग्रदादि भ्रम जहँ नहिं कोई ॥ नरपति शंभु धाम है सोई ॥
सब निगमन को क्षेत्र मनोहर । जेहि ते और नहीं कोई पर ॥
सो शंकर को धाम विशाला ॥ सर्व लोक पे रवर नरपाला ॥
संयम नेम बहुरि विविधासन । प्राणायाम तथा लघ्वासन
मत्याहार धारना ध्याना ॥ अचल समाधि योग पथ नाना
जासु लाभ हित यतन अपारा । योगी करहिं त्यागि संसारा
जेहि की महिमा अकथ अपारा । सो शंकर को लोक उदारा ॥

आनंद मय चिद्घन अविनाशी
जहां जाय पावै तेहि हरको ॥
जन्म अनेक सहस जिनकेरा
ते नर नारि तहां चलि जाहीं ॥
अकथनीय अतिशय मनरंजन
राति दिवस कर भ्रम नहीं जानहिं
है कुयोगिजन दुर्लभ जोई ॥
भक्ति सुधा पूरन जे लोका

ज्ञप्ति रूपि प्रिय साथ विलासी
सो सर्वोपर पद शंकर को ॥
संचित हैं अति पुन्य घनेरा
क्रीडत हैं परमानंद माहीं ॥
तेज राशि महं लीन सकल जन
मोह शोक दुख नाहिं पहिचानहिं
ईश्वर धाम प्रवर न्रप सोई
ते पावत हैं शंकर लोका ॥

छं॰ जे मुदित सुनि प्रभु की कथा मन वचन क्रम कीर्तन करैं
जे सकल प्राणिन के सुहृद जे नाश सुमिरन अनुसरैं ॥
जे पार ह्वै संसार सागर मोह दूरि बहावहीं ॥ २८ ॥
ते शंभु पद में जाय क्रीड़हिं अरु परम सुख पावहीं ३

दो॰ तेहि ते तुम हू गोकरन तुरत जाहु नरपाल ॥ २९ ॥
नाश करौ निज पाप कर अरु ह्वै जाहु निहाल ॥ ३० ॥

करिहौ सब तीरथ अस्नाना
शिव तिथि व्रत करिहौ तहं सज्जन
एहि विधि पापरहित न्रप ह्वै हौ
कीन्हो तेहि उपदेश उदारा ॥
अब नृप विदा होउ तेहि पाहीं
न्रप सों विदा मांगि मुनि राजा
कल्मषपाद सुना उपदेशा
पहुंचि गोकर्ण में नरनाहा ॥
एहि प्रकार सब पाप विहाई
परम मनोहर एह इतिहासा ॥

पूजि महाबल शंभु सुजाना
विल्वपत्र सो शंभु समर्चन
सुखमय शंभु लोक पुनि पैहौ
स्वस्ति होय तव सह परिवारा
जे हो मिथिलापति पुर माहीं
गमन कियो सह शिष्य समाजा
गयो तुरत मन मुदित नरेशा
मज्जन पूजन सहित उछाहा
पायो शंकर पद सुखदाई ॥
पढै सुनै जो सहित हुलासा

नितप्रति शिव चरननमनलावै ॥ सो नर अवशि परम गति पावै ॥
श्रद्धा करि जो एकहु वारा ॥ श्रवण करै इतिहास उदारा
सो चित सप्तकुल सह मुनिराया ॥ पावहि शिव पद आनंद छाया ॥

छं॰ नि॰ शैव श्रेयस वीज अरु शत जन्म पाप नशावहीं
है मोह तम को तरु तर विजेहि देव वर निज गावहीं ॥
एह चरित मन्मथ मथन को मुनिराज सेवन योग है
सव लोक को कल्याण प्रद नाशक सकल भव रोग है ४

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलास मार्गे शिव चतुर्दशी माहिमा प्रकाशनं नाम त्रितियो विश्राम: ३

दोहा

अद्भुत शिव महिमा कहौं वहुरहुं सहित हुलाश
सुनत नशावें पाप सव छुटै महा भव पाश १ ॥
दुस्तर पातक सिंधु में परे विषय भ्रम जाल ॥
तिन कहँ शिव पूजन विना नहि कछु पोत विशाल २

एह जग में जो वुध वर होई ॥ सदा करहु शिव पूजा सोई
जो शिव पूजन समरथ नाहीं ॥ तो अति प्रेम किये मन माहीं
परकृत पूजा कर सो दर्शन ॥ किये करै मुनि वर प्रमुदित मन
मुक्ति विधायक है शिव पूजन ॥ श्रद्धहु विना करै जो कोई जन
काल पाय सोऊ मुनिराई ॥ लहि शिव भक्ति परम पद जाई
राजा एक विमर्षण नामू ॥ शूर प्रतापी अति वल धामू
अति दुर्हर्ष चपल नरनाहा ॥ मृगया में तेहि परम उछाहा
दयाहीन सव आमिष भोगी ॥ सकल जाति अवला संयोगी

दो॰ ॥ सो किरात के देश को रिपु जेता नरपाल ॥ १ ॥

यद्यपि अपावन आचरन तद्यपि सो महिपाल ३

नित्य करहिं शंकर को पूजन ॥ शिव को भक्त रहा नृप तन मन
उभय पाख चौदशि जब आवै तब शिव पूजन अधिक बढ़ावै
बड़े विभव सों पूजि महेशा ॥ महा मोद मन लहै नरेशा ॥
नाचहिं गावहिं अस्तुति करही हर्ष सहित उत्सव अनुसरही
कुमुद्वती वर नारि सयानी तेहि नरेश की प्रिय पटरानी
शीलवती अतिशय गुनवाना देखे पति के नेम विधाना
दुराचार सर्वामिष भक्षन एहि विधि पुनि शंकर को पूजन

दो॰ एकबार एकांत में पति सों बोली बयन ॥ ३ ॥
अति अचरज मय तव चरित देखति हौं गुन अयन ४

दुराचार कहँ परम तुम्हारा कहँ शंकर की भक्ति अपारा
एहि प्रकार पूछा जब रानी ॥ सो त्रकाल दर्शी नृप ज्ञानी
करि विचार कछु काल सयाना बहुरि विहँसि एह बचन बखाना
सुनहु प्रिया मेरो इतिहासा तोरि प्रीति लखि करौं प्रकाशा
प्रथम जन्म कूकर तन पाई ॥ पंपापुर महँ सब गृह जाई ॥
निज अहार हित सब दिशि धायो एहि प्रकार कछु काल गँवायो
एक समय घूमत निशि माहीं ॥ पहुँचो मैं शिव मंदिर पाहीं ॥
तेहि दिन शिव तिथि रही सोहाई पूजा करहिं सकल हर्षाई ॥
द्वार देश आश्रित मैं देखी ॥ १ ॥ पूजन उत्सव सहित विशेखी
लोगन हमको दीन भगाई ॥ क्रोध सहित कर दंड दिखाई ॥
करि प्रदक्षिणा शिव मठ केरी अन्न हेतु मम आश घनेरी ॥
बहुरि द्वार बैठे हम जाई ॥ २ ॥ पुनि तिन दीन्हो मोहि भगाई
ताही भांति बार बहु आयो ॥ बहुरि २ करि क्रोध भगायो
बलि पिंडादि लोभ मन माहीं शंभु द्वार त्यागो हम नाहीं ॥

तव काहू करि क्रोध अपारा ॥ तीरन कीन्हो मोहि प्रहारा ॥
वाण प्रहार होत विकराला तजी देह तहँ मैं तत्काला ॥
शिव समीप जो हम तनत्यागा जन्म कोटि को सव अघ भागा
तासु प्रभाव राज तन पावा ॥ सव प्रकार को भोग सोहावा ॥

दो॰ शिव तिथि की पूजा लखी दीपमाल को ध्यान ॥
तेहि वर पुन्य प्रभाव ते भयो त्रिकालिक ज्ञान ५
प्रवान जन्म की वासना भामिनि अति वलवान
सर्वामिष भक्षण करों यद्यपि है सव ज्ञान ६

दुराचार सव तासु प्रभावा सो मोपै नहिं मिटै मिटावा ॥
प्रथम वासना के अनुसारा प्रकृति होय सव की संसारा
विदुषन हू की सुनहु सयानी दुरलंघ्य वरनहिं मुनि ज्ञानी
एहि कारन शिव पूजन करहूं चतुर्दशी को व्रत अनुसरहूं
तुमहू श्रद्धा सहित सयानी ॥ भजहु शंभु को तन मन वानी
त्रिकालज्ञ तुम शंभु प्रसादा मेरो सव हरि लीन्ह विषादा
कीन्हो मोहि सिख देय सनाथा अव मम चरित कहो प्रिय नाथा
प्रथम जन्म कर जो कछु होई ॥ निश्चय करि वरनौ प्रभु सोई
सुनि न्रप वोला सहित सनेहा रही कपोती की तव देहा ॥१॥
एक वार कुछ आमिष पाई ॥ जात रही नभ मारग धाई ॥
एक गीध अतिशय वलवाना महा भयानक वेग निधाना
आमिष देखि क्षुधातुर धायो भागी तुम अतिशय भय पायो

दो॰ श्री गिरि शिव मंदिर जहाँ गई परम श्रम पाय ॥
करि मठ केरि परिक्रमा ध्वजपर वैठी जाय ७

तहाँ आय तेहि मारि गिरायो मांस खंड लै वहुरि सिधायो
कीन्हो शिव मठ केर प्रदक्षिन शंभु समीप वहुरि त्यागा तन

नाय पर्वत

तेहि कर एह फल परम सयानी ॥ महाचतुर न्रप की पटरानी ॥
एहि प्रकार मुनि निज इतिहासा ॥ पुनि पूछ्यो तेहि सहित हुलासा ॥
सुनी भूत गाथा में सारी ॥ भयो मोहि अचरज अति भारी ॥
मम उर धंक र प्रेम प्रकाशा ॥ अब एह सुनिवे की मोहि आशा ॥
एह तन त्याग नाथ जब जैहो ॥ कैसी गति हम तुम द्वौ पैहें ॥
दूजे जन्म सिंधु के देशा ॥ २ ॥ गजगामिनि में होव नरेशा ॥
संजय देश जन्म तब ह्वै है ॥ पुनि मेरी संगति तू पै है ॥ ३ ॥
पुनि सौराष्ट्र देश को राजा ॥ ह्वै हौं अतिशय तेज विराजा ॥
तुम कलिंग न्रप कन्या ह्वै हो ॥ निश्चय हमही को पति पै हो ॥
गांधार संपन्न सुदेशा ॥ ४ ॥ चौथे भव तहँ केर नरेशा ॥
मगध न्रपति तनया मम रानी ॥ पंचम भव अब सुनहु सयानी ॥
दासारण न्रप सुता सयानी ॥ नाथ अवंती में तुम रानी ॥
षष्ठम जन्म केरि सुनु गाथा ॥ में आनर्त केर नरनाथा ॥ ५ ॥

दो॰ ॥ न्रप ययात के वंश में कन्या ह्वै हो जाय ॥ ८६ ॥
बहू जन्म में सुनु प्रिया लहिहौ सुख मोहि पाय ॥ ८ ॥

भव सप्तम मम रूप अपारा ॥ पांड्य देश को राज कुमारा ॥
तेहि अव॰ र नरपति जे ह्वै हैं ॥ कोई मम समता नहिं पै हैं ॥
अति उदार सब गुन की खानी ॥ अरु सर्वज्ञ बली विज्ञानी ॥
सब लक्षण उत्तम गुन धामा ॥ ह्वै हौं सकल लोक अभिरामा ॥
पद्म वरण एहु नाम हमारो ॥ पद्म मित्र सम तेज अपारो ॥
तुम विदर्भ न्रप की वर कन्या ॥ रूप अलौकिक सब गुण धन्या ॥
प्रिया वसुमती एह तव नामा ॥ यौवन मद वर सुखमा धामा ॥
राजकुमार मनोभव कारी ॥ नयनानंद बढावनि हारी ॥

दो॰ तहाँ स्वयंवर होव तब सब नरपाल विहाय ॥

दमयंती जिमि नल वरो तिमि हम को वर पाय ९

सुखी होव तुम अ सुख सयानी । मैं जेते न्रपरम गुमानी ॥ २॥
तिन्हहि जीति पुनि निज पुर माहीं । वैठहुंगे कोई रिपु नाहीं ॥ ३॥
वहुत वर्ष लौ तव संयोगा ॥ भोगहुंगे जेते सव भोगा ॥
वाजि मेध आदिक वहु तेरे । करिहैं मख अरु दान घनेरे
देव पितर गुरु भूसुर सेवा ॥ उमानाथ देवन को देवा ॥ ४॥
लोक सुखद शंकर वरदानी । भजिहैं भामिनि मन क्रम वानी
पुत्रन को दै राज सोहाई ॥ वन में तप करिहैं मन लाई ॥
तहाँ होव कुंभज मुनि संगा । तासु प्रभाव मोह करि भंगा
ब्रह्मज्ञान विमल तव पैहैं ॥ तव सह प्रिया परम पद जैहैं
सात हु जन्मन महं सुनु रानी । शिव तिथि में शिव पूजि सयानी
सप्त जन्म एहि विधि ह्वै राजा ॥ भोगहुंगे वर भोग समाजा ॥
एह शिव पूजा दरश प्रभावा । आणप्रिया तोहि गाय सुनावा
कहँ श्वान की योनि अपावनि । कहँ एह सद्गति परम सोहावनि
एहि प्रकार मुनि पति की वानी । रानी विस्मित अति हर्षानी
शिव पूजा नित करै सयानी । उमानाथ सेवति मन मानी ॥

दो॰ सो राजा तेहि संग वहु भोगे सव मन काम ॥ ९९ ॥
सप्त जन्म के अंत में गयो शंभु के धाम ॥ १० ॥
सो॰ जो गावै गुनवान शिव पूजा महिमा सुभग ॥
श्रवण करै धरि ध्यान लहै परम पद केर सुख ११

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे उभय पक्ष चतुर्दशी व्रत महिमा प्रकाशनं नाम चतुर्थः विश्रामः

श्री गणेशाय नमः श्री शंकराय नमः ॐ नमो नारायणाय

सो॰॥ शिव गुरु शिव प्रिय बंधु लोगन के शिव देव वर
सोइ शिव करुना सिंधु आतम सो शिव जीव मुनि १

शिव ते भिन्न न कछु संसारा । शौनक है एह सब श्रुति सारा
तेहि कारन जे नर अनुरागी । शिव की प्रीति हेतु बड भागी
कीन्हो होम जाय ब्रत दाना ॥ श्रुति अनंत फल तासु बखाना
पत्र पुष्प फल जल मुनिराया । थोरेहु ते थोरो बिन माया ॥
करहिं सप्रेम निवेदन जोई ॥ तेहि कर फल कहि सकै न कोई
तेहि कारन सब धर्म बिहाई । सकल आगम निष्कर्ष समुदाई
एक शंभु सेवै मन लाई ॥ मुक्त होय भव बंधन जाई ॥
जो न प्रेम निज सुत महं होई । जो प्यारी महं धन महं जोई
सोई जो शिव पूजन माहीं ॥ मुक्त होय कछु अचरज नाहीं

सो॰ सुनहु महा मुनि राय तेहि कारन उत्तम पुरुष
शिवहि भजे मन लाय विषय वासना त्याग करि २
जिनको सत्य सनेह श्री शंकर की भक्ति हित ॥
त्याग करैं निज देह विषयन की चरचा कहा ३

सो रसना जो शिव उच्चरही ॥ सो मन शंभु ध्यान जो करही
ते श्रुति जे शिव यश अनुसारी । ते कर जे श्री शंभु पूजारी ॥
सफल नयन पूजा जिन देखी । सो शिर जो कृत प्रणति विशेखी
ते पद धन्य होंहिं तन माहीं ॥ जे शंकर तीरथ चलि जाहीं ॥
सब इंद्री जेहि की मुनिराया । सदा निरत शिव कर्म अमाया
सो नर भव सागर तरि जाई । तेहि कहं भुक्ति मुक्ति सुखदाई
शिव प्रेमी जो कोउ तन धारी ॥ सकल नपुंसक नर अरु नारी
शिव प्रेमी पुष्कस चंडाला । अथवा कौनहु जाति कराला
सब प्रकार पापी किन होऊ ॥ संसृत सों छूटत है सोऊ ॥

शंकरभक्ति विहीन शरीरा ॥ कौन काज आवै मतिधीरा ॥

दो·॥ कह कुल कह आचार सो कह गुण शील अपार
भक्तिहीन नर शोह नहिं जिमि सरि विन जल धार ४

भक्तिलेशयुत कैसहु कोई ॥ वंदनीय सवकहं नर सोई
इहां एक वरनहु इतिहासा सुनत जाहि शिव प्रेम प्रकाशा
यत्त न जो उज्जैन मुनीशा ॥ चंद्रसेन तहं केरा क्षितीशा
मनुज रूप जनु धरेहु सुरेशा ऐसो परम प्रताप नरेशा ॥
महाकाल वपु धर श्री शंकर तेहिपुर में प्रभु वसहिं निरंतर
चंद्रसेन पूजा तिन केरी ॥ करहिं सदा मन प्रीति घनेरी
शंकर अनुग नाम मणिभद्रा सुमिरत मेटहि सकल अभद्रा
सर्वलोक पूजित गणनाथा देखि भक्तियुत अति नरनाथा
तिन महिपति को दर्शन दीन्हा सखाभाव न्रप सों दृढ कीन्हा

दो· एक वार मन मुदित है श्री मणिभद्र सुजान ॥
॥ न्रपकहं चिंता मणि दई जासुन होय वखान ५॥
॥ कौस्तुभ मणि के सरिस अति तासु प्रभाव अपार
॥ द्योतमान सविता मनहु जासु प्रकाश उदार ६॥
॥ तांवा कांसा शीस पुनि पीतरि जस्त परवान ॥ ॥
॥ जासु प्रभा के छुअत ही सुवरन होहिं सुजान ७

चंद्रसेन वह मणि जव पाई ॥ प्रमुदित कंठ धरैं मन भाई ॥
न्रपति वरासन सोह सुजाना जिमि देवन महं रवि भगवाना
देश २ के सुनि नरनाहा ॥ मणि प्रति सव कर वठा उछाहा
दैवलब्ध शठ जानत नाहीं ॥ सवकी त्रस्ना भै मणि माहीं ॥
कोउ दुर्मद दर्पाय दिठाई ॥ याचहिं कोउ निज नेह जनाई
सवके मन मत्सर अति भारी तासु दृष्टि नहि सकहिं निहारी

देवदत्त अति प्रिय मणि जानी॥ काहू की नृप सुनी न वानी॥
चंद्रसेन पर सब नृप केरा॥ बढत भयो मन क्रोध घनेरा॥

छं॰ सौराष्ट्र मद्र कलिंग कैकय शाल्व मागध नृप घने॥
आवंति अरु सौवीर सृंजय जाहिं सब कापै गिने॥
ते शंभु सेवक चंद्रसेनहि जीतिबे को मन किये॥
धरणी कंपावत सेन सों उज्जैन को घेरत भये ९

दो॰ गज रथ वाजि पदाति बहु सेना लिये अपार॥
परे नगर के सकल दिश रोके चारिहु द्वार॥८
एहि विधि देखा निज पुरहि घेरा सेन कराल॥
गयो शंभु की शरण तव चंद्रसेन महिपाल ९॥

तेहि के कछु विकल्प उर नाहीं उमानाथ निश्चय मन माहीं
निराहार निशिदिन शिव पूजा करहिं अनन्य भाव नहिं दूजा
गोपी एक तेही छिन माहीं॥ विचरत महाकाल मठ पाहीं
पंच वर्ष वय बालक साथा॥ मृत भर्ता सों परम अनाथा
आय राज पूजा तेहि देखी॥ उत्सव सहित उछाह विशेखी
कीन्हो ताहू शंभु प्रनामा॥ गोपी लौटि गई निज धामा
ता सुत नय देखा शिव पूजन परम कुतूहल भा तेहि के मन
तुरतही सो निज घोष विहाई कछुक दूरि खँडर महँ जाई॥
लै आयो सुंदर पाखाना॥ अस्थापन करि लिंग समाना

सो॰ जैसे तैसे पात मिले पुष्प निज हाथ जो॥
भक्ति प्रफुल्लित गात करन लगो पूजा रुचिर १०
गंधाक्षत उपचार धूप दीप भूषन वसन॥
सब कृत्रिम व्यवहार ताही विधि सों भोग धरि ११

वार२ वर कुसुम चढाई॥ नाचन लागो मन हर्षाई॥

बहुरि२ करि दंड प्रनामा ॥ आराधे शंकर सुख धामा ॥
एहि विधि सें बालक शिव पूजा मन अनन्य करि भाव न दूजा ॥
भोजन कारण मातु बोलायो बार२ बालक नहिं आयो ॥ २॥
पूजा प्रेम बदा मन माहीं ॥ भोजन चाह रही तेहि नाहीं
जननी बहुरि तहां चलि आई रहो सुमन जहं ध्यान लगाई
शिव के आगे लखि निज वारा वांह पकरि खैंचा तेहि मारा ॥
ताहू पर नहीं उठा कुमारा ॥ बढ्यो शंभु पद प्रेम अपारा ॥
तब शिव लिंग फेंकि तेहि दीन्हा पूजा कर विनाश सब कीन्हा
गोपी बहुरि सुतहि फिरकारी रोष सहित निज भवन सिधारी
कीन्हो बालक रोदन भारी ॥ हाय हाय हा नाथ पुरारी ॥
देव देव हे देव पुकारी ॥२॥ धरणि परयो व्याकुल अति भारी
अश्रुपूर पूरन सब देहा ॥२॥ देह खबर नहिं शंभु सनेहा
दुइ घटि कालौं बाल अचेता नयन खोलि पुनि भयो सचेता
देखा अचरज परम अपारा प्रगटो तहं शिव भवन उदारा

छं॰ ॥ मणि खंभ कंचन द्वार तोरण अरु कपाट विराजहीं
बड मोल हीरक नील मणि की वेदिका वर राजहीं ॥
संतप्त चामीकर कलश बहु चित्र अतिशय शोहहीं
पुनि फटिक मणि के सौध तल अभिराम मुनि मन मोहहीं २

दो॰ तेहि मंदिर के मध्य में रत्न लिंग छवि धाम ॥ २॥
गोपी बालक लखी सो मूरति मन अभि राम १२

ठाढ भयो तुरतहि हर्षाई ॥ मन विस्मय नहिं वरनि सिराई
मगन भयो सुख सागर माहीं सो सुख वरनि जाय केहि पाहीं
शिव पूजन महिमा सब जानी तासु प्रभाव भयो पुनि ज्ञानी
जननी पाप निवारन हेतू ॥ करि प्रनाम विनये वृष केतू

चौपाई ॥ छंद ॥

गौरीपति पशुपति त्रिपुरारी । समदु पापजननी कर भारी ॥
नाहिं जानति हे नाथ प्रभावा । माता कर अति मूढ स्वभावा ॥
प्रणत पाल शंकर सुरनायक । होहु प्रसन्न शंभु सुखदायक ।

दो॰ ॥ जो कछु राउर प्रेम सो उपजो सुकृत पुरारि ॥
तो प्रभु करुणा पावही शंकर मातु हमारि ॥ १३ ॥
एहि विधि शिवहि निहोरि कै पुनि २ कीन्ह प्रनाम
सांझ समय बालक बहुरि गमन कियो निज धाम १४

कंचन भवन विभव विधि नाना । सो पुनि सुरपति धाम समाना ।
तहँ की शोभा नहिं कहि जाई । गृह भीतर गवनी हर्षाई ॥
महा रत्न गण ज्योति सोहाई । हेम राशि भूषित दर्शाई ॥ २५
शीत श्वेत जहँ रुचिर बिछावन । महा रत्न पर्य्यंक सोहावन ॥
रत्न विभूषित प्रभा विशेखी । तेहि पर जननी सोवत देखी ॥
राजहिं दिव्य वसन छवि छाये । दिव्य अंग सब भांति सोहाये
देव वधू सम द्युति दर्शाई ॥ दिव्य सुलक्षण भवन सोहाई
माता विभव देखि हर्षित मन । अति संभ्रम फूले दोउ लोचन
लगे जगावन तेहि हर्षाई ॥ वेग सहित जननी ढिग जाई
देखहु अचरज की अधिकाई । जागहु अंब तनय सुखदाई

दो॰ ॥ महा पुरुष निज पुत्र ने एहि विधि दियो जगाय
कौतुक युत देखन लगी गृह सुत अरु निज काय १५

तैसोइ सुत को रूप विशेखा । औरहि भांति रूप निज देखा ॥
सुख विह्वल जननी गत शोका । अति अपूर्व निज सदन विलोका ॥
प्रमुदित भे दोउ निज दामादा ॥ सुत मुख सुनि सब शंभु प्रसादा
जो नित सेवत शिव सुखदाई । तुरतहि नृप कहँ खबरि जनाई
नरपति सहसा तहँ चलि आवा । करि पूरो निज नेम सोहावा ॥

शंभु तोष मद परम सोहावा	गोपीसुत कर दीख प्रभावा ॥
कंचनमय मंदिर मनभावा ॥	मणिमय लिंग परम छवि छावा
गोपवधू कर सदन मनोहर ॥	मणि मानिक भासित अति सुंदर

दो॰ ॥ सचिव पुरोहित सहित न्टप सो सब कौतुक देखि
मग्न माहि अति विस्मय बहुरि आनंद लह्यो विशेषि ॥ १६

प्रेम सजल लोचन नरनाहा ॥	बालक भेंटो सहित उछाहा ॥
सब पुर लोग खबरि एह पाई	धाय धाय तहँ देखहिं जाई ॥
अति अद्भुत आकार निहारी	शिव महिमा गावहिं नर नारी
संभ्रम हर्ष न कछु कहि जाई ॥	छिन सम बीती रैनि सोहाई
होत प्रभात समर हित राजा ॥	घेरो सब पुर सहित समाजा
चारन के मुख अद्भुत बानी ॥	सबन सुनी अति अचरज सानी
चकित भये वाढ़ा अनुरागा	सहसा सबनि बैर निज त्यागा
चंद्रसेन अनुमोदन पाई ॥	न्टपति निरायुध पुर महँ जाई

सो॰ ॥ कीन्ही सबन प्रनाम महाकाल को मुदित मन
देखत पुर अभिराम गोपभवन सब न्टप गये ॥ १७

चंद्रसेन आगे ह्वै लीन्हा ॥	हर्षित सब कर पूजन कीन्हा
बैठारे सन्मानि बरासन ॥	महा हर्ष विस्मय सब के मन
गोप सुवन के प्रेम अपारा ॥	प्रगटो शंकर लिंग उदारा
मंदिर सहित लिंग वर देखी	राजन उर शिव प्रेम विशेखी
पुनि तिन देखा गोपकुमारा	तेहि बिलोकि भै प्रीति अपारा
हेम बसन मणि धेनु सोहाई ॥	गज रथ हय महिषी समुदाई
हेम छत्र वर यान सोहाये	दासी दासादिक मनभाये
शंभु कृपाहित ते नरनाहा ॥	बालहि दीन्हे सहित उछाहा

सो॰ ॥ बसत रहे तेहि काल सब देशन में गोपजे

तिन सबको नरपाल सब राजन मिलि तेहि कियो २८
रविशशि अनल समान वानरेश बहु तेज बल ॥
सुर वंदित हनुमान तेहि अवसर तहँ प्रगट भे २९

तिनको आये देखि नृपाला ॥ सब ठाढे ह्वै गये तत्काला ॥
भक्ति नम्र कंधर अरु काया ॥ सबके मन संभ्रम अति छाया
वानरेश बहु पूजन पाई ॥ सकल मध्य बैठे हर्षाई ॥
गोप कुमार आय शिर नावा मारुतसुत तेहि हृदय लगावा
सब नरपति दिशि लखि वर वीरा एह बोले वानी गंभीरा ॥ १ ॥
जेते सब राजा नर नारी ॥ २ ॥ सुनहु मोरि वानी भ्रम हारी
तनधारी जग में है जोई ॥ ३ शिव पूजा विन गति नहिं कोई
एह बड भागी गोप कुमारा ॥ कालि प्रदोष रहो सनिवारा
विन हु मंत्र शिव पूजा कीन्हा मंगल मय शंकर फल दीन्हा

दो॰ ॥ है प्रदोष सनिवार में दुर्लभ परम सुजान
कृष्ण पक्ष महँ जो मिलै दुर्लभ तर गुनवान ३०
एहि के अष्टम वंश में परम यशस्वी नंद ॥ २ ॥
ह्वैहैं तिनके तनय प्रभु कृष्ण देवकी नंद ३१ ॥

अति सुकृती एहु गोप कुमारा गोप जाति कर यश विस्तारा
श्रीकर ऐसो नाम उदारा ॥ अति प्रसिद्ध ह्वै है संसारा ॥
एहि विधि कहि अंजनी कुमारा श्रीकर को पुनि शिव आचारा
करि प्रबोध अंतर्हित भयऊ श्रीकर महा मोद मन लहेऊ
सब राजा अतिशय हर्षाने ॥ चंद्रसेन बहु विधि सन्माने
चंद्रसेन अनुशासन लीन्हा ॥ निज २ देश गमन तिन कीन्हा
श्रीकर अतिशय तेज निधाना उपदेशा जेहि श्री हनुमाना
धर्म धाम द्विज सहित अमानी श्री शंकर पूजा रति मानी ॥

चंद्रसेन श्री कर ह्वै सज्जन ॥ श्री शंकर को करि आराधन ॥
शिव पूजा अरु प्रेम प्रभावा दूनहु श्री शंकर पद पावा ॥

सो॰ यह गाथा सुख दानि अति रहस्य पावन परम ॥
दिवि गति प्रद यश खानि शौनक मैं वरनन करी
सब अघ ओघ नशाव श्रोता वक्ता जनन को ॥१॥
गौरी पति पद भाव बिन संदेह बढ़ावही २२ ॥

इति श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम कृ
ष्ण भारती शिष्य माधवा नंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे
शिव पूजा माहिमा प्रकाशनं नाम पंचमो विश्राम: ५ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

शौनकादि मुनि अति हर्षाई पुनि कीन्ही यह प्रश्न सोहाई
शंकर महिमा परम सुहाई ॥ अद्भुत मुनि वर आपु सुनाई
सुना चहैं मुनि वर हम सोई ॥ पुनि २ सुनि अतिशय रुचि होई
करि प्रदोष पूजा मुनि राई ॥ पावत कौनि सिद्धि सुख दाई
साधु प्रश्न कीन्ही मुनि राया ॥ लोकन में राउर यश छाया ॥
जो प्रदोष वेला अति पावनि सो है गिरिजा पति मन भावनि
ताहि शंभु पद प्रीति घनेरी ॥ अथवा फल की रुचि बहुतेरी
सो तेहि छिन सब देव विहाई श्री शंकर पूजै मन लाई ॥

दो॰ जो प्रदोष पूजा रुचिर महिमा तासु अपार ॥
तेहि को वरनन करि सकै को भा एहि संसार १ ॥
रजता चल कैलाश महँ श्री शंकर सुर राय ॥
नृत्य करैं तेहि काल में सो अतिशय हर्षाय २ ॥

तेहि छिन निज २ लोक विहाई शिव समीप गवनहिं सुरराई
ते सब सुर पूजहिं मन लाई ॥ विनती करहिं शंभु गुन गाई ॥

तेहि ते शिव पूजा जप हवनू॥ शंभु सुयश सब भव दुख दवनू
करिबे योग अवसि एह ताही॥ चारि पदारथ की रुचि जाही
तेहि छिन गिरिजापति को पूजन मंगल भवन अमंगल भंजन
है दारिद्र तिमिर को अंजन॥ पुनि भव रोग निदान विभंजन
जे बूडे ऋन सागर धारा॥ २॥ पोत समान दिखावहिं पारा
जे बूडे भव सागर माहीं॥ एहि सम तिन्हहि पोत कोउ नाहीं

दो॰॥ दुःख शोक भय विकल के सब कलेश करि नाश
गिरिजापति पूजन सदा करै सुमोद प्रकाश ३॥

दुर्मति नीच हु शठ पामर जन मंद भाग अरु परम असज्जन
पूजि प्रदोष समय श्री शंकर॥ सहसा तरहिं विपति अति दुस्तर
रिपु गन हन्यमान पुनि जोई॥ डशो सर्प गन सों जो कोई॥
दवो शैल गन सब किन होई॥ महाजलधि बूडत पुनि जोई
नाना रोग विकल अतिशय नर काल दंड दंडित अतिशय नर
जो प्रदोष पूजन बनि आवै॥ तौ नर कबहुं नाश नहिं पावै
जे दरिद्र अरु दुख बहुतेरा॥ पर्वत सम ऋण भार घनेरा
मरण समीप भयो जेहि केरा॥ अथवा है अति पाप घनेरा॥

सो॰ ताहू सब दुख मिटि जाय पावै अभिमत संपदा॥
जो पूजै मन लाय रजनी मुख महं शंभु कहं ४॥

इहां कहो इतिहास पुरातन॥ महापुन्य प्रद अतिशय पावन
जाहि सुनें ते सब नर नारी॥ होंहि कृतारथ परम सुखारी
न्रपति विदर्भ देश गुण धामू रह्यो सत्यरथ तिन कर नामू
सत्य संध अरु परम गंभीरा सकल धर्म रत अरु मति धीरा
धर्म सहित पालै निज राजू॥ आपु सुखी सब प्रजा समाजू
एहि प्रकार बीता बहु काला शाल्व देश बासी महिपाला

दुर्मर्षण आदिक बलवाना ॥	नृपसों शत्रुभाव तिन माना ॥
एक समय ते सब चढ़ि आये ॥	चतुरंगिनी सेन संग लाये ॥
घेरयो पुर विदर्भ तिन आई ॥	जीतन की आसा उर छाई ॥
निज पुर ग्रसित देखि नरनाहा	सेन साथ कियो समर उछाहा
अति संग्राम भयो तेहि काला	महाबली दूनहु महिपाला ॥
पन्नगेंद्र गंधर्व समर जस	उभय नृपति कर युद्ध भयो तस
मंत्रिन सहित विदर्भ नरेशा	समर मरो सहि युद्ध कलेशा
निहत विलोको जब निज राजा	भगी भग्न ह्वै सेन समाजा ॥
तब निवृत्त ह्वै गो संग्रामा ॥	शत्रु चले नरपति के धामा ॥
भयो नगर कोलाहल भारी ॥	रिपुगन सिंह नाद भयकारी
रानी को तेहि छिन दुख जोई ॥	तेहि की मिति कहि सके न कोई
करि बहु यत्न निशा अँधियारी	भागी भाग्य बचाय दुखारी ॥
रहा गर्भ पुनि अति सुकुमारी	शोक विकल चिंता उर भारी
प्राची दिशि मारग पुनि धाई	होत प्रभाव चली दुख छाई

दो॰ धीरे धीरे पंथ बहु गई नृपति वर बाम ॥ २२ ॥
पाय विमल सर विटप तर कीन्हो तेहि विश्राम ५

दैव योग रानी तहँ जायो ॥	सुभग काल महँ तनय सोहायो
अमित तृषित व्याकुल अति रानी	प्रविसी सरजल माहिं सयानी
ग्राह ग्रसी पुनि ता सुकुमारा ॥	जन्मत ही पायो दुख भारा ॥
मातु पिता मृत नहिं कोउ तीरा	क्षुधा पियासा विकल अधीरा
ठाना तेहि रोदन अति भारी	दैव योग आई द्विज नारी ॥
गृह गृह माँगति भीख विचारी	पति विहीन पावे दुख भारी ॥
एक वर्ष को सुत निज गोदा	उमा नाम द्विज नारि प्रमोदा
द्विज पत्नी नृप नंदन देखा ॥	तरणि विंव सम तेज विशेखा

तुरतहि भयो तीर कोउ नाहीं । चिंता करन लगी मन माहीं

दो॰ नालछेद एहि को नहीं भयो धरणि बिलखात
नहिं ढिग बंधु कुटुंब कोउ नहिं जननी नहिं तात ६

दीन अनाथ धरनि पर सोवै ॥ क्षुधा पियास बिकल अति रोवै
है चंडाल कुमार बिधाता ॥ अथवा शूद्र केर एह ताता ॥
बनिगतनय द्विज बालक एहा । अथवा नृप सुत मन संदेहा
कोउ किन होहु होय उर नेहा ॥ निज बालक इव सहित सनेहा
पालहुंगी पुनि कुल बिनजाना । पर्श करन को मन नहिं माना ।
एहि बिधि करहि बिचार सयानी । आयो पति वरजनु शिवज्ञानी
बोले तेहि सन तजु संदेहा ॥ पालु पुत्र सम सहित सनेहा
बहु कल्याण लाभ तव हूं है । अल्प काल सब दुख मिटि जैहै
करुनानिधि एहि भांति सिखाई । तुरतहि गमन कीन्ह पति राई
मुनिवर वचन मानि बिश्वासा । लीन्हो बालक सहित हुलासा
निज गृह लाय विप्रवर नारी । सुत सम पाल प्रीति उर भारी
एकचक्र नाम कवर ग्रामा ॥ तहां रहा द्विज नारी धामा ॥
दिन प्रति भीख मांगि ले आवै । दूनहु बालक पालि बढावै ॥

दो॰ ॥ तहां बसैं जे विप्रवर दयानिधान उदार ॥
तिन कीन्हो द्वौ तनय को उचित सकल संस्कार ७

कालपाय द्वै गो उपनयना ॥ नेम सहित दूनहु गुन अयना
रहहिं सदा द्वौ भिक्षा करहीं । निज गुर जननि मोद मन भरहीं
एक बार द्वौ तनय सहीता । द्विज गृहणी अति चतुर बिनीता
भिक्षाहित बिचरति तहँ आई । जहां शंभु मंदिर सुखदाई ॥
वृद्ध विप्रवर तहँ बहुतेरे ॥ तापस गण मुनि लोग घनेरे
मुनि शांडिल्य रहे तेहि माहीं । बालक लखि बोले तिन पाहीं

दैव प्रवल देखहु मुनिराई । कठिन कर्मगति कहि नहिं जाई ॥
एह वालक पितु मातु विहीना । जिओ दैव परवश है दीना ॥
विप्रवधू एह परम प्रवीना ॥ मातु सरिस नित नेह नवीना ॥
पालि वढायो अरु द्विज भावा । द्विज वालक सह अव एहि पावा ॥
एहि विधि सुनि मुनि वचन सोहायो । द्विज वनिता उर विस्मय छायो ॥
करि प्रनाम एह विनय सुनाई । तुम सर्वज्ञ अहो मुनिराई ॥

दो० यती वचन विश्वास करि एह वालक मुनिराय ॥
लाई गृह पालन कियो कुल जानो नहि जाय ८ ॥

को माता एहि की को ताता ॥ सुनो चहौं तुम सन एह वाता ॥
ज्ञान दृष्टि तुम सव कछु जानहु । कृपा करहु प्रभु मोहि वखानहु ॥
एह सुनि द्विज वनिता की वानी । कहा सकल मुनिवर विज्ञानी ॥
जेहि विधि समर हतो नरपाला । ग्रसी मातु जिमि नक्र कराला ॥
सरत रुचर तट जेहि विधि जायो । सव प्रसंग मुनि वरनि सुनायो ॥
सुनि विस्मित वोली एह वयना । नरपति केहि कारन गुन अयना ॥
सकल भोग तजि नर तन त्यागा । एहि कर पुनि केहि हेतु अभागा ॥
एह दारिद्र कौन विधि जैहै ॥ केहि प्रकार पुनि निज पद पैहै ॥
मम सुत कर दारिद्र जेहि जाई । कहो शोधि मुनिनाथ उपाई ॥
सुनु भामिनि विदर्भ नरपाला । रहा प्रथम जन्म कहु महिपाला ॥

दो० ॥ पांड्य देश को राज सुख भोगत रह्यो सुजान ॥
धर्म सहित पालै प्रजा पूजै शिव भगवान ९ ॥

कवहु प्रदोष समय शुभ पाई । त्रिभुअन पति पूजा सरसाई ॥
तवहीं नगर कोलाहल भारी । कलकल शब्द भयो भयकारी ॥
अति उत्कट रव सुनि नरपाला । शिव पूजा त्यागी तत्काला ॥
राजभवन वाहर नृप गयऊ । नगर क्षोभ शंकित मन भयऊ ॥

ताही छिन नृप सचिव सयाना। गहि लायो रिपुगन बलवाना।
ते सामंत रहे अभिमानी ॥ नृप विरोध अरिता उर आनी।
तिनको शिर छेदन करवायो। बहुरि नृपति निज मंदिर आयो।
त्यागि दियो गौरीपति पूजन ॥ पुनि कीन्हो सुखेन निशि भोजन।

दो॰ ॥ तैसोई अघ कीन्हो तनय समय प्रदोष विहाय ॥
शिव पूजन कीन्हे विना भोजन किये अघाय १० ॥

सोय रहा दुर्मति अज्ञानी ॥ नेम भंग भय नहिं मन आनी।
पांड्य देश को जो नरपाला ॥ सोई भा विदर्भ महिपाला।
अंतराय पूजन महँ करेऊ। तेहि ते मध्य भोग हत भयेऊ।
सोई पुत्र भयो तेहि केरा ॥ तेहि अघ सहे दरिद्र घनेरा।
तासु मातु कर पुनि अघ भारी। छल करि जेहि निज सौति संहारी।
तेहि पातक कर एह फल पायो। भोगहीन भै जलचर खायो।
इन सबको मैं चरित बखाना। शंभु भजन विन नर दुख नाना।
पावहिं शोक दरिद्र कलेशा। जिन पूजे नहिं नाथ महेशा।

छं॰ ॥ सांची कहौं मैं तोहि अरु परलोक हित दर्शावहूं।
एह कहौं सबको सार अरु उपनिषद हृदय सुनावहूं।
जे लोग एहि संसार संशय सार में भरकत फिरैं ॥
है सार तिनको एही जो श्री शंभु पद सेवा करैं ॥ २ ॥
जे पाय निशि मुख शंभु पूजा मांहि निज मन नहिं धरैं।
पुनि देखि पर पूजित शिवहि प्रणिपात जे नाहीं करैं।
जे मूढ़ गिरिजा नाथ कीरति श्रवण पुट सों नहिं पियैं।
ते जन्म जन्म दरिद्र भागी होंहि अरु दुख सों जियैं ॥
जे पाय निशि मुख शंभु पूजा नन्य मन ह्वै नित करैं ॥
तिनके भवन धन धान्य सों कैलाश पति अतिशय भरैं।

ते पाय पुत्र कलत्र संपति लोक में हर्षित रहैं ॥ ८ ॥
पुनि पाय शिव सामीप्य सुख को अमर पद आनंद लहैं
कैलाश मंदिर हेम मणि मय पीठ सेज सोहावनी ॥ ९ ॥
तेहि पर विराजहिं जगजननि शंकरप्रिया मनभावनी
श्री शंभु पाय प्रदोष अवसर नृत्य उत्सव मन धरैं ॥
तेहि काल सब सुर पाल देवन सहित प्रभु सेवन करैं
वीणा बजावहिं शारदा अरु वेणु इन्द्र बजावहीं ॥ १० ॥
विधि ताल धारी होंहि कमला मधुर लय स्वर गावहीं
माधव मृदंग बजाय निज पटुता परम दर्शावहीं ॥ ११ ॥
एहि रीति सब सुर प्रेम सों श्री उमानाथ रिझावहीं ॥
गंधर्व यक्ष खगेश पन्नग सिद्ध अरु विद्याधरा ॥
सब अमरगण अरु सुर वधू जे साध्य गण रजनीचरा
जे और सब त्रैलोक वासी भूत प्रमथादिक घने ॥
तेहि छिन सकल मिलि शंभु सेवें जांहि ते कापे गिने ॥
एहि हेतु पाय प्रदोष अवसर हरि विरंचि विहाय कै
पूजहिं भली विधि शिवहि निर्भर प्रेम उर उपजाय कै ॥
गौरीश पूजा जो यथाविधि करै शिव प्रेमहि गहै ॥ १२ ॥
सब देव प्रमुदित होंहि तेहि सों धन्य सो नर वर अहै ॥
दो॰ ॥ सुनि भामिनि एहु तव तनय रहा प्रथम द्विजराज ॥
खोई वयसि प्रतिग्रहन नहीं कीन्हो शुभ काज ॥ ११ ॥
सो॰ तेहि कारण भा आय परम दरिद्री तव तनय ॥ १ ॥
शंभु शरण अवजाय सकल दोष परिहार हित १२

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्ग प्रदी

ष महिमा प्रकाशनं नाम षष्ठो विश्रामः ६॥ शिव ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशंकराय नमः चौपाई

एह सुनि श्री मुनिवर की वानी। द्विजवनिता अतिशय हर्षानी॥
करि प्रणाम बहु विनय बहोरी। पूजा विधि पूछी कर जोरी॥
सुनु भामिनि तैं परम सयानी। शिव पूजा क्रम कहहु बखानी॥
एह प्रदोष पूजा की रीती॥ उभय पाख तेरसि अति प्रीती॥
कीजे नहिं दिन में आहारा॥ व्रत कीजे मन प्रेम अपारा॥
तीनि घरी दिन जव रहि जाई। कीजे मज्जन शुचि सर साई॥
श्वेत वस्त्र पाहिरैं मन पावन॥ गहे मौंन को नेम सोहावन॥
पहिले जप संध्या करि रूरी॥ करै बहुरि पूजा विधि भूरी॥

दो॰॥ उपलेपित वर भूमि करि मंडप रचै बनाय॥
शुभग चँदोवा पुष्प फल अंकुर रुचिर लगाय १

पांच वरन को पद्म वनावे॥ निज आसन तेहि निकट बिछावे॥
पूजा की सव वस्तु सोहाई॥ यथा योग तहँ धरै सजाई॥
आगम मंचन सों गुन वाना॥ करि अभिमंत्रित पीठ सुजाना॥
आतम शुद्धि करै मन लाई॥ भूत[१] शुद्धि जेहि विधि मुनि गाई॥
बीज वर्ण सों बिंदु मिलाई॥ प्राणायाम[२] तीनि मुनि राई॥
करिके साधक प्रेम समेता॥ कराहि मात्रिका न्यास सचेता॥
करि पूरी मात्रिका[३] विधाना॥ ध्यावहि परम देव ईशाना॥

१ पंचभूत शरीर व्यापी॥

२ अं आ मित्यारंभ्य अः इत्यंतेन पूरकं कंख मित्यारभ्य मं इत्यंतेन कुंभकं यंरं इत्यारभ्य क्षं इत्यंतेन रेचकं एवं त्रिवारं॥

३ ललाटे अं नमः मुखे आं नमः दक्षिण नेत्रे इं नमः इत्यारभ्य हृदयादि उदरं पर्यंत क्षं नमः इत्यंतं॥

वामभाग गुरु कहँ शिर नावै। दक्षिण दिशि गणनाथ मनावै॥
[1]अंश उरु युग माहिं सुजाना। करि [2]धर्मादिक न्यास विधाना॥

सो॰॥ [3]अधर्मादि को न्यास करै नाभि अरु पार्श्व महँ।
[4]उर में सहित हुलास [5]अनंतादि को पीठ महँ ॥ २ ॥

दो॰॥ [6]मनु आधार शक्ति सें करि आरंभ सुजान॥
ज्ञानातमलौं क्रम सहित न्यास करै गुनवान ॥ ३ ॥
हृदय पद्म नव [8]शक्तिमय अति रमणीय अनूप।
सावधान साधक बहुरि तहँ ध्यावै सुरभूप ॥ ४ ॥

पिंगजटा छवि मय शिर छाजें। रत्न मौलि प्रभु अधिक विराजें॥
नीलकंठ वर अंग उदारा॥ शोभित हृदय नाग मय हारा॥
शंकर परशु अभय कर धारी। वरदायक पशुपति त्रिपुरारी॥
वलयांगद केयूर मनोहर। कर मुद्रिका धरे गिरिजावर॥
वाघ चर्म कौमल परिधाना। रत्न पीठ बैठे भगवाना॥
एहि विधि करि श्री शंकर ध्याना। गिरितनयहि ध्यावै गुनवाना॥
जापकुसुमइव तन अति सुंदर। उदय भानु सम प्रभा मनोहर॥
चपला पुंज रुचिर छवि हारी। चख मन मोद बढावनि हारी॥

दो॰ बालइंदु शेखर सुभग कुंचित कुंतल श्याम।
भृंगवृंद सम अति रुचिर नीलालक अभिराम ॥ ५ ॥
मणि कुंडल की अति प्रभा मुख मंडल रमणीय

१ स्कंध युग्म उरू युग्म · · · · · ·
२ धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य · · · · ·
३ अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य
४ हृदय · · · · · · · · · · ·
५-६ पीठ में मनुं अर्थात ॐ नमः शिवाय मंत्र को न्यास
७ ॐ आधारशक्तयेनमः ॐ कूर्माय नमः ॐ अनंतायनमः ॐ पृथिव्यै नमः ॐ ज्ञानात्मने नमः अयमक्रमः
८ वामा रुद्रा इत्यादि नवशक्तयः ज्येष्ठा - · · · · · · · ·

"कपोल

नवकुंकुम अंकित विशद गंड मुकुर कमनीय ६

रुचिर मधुर मुसिकानि सोहाई॥ अरुणाधर पल्लव रुचिराई॥
कंवु कंठ कुच वर मन हारी॥ पंकज कुड्मल के अनु हारी॥
अंकुश पाश अभय वरदाना॥ चारि भुजा तन तेज निधाना॥
रत्न समूह रचित वर कंकन॥ मणि मुद्रिका सोंहि छीनि मन॥
क्षुद्र घंटिका चिवालि सोहाई॥ हेम रचित सुंदरि मन भाई॥
अरुण वसन माला तिमि सुंदर॥ चंदन चर्चित गात मनोहर॥
दिगपति नारि नमित वर चरनू॥ सुमिरत सकल अमंगल हरनू॥
रत्न सिंहासन मध्य विराजैं॥ सकल शक्ति छवि लखि अति लाजैं॥

सो॰ एहि विधि सों करि ध्यान श्री शंकर अरु उमा को॥
पूजहिं पुनि गुनवान न्यास कर्म सों विधि सहित॥
कहे जौन अस्थान तिनमें अथवा हृदय में॥२॥
ब्रह्ममंत्र गुनवान पढि पढि पूजै यथाविधि ८॥
दो॰॥ तीनि २ पुष्पांजुली मूल मंत्र पढि देय॥२२॥
एतो पूजन हृदय में जव साधक करि लेय॥६॥

"ओंनमोहिरण्यइत्यादि

वहुरि वाह्य पूजा मन लावै॥ सोई क्रम वाहेर दर्शावै॥
प्रथम करै संकल्प सुजाना॥ हाथ जोरि सुमिरै भगवाना॥
ऋण पातक दुर्भागनि काया॥ विनशनाहित दारिद समुदाया॥
होहु प्रसन्न शंभु वृषकेतू॥ अघ अशेष नाशहु दुखहेतू॥
शोक दुःख पावक गंभीरा॥ सदा रहत संतप्त शरीरा॥
रोग विकल भव भय श्रम दीना॥ त्राहि त्राहि वृषनाथ प्रवीना॥
महादेव जग अभय विधाता॥ आवहु देवदेव सुरत्राता॥
उमा सहित एहु पूजन नेहू॥ हु प्रसन्न अभिमत वर देहू॥
दो॰ एहि प्रकार संकल्प करि पूजहि प्रेम दृढाय॥२॥

दाहिने गणपति वामदिशि निजगुरु को शिर नाय १०
ईश कोण महं क्षेत्रपति बहुरि देवं नृपजान ॥ २२॥
सरस्वती को पूजि पुनि कात्यानि सन्मान ११॥ ८॥
सो॰॥ धर्म ज्ञान विराग ऐश्वर्य्य पुनि जानिये ॥ २२॥
पूजहि सह अनुराग आठ दिशा महं यथाक्रम १२

सबके नाम नमाहिं सुजाना	नमः अंतकहि २ गुनवाना ॥
ईश कोण आदिक मुनिराई	पीठपाद क्रम सों मन लाई ॥
स्वर में विंदु विसर्ग मिलाई	अधर्मादि पूजै मुनिराई ॥
चहुंदिशि सस्वरूप कर पूजन	मध्य अनंत प्रणव युत सज्जन
सत्वादिक जो त्रिगुण विलाश	कीजे पीठ तंतु सन्यासा ॥
ऊपर माया सिंधु कुमारी ॥	सहित पूजिये प्रभु त्रिपुरारी
तासु समीप बहुरि वर पंकज	मंडल तीनि कहैं ज्ञाता द्विज
पत्र तथा केसर गुन अयनी ॥	सुभ किंजल्क भरो मृदु वयनी

दो॰॥ पंकज त्रय को पूजि कै आदर सहित वहोरि ॥
वर मंडप के मध्य में नव शक्ति न कर जोरि १३

१ अं आं धर्मायनमः इं ईं ज्ञानायनमः इत्यादिक्रमेण ॥	लक्ष्मी वीज ह्रीं शिव वीजिन सह
२ अं अः अधर्मायनमः अं अः अज्ञानायनमः अविराग अनैश्वर्य्य इति क्रमेण	५-६ कर्णिका के सर्व दिशि सूक्ष्मतंतु ५८ पराग॰ ६॥
३ संसत्वायनमः तंतमसेनमः रंरजसे इत्येवं कमलनालतंतुरूपेण संभाविताः ॥	७ वामा ज्येष्ठा रौद्री काली कलादिका विकरिणी बलाघा विकरिणी कलत्र मथनी सर्वभूत दमनी नव शक्तयः
४ ऊपर के पत्र में ह्रीं माया वीजश्री	



प्रथम माहिं वामा शक्ति सोहाई । वक्रारि ज्येष्ठा कहि दर्शाई ॥
रौद्री आदिक शक्ति सोहाई । [1] नवस्वर युक्त भजै मन लाई ॥
[2] आदि बीजत्रय सों उर पूजन ॥ [3] पीठमंत्र सों करहिं समर्चन
जो [4] आवरण रीति मुनि गाई ॥ करहिं अंग पूजा सुखदाई
पंच शक्ति मूरति सह भामिनि । अपर त्रिशक्ति सहित गजगामिनि
[5] गुणनिधि सहित प्रेम सरसाई । करै आवरण विधि मन लाई
[6] अनंतादि संयुत मुनिराई ॥ [7] मातृ सहित वृषगण समुदाई
[8] अणिमादिक सब सिद्धि सयानी । इंद्रादिक देवन सन्मानी ॥

सो॰ वृषभ क्षेत्र चंडेश दुर्गा गुह नंदी तथा ॥ ९ ॥
गणपति अरु सैनेश निज २ वर लक्षण सहित १४

१ अंबामायै नमः आं ज्येष्ठायै नमः इत्यादिक्रमेण ॥ . . . .

२ ह्रीं श्रीं ह्रौं इति बीजत्रयेण

३ ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः इति पीठमंत्रेण

४ आवरणपूजाप्रकारः ईशानः सर्वविद्यानामित्यादि मंत्रं पठित्वा ईशानकोणे ईशानं पूजयेत् तत्पुरुषाय विद्महे - अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यः - वामदेवाय नमः सद्योजातं प्रपद्यामीत्यादिचतुर्भिर्मंत्रैः तत्पुरुषः अघोरः वामदेवः सद्योजातेति चतुरः पूजयेत् तेषां समीपे निवृत्तिः प्रतिष्ठा विद्या शांतिः शांत्यातीता पंचशक्तयः निवृत्त्यै नम इत्यादिक्रमेण पूजनीयाः . . . .

५ द्वितीयावरणे षडंगानि पूज्यानि तृतीयावरणे सूर्यमूर्तये नमः इत्यादिक्रमेण सूर्य्यः[1] इंदुः[2] क्षिति[3] तोय[4] अग्नि[5] पवन[6] आकाश[7] यज्वा[8] पूज्याः चतुर्थावरणे रमा राका प्रभा ज्योत्स्ना पूर्णा उषा पूर्णा सुधी रित्यष्टशक्तयः पूज्याः पंचमावरणे विश्वा वंधा सिता प्रह्वा सरा संध्या शिवा निशा इत्यष्टशक्तय पूजनीयाः षष्ठावरणे आर्या प्रज्ञा प्रभा मेधा शांतिः कांतिः

धृतिः मतिः इत्यष्ट शक्तयः पूज्याः सप्तमावरणे धरा उमा पावनी पद्मा शांता मेधा जपा अमला इत्यष्टशक्तयः पूज्याः अष्टमावरणे अनंतः सूक्ष्मः शिवः एकनेत्रः एकरुद्रः त्रिमूर्त्तिः श्रीकंठः शिखंडी इत्यष्टौ पूज्याः नवमे उत्तराउमा चंडेश्वरः नंदी महाकालः

वृषभः भृंगरिटिः स्कंदः इत्येते पूज्याः दशमे ब्राह्मी इत्यादि मातरः पूज्याः

६ संखनिधिभ्यो नमः

७ पद्मनिधिभ्यो नमः

८ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ईशत्वं च वशित्वं च प्राप्तिः प्राकाम्यमेव च ९ ॥

ब्रह्ममंत्र जे पांच उदारा ॥ तिन सों करि पूजा विस्तारा

हृदयादिकमंत्र सुजाना तिन सों पुजवहिं सकल विधाना

उमाप्रमुख इंद्रादि सयानी अंगपूजा वर नहिं मुनि ज्ञानी

उत्तरादि दिशि क्रम सों मुनिवर पूजै गिरिजादिक चंडेश्वर

एहि प्रकार आवरण समेता तेजरूप शिव कृपानिकेता ॥ २ ॥

पूजन के उपचार बढाई ॥ उमा सहित पूजै मन लाई ॥

शंखप्रतिष्ठित को जल सुंदर पंचामृत अति दिव्य मनोहर

तिन सों करहिं शंभु अभिषेका रुद्रसूक्त पदि सहित विवेका

आसनादि उपचार सयानी विविध मंत्र पढि मृदु वानी

हेमासन कल्पित करि सुंदर वस्त्र समन्वित परम मनोहर

अष्टगंध युत अर्घ सोहावन पादोदक शुद्धोदक पावन ॥

तथा आचमन जल गुनदाना अर्घहि पुनि मधुपर्क सुजाना

सो॰ पुनि आचमन कराय अन्हवावे वर मंत्र पढि ॥
उपवीतहि पहिराय वसन विभूषन देहि पुनि ॥

अष्टगंधयुत गंध मनोहर करहिं निवेदन अति पावनतर

बिल्वपत्र कल्हार सोहाये ॥ अरु मंदार पंकज मन भाये ॥

मंत्र ॥ शुद्धोदक ॥ वस्त्र

मल्लीगण धत्तूर पिआरा ॥ कर्णिकार चण पुष्प अपारा

कुश अंकुर तुलसी मतिधीरा । चंपादिक बहुली कर वीरा ॥

माधव्यादि सुमन जो पावै ॥ सहित प्रेम सब प्रभुहि चढ़ावै

बहुरि सुगंधमई वरमाला ॥ विविधि रूप की रुचिर विशाला

कालागुरु की धूपन घोरी ॥ दीप विमल शुभ देय बहोरी

गुड शर्करा सहित अति सुंदर मधु मिश्रित वर भोग रुचिरतर

पायस मधुर सघृत गुनवाना मोदक पुवा दही जल पाना ॥

ताही हवि सों परम सयानी तंत्र मंत्र पढि २ मृदु वानी ॥

साधक होम करै मन लाई ॥ जैसी विधि निज गुरु दर्शाई

दो॰ करि अर्पन नैवेद्य पुनि आगे राखै पान ॥ २ ॥
धूप देय पुनि तहं करै नीराजन गुनवान १६ ॥

दर्पण उत्तम छत्र मनोहर प्रभुहि समर्पहि तब साधक वर

पढि २ वैदिक मंत्र सोहाये ॥ तथा तंत्र महं जे दर्शाये ॥

ग्रसित दरिद्र होय नर जोई यथा विभव पूजहि पुनि सोई

प्रेम पुष्प एक हू किन होई ॥ गौरीपति सुखदायक सोई

अंगभूत गैंण घादिक देवा ॥ करै यथाविधि सब की सेवा

नानाविधि करि विनै ये वडाई दंड प्रनाम करै शिर नाई

नवचंडेश्वरादि हि गुनवाना करै प्रदक्षिण बहुरि सुजाना

अर्पण करहि तथा निज पूजा शिव हि मनावै भाव न दूजा

सो॰ ॥ जय श्री शंभु दयाल सकल देव पूजित चरन ॥
जय सुरजन महिपाल गुणातीत जय होय तव १७

जय २ देव सकल जग नायक शंभु सनातन जय सुखदायक

जय शंकर सब के वरदाता ॥ जय शिव निज जन अभय विधाता

जय विश्वंभर प्रभु अविनाशी जय हर निराधार सुख राशी ॥

जय नागेश विभूषण शंकर॥ जय गौरी पति दुष्ट भयंकर॥
जय जग वंदित ईश गोसाईं जय निशि पति शेखर सुखदाई
जय शंकर अनंत गुन धामू कोटि दिवाकर द्युति अभिरामू
विरूपाक्ष जय होय तुम्हारी जय श्री रुद्र शंभु त्रिपुरारी॥
जय अचिंत्य महिमा गुन गाहा जयति निरंजन जय सुर नाहा

सो॰॥ जय दुस्तर संसार सागर के तारक प्रभो॥ २०॥
मेटहु मम दुख भार है प्रसन्न करूनायतन १८॥

सकल पाप भय मारि पुरारी शंकर रक्षा करहु हमारी॥
अति दारिद्र मगन जन नाथा महा पाप हत परम अनाथा
महा शोक आकुल सुर राया आतुर महा रोग समुदाया
ऋण कर भारी मम शिर भारा दुख दायक मम कर्म अपारा
ग्रह पीड़ा अति मोहि कराला मोपर होहु प्रसन्न दयाला
जो साधक दरिद्र युत होई॥ एहि प्रकार विनवै प्रभु सोई
जो साधक अति शय धनवाना॥ अथवा पृथ्वी पति गुनवाना
तासु विनय की रीति सोहाई मो सन सुनु भामिनि मन लाई
आयु दीर्घ तन में नहिं रोगा॥ बढ़ै कोश बल अरु बहु भोगा
होहु मोहि आनंद अपारा॥ तव प्रसाद श्री शंभु उदारा

सो॰ शत्रुन की क्षय होय सुखी होहिं सब मम प्रजा
चोर रहैं नहिं कोय होंहि लोग आपद रहित॥
अरि संताप निवारि शमित करहु दुर्भिक्ष सब
सस्य समृद्धि सुधारि करहु सकल सुख मय दिशा॥

एहि विधि प्रति प्रदोष शिव पूजन। नर बर सदा करै प्रमुदित मन
विप्रन को भोजन करवाई॥ पूजहि दै दक्षिणा सोहाई॥
सर्व पाप नाशक शिव पूजन सब दारिद्र दोष दुख भंजन

सब अभिमत फलदायक एहा। जानहु भामिनि बिन संदेहा
महा पाप उपपातक जोई ॥ एहु कीन्हे पुनि रहै न कोई ॥
शंभु द्रव्य अपहार विहाई ॥ और सकल अघ जायन गाई
ब्रह्म वधादिक पाप बडेरे ॥ तिन के प्रायश्चित्त घनेरे ॥
श्रुति पुराण बहु विधि दर्शाये। शिव धन हरन पाप बड गाये।

दो· तिहि कीनिः कृति नहिं कहूं गावै वेद पुरान ॥
सब पापन में परम तेहि बरनहिं विदुष सुजान २१

बहुत कहौं कहं लौं दर्शाई ॥ थोरेहि में तोहि देहुं बुझाई
ब्रह्म घात शत अघ किन होऊ। शिव पूजा सब नाशहि सोऊ
शिव प्रदोष पूजा विधि गाई। परम रहस्य दियो दर्शाई ॥
सद अभिमत फलदायक एहा। भामिनि एहि में नहिं संदेहा
मुनि शांडिल्य केरि यह वानी। द्विज वनिता सुनि अति हर्षानी
उभय कुमार सहित अनुरागी। पुनि २ मुनि वर के पद लागी ॥
बडे भाग तव दर्शन भयेऊ ॥ मधु प्रसाद हमरे दुख गयेऊ
आजु कृतारथ में जग माहीं। विनती सुनहु एक मोहि पाहीं
ये द्वौ बालक शरण तुम्हारे। तुम इनके गुरु जग उजिआरे

दो· ॥ शुचि व्रत संज्ञक मम तनय धर्म गुप्त नृप बाल
हम तीनों तव चरन के किंकर परम दयाल २२

घोर दरिद्र सिंधु मुनि नाथा। बूडि रहे हम परम अनाथा।
मुनि वर हमहिं करहु उद्धारा। दर्शा बहु दुख सागर पारा
शरणागत लखि के मुनिराया। आस प्रवास कीन्ह करि दाया
मधुर सुधा सम वचन सुनाई। द्वौ बालक निज ढिग बैठाई ॥
शिव आराधन विधि दर्शाई। परम मंत्र पुनि दियो सुनाई
एहि प्रकार ते मुनि उपदेशा। तीनहुं निज शिर राखि निदेशा

मुनि वर चरन शीश तिन नाये। शंभु धामते निज गृह आये
मुनि उपदेश परम हित जाना। तिहि दिन ते द्वौ तनय सुजाना
प्रति प्रदोष शिव पूजा करहीं। शिव को भजन सुखद अनुसरहीं
एहि प्रकार हरभजत सप्रीते। सुख सों चारि मास जब बीते

दो॰॥ नृपसुत विन अस्नान हित सरित तट विप्र कुमार
गयो एक दिन तहँ कियो लीला सहित प्रचार २३
सरित तट निर्झर घात सों फूटो परिखा बंध ॥२॥
मानहु द्विज सुत विभव को कीन्हो शंभु निबंध २४

तहँ एक निधि वट वड वारा॥ चमकि रह्यो द्विज तनय निहारा
ताहि देखि अति कौतुक भयेऊ। तुरत हि तासु निकट चलि गयेऊ
जाना शंभु कृपा करि दीन्हा॥ प्रमुदित हृदय यत्न करि लीन्हा
सहसा सरित तट सों गृह आयो। अति बल करि मंदिर पहुँचायो
अति संभ्रम मन जननि बोलाई। तेहि देखा सब कथा सुनाई॥
शिव प्रसाद निधि मिष हम पायो। शंकर करुनानिधि दर्शायो
द्विज वनिता मन विस्मय पाई। नृपसुत बोलि लियो हर्षाई
शिव पूजा फल मानि सयानी। दूनहु सन बोली मृदु वानी॥
मम वानी गौरव मन धरहू॥ निधि के सम विभाग दुइ करहू
दूनहु लेहु सुने वर वयना॥ सुखी भयो द्विज सुत पुन अयना

दो॰ नृपसुत मन शिव भजन की वाढी अधिक प्रतीति
जननी सन बोलत भयो वानी मधुर सप्रीति २५॥

तव सुत के सुकृत फल एहा। पायो निधि घर नहिं संदेहा
मैं न चहौं एहि धन कर भागा। भोगहु जासु सुकृत फल लागा
जासु कृपा निधि घर एहि पाया। सो हम हूं पर करिहै दाया॥
एहि विधि पूजत तिन्ह हि सप्रीती। प्रमुदित एक वर्ष गयो बीती

एकसमय ह्वै गये वन माहीं । जहँ वसंत शोभा मिति नाहीं
मन कौतुक ते युगल कुमारा ॥ देखहि वन शोभा विस्तारा ॥
वन विहरत जव गे कुछ दूरी । तहं गंधर्व सुता गण भूरी ॥
सव सुंदरि तहँ क्रीड़ा करहीं । प्रमुदित वन विहार अनुसरहीं
तिन्हहि देखि द्विज तनय सयाना । न्रप नंदन सन कह्यौ सुजाना
उचित न आगे गमन हमारा । वहु अवला गन करहि विहारा
जे वुध विमला शय जग माहीं । पर नारी ढिग ते नहि जाहीं ॥
म्रग नयनी वहु छल वल करहीं । धन यौवन दुर्मद उर धरहीं
वचन चातुरी चित हरि लेही ॥ द्रगन चाप मोहित करि देहीं

दो॰ ॥ ताहि ते देखत परि हरै जायन तीर सुजान ॥२५
तिन सो भाषण नहि करै जो चाहै कल्यान ॥२६॥

जो निज धर्म परायण होई ॥ पर तिय तीर जाय नहि सोई
तजे दूरि अवला गन देखी ॥ ब्रह्मचारि व्रत निरति विशेखी
तेहि कारन म्रग नयन विहारा । नहि देखा चहौ राजकुमारा
एह कहि सो शैवि प्रकुमारा । दूरि रहा निज धर्म विचारा
न्रप किशोर कौतुक उर माहीं । गाय केल मानी भय नाहीं
तिन सव की सिरदार सयानी । न्रप किशोर देखत हर्षानी
निज मन लागी करन विचारा । कासु तनय एह परम उदारा
सव अंग सुंदर वयस युवाना । मत्त गयंद गमन गुन वाना ॥

दो॰ ॥ लावण्यामृत जलधि एह लीला लोल विशाल
लोचन अरु विहसन मधुर पेशल परम रसाल २७

म्रदन समान रूप कुमारा ॥ तन शुभ लक्षण परम उदारा
दूरिहि ते देखी वहु शोभा ॥ अति अचरज व्यापा मन लोभा
निज सखि अन दिशि देखि वहोरी ॥ वानी नारि चरित रस वोरी ॥

कहन लगी मम आयु समानी । एहि वन में सब जांय सयानी
चंपक पुन्नाग बकुल सुहाये । तरु अशोक फूले मन भाये ॥
कुसुम राशि संचय करि लावो । मम समीप सब मिलि पुनि आवो
मैं हूं जो तव संग सिधावो ॥ तव वन भ्रमन केर श्रम पावो
तिहि ते तुम्हरे संग न ह्विजैहों ॥ एही ठौर बैठे सुख पैहों ॥ ३ ॥
सुनि बानी सब सखी सयानी । लेन प्रसून गईं हर्षानी ॥
नृप किशोर दिशि दृष्टि लगाई । सो तहं बैठि गई सचु पाई ॥
नव योवन मद रूप अपारा । सुंदर सुभग अंग सुकुमारा

दो॰ ॥ तिलोत्तमा के रूप को निंदक तासु स्वरूप ॥
नृप किशोर देखत भयो शोभा परम अनूप २८

अति कौतुक मन कहि नहिं जाई । लोचन फूल गये हर्षाई ॥
दैव योग मनसिज उर लाई । मदन बान पीडा सरसाई ॥
सो गंधर्व राज वर कन्या ॥ शोभा धाम शील गुन धन्या
नृप किशोर आयो ढिग जानी । वेग सहित उठि परम सयानी
पल्लव आसन दियो बिछाई । यथा योग पूज्यो हर्षाई ॥
रूप शील गुन अनुपम देखी । गाधी रज भा मोह विशेखी
कमें विकल मन देह सयानी । नृप सुत सों पूछी एह बानी
कौतुक कमल नयन मन भाये । एहि थल कौन देश ते आये
का सुत नृप मोहि कहहु बुझाई । प्रेम सहित एह गिरा सुनाई
नृप किशोर बोले एह बानी । हौं विदर्भ नृप तनय सयानी
मातु पिता परधाम सिधारे । रिपुगन लीन्हे देश हमारे
मैं विदेश में बसहुं सयानी । इत्यादिक निज चरित बखानी
पुनि तेहि सन पूछा मृदु बानी । का सुसुता तुम परम सयानी

दो॰ ॥ कौन काज केहि ध्यावहु कहो चहो कछु बात ॥

सो॰ मो सन वरनन करौ केहि हित पुलकित गात
सुवहु राजवर की द्रविक गंधर्वन को ईश॥२॥
अंशुमती तिनकी सुता जानहु मोहि महीश ३०

आवत तुम्हहि विलोकि सुजाना। त्यागी सखी सुनाय वहाना
तव संभाषण हित नरनाहा मम उर वाढा परम उछाहा
जेती गान कला जग माहीं॥ मोहि समान जानत कोउ नाहीं
मोर गान सुनि सब सुर नारी चकित होंहि अरु परम सुखारी
सकल कला जानति हौं नीकी जानि लेहु सवही के ही की॥
तुम्हरे हृदय की मैं जानी॥ राउर मन मो में रति मानी॥
तथा मोरि मति परम सुजाना उभय सख्य विरची भगवाना
अव आगे प्रभु है रखवारा नेह भेद नहि होहु हमारा॥

दो॰ एहि प्रकार कहि मृदु गिरा वर मुक्ता मणि हार
नृप सुत के कर में दियो निज कुच को शृंगार
सो॰ लै लीन्हो वर हार प्रेम मगन नरपति तनय
भा मन हर्ष अपार तेहि दुराय वोले वचन ३१

सत्य कही तुम परम सयानी तदपि हमारि सुनो एह वानी
विगत राज नहीं धन मम पासा मम ढिग केहि विधि तोर सुपासा
विद्यमान तव जनक सयानी॥ तिनकी आज्ञा विन मन मानी॥
किये चहौं स्वच्छंदाचारा॥ उचित होय नाहिं अस व्यवहारा
नृप सुत की यह सुनि वर वानी पुनि एहु वोली विहंसि सयानी
जैसी तव रुचि है नर नाहा॥ तैसोइ हूहै सकल उछाहा॥
एही ठौर तुम परौ सवेरे॥ आय देखिओ कौतुक मेरे॥
नाथ पधारहु निज गृह आजू॥ आयहु अवासि जानि वड काजू
नहिं कुतर्क करिओ मन माहीं मेरे वचन मृषा ये नाहीं॥२॥

एहिविधि काहि न्टपतनय सों निज सखि लई बोलाय ॥
गई भवन तब चलि भयो न्टप नंदन हर्षाय ३३ ॥

एहाविप्रसुत तहँ चलि आयो निज चरित्र सब ताहि सुनायो
पुनि दूनहू आये निज धामा ॥ जननी सुनि भई पूरन कामा
परसौं के दिन होत विहाना ॥ न्टपकिशोर द्विज तनय सुजाना
जेहि वन में पाहिले दिन आये दूनहू मिलि तेहि विपिनि सिधाये
देखा गंधर्व न को राजा ॥ तहँ निज तनया सहित विराजा
राजा तिन दूनहुँ कहँ देखी ॥ कीन्ही अभिनंदना विशेखी
पुनि सुंदर आसन वैठारे ॥ न्टपकिशोर सन वचन उचारे

दो॰ न्टपवालक सुनि काल्हि हम गये रहे कैलाश ॥
तहँ देखे गिरिजा सहित प्रभु त्रैलोक्य निवास ३४
शंकर करुना सिंधु मोहि लीन्हो निकट वोलाय
सब देवन के सुनत एह दीन्हो वचन सुनाय ३५

धर्मगुप्त है न्टपति किशोरा ॥ तासु पिता रिपुगन वर जोरा
रन में मारि राज लै लीन्हा ॥ तासु वंधु जन कहँ दुख दीन्हा
धर्मगुप्त हत न्टप सिंहासन वंधु विगत है परम अकिंचन
गुरु के वचन मानि मम पूजा ॥ सदा करै मन भाव न दूजा ॥
तासु प्रभाव पितर तेहि केरे ॥ मम पद पावत भे वहु तेरे ॥
तेहि की तुम अब करहु सहाया मारे जाहिं शत्रु समुदाया ॥
निज सिंहासन पाय सुजाना सुखी होहि सो करहु विधाना
एह आज्ञा शिर धारि गृह आये मम तनया तव मिलन सुनाये

दो॰ कीन्ही वहुतर विनय मम पुनि श्री शंभु नियोग
तुम्हहि देखि हर्षित भयो भलो वनो संयोग ३६

निज दुहिता सह एहि वन आयो सुखी भयो तव दर्शन पायो ॥

निज तनया तुमको में दीन्ही ॥ करिहों जो प्रभु आज्ञा कीन्ही

तव रिपु मारि तुम्हहिं नृप आसान। बैठि रहौं जिमि शिव अनुशासन

मम तनया सह भोग विलाशा जग में करि बहु सुयश प्रकाशा

दश सहस्र संवत बलवाना ॥ करिहो भूतल राज सुजाना ॥

पुनि पैहो शिव लोक निवासा ॥ एहि मम तनया सहित हुलासा

याही देह सहित नरनाहा ॥ सेवहिंगी तोहि सहित उछाहा

एहि प्रकार सब चरित सुनाये दुहिता पाणिग्रहण कराये ॥

रत्न भार निर्मल बहुतेरे ॥ दायज में उपकरण घनेरे ॥

दीन्हे बहु भूषण समुदाया ॥ कंचन भाजन वस्तु निकाया

दो॰ ॥ दश सहस्र गज श्याम हय दीन्हे नियुत सँवारि

पुनि सहस्र शुभ हेम रथ अर्पे मुनि मन हारि ॥२॥

सो॰ बहुरि दिव्य रथ एक अक्षय सायक तूण दुइ

दीन्हे अस्त्र अनेक हेम वर्म निर्भेद पुनि २८ ॥

धनुवर इंद्र चाप सम सोई ॥ शक्ति दीन्हि रिपु मर्दनि जोई ॥

सेवा हेतु सहस वर दासीं ॥ अति शोभित वपु इंदु प्रभासीं

बहु प्रकार धन अर्पन कीन्हा ॥ निज सेना पति को पुनि दीन्हा

निज गंधर्व सेन चतुरंगिनि रिपु दल भेक समूह भुअंगिनि

एहि प्रकार तिन सहित उछाहा समयोचित करि दीन विवाहा

नृपकुमार बर संपति पाई ॥ मन मानी जाया सुखदाई ॥

धन संपति अरु दल बहुतेरा पायो मन आनंद घनेरा ॥२॥

दो॰ ॥ गंधर्वन को नृपति तब करि वर को सत्कार ॥२५

चढ़ि विमान सुरपुर गयो हृदय प्रमोद अपार २९

धर्मगुप्त कर भयो विवाहा ॥ कहि न जाय तेहि मन उत्साहा

गंधर्वन की सेन सोहाई ॥२५ लै संग निज पुर पहुँचो जाई ॥

गंधर्वन को जो दल भारी ॥ ॥ तिन सब रिपु सेना संहारी ॥
दुर्मर्षण मारा रण माहीं ॥ रिपुगण शेष बचा कोउ नाहीं
पुनि कीन्हो निज नगर प्रवेशा बीतो मन संताप कलेशा ॥
तासु विजय लखि सब हर्षाने विप्र महाजन सचिव सयाने
राजतिलक को साज संवारी नृप आसन दीन्हो बैठारी ॥
लागो करन अकंटक राजू ॥ ॥ महा मुदित मन प्रजा समाजू
द्विज वनिता सोई प्रिय माता द्विज नंदन भा प्रीतम भ्राता
नृप गंधर्व सुता प्रिय रानी ॥ भै विदर्भ नगरी रजधानी ॥
धर्मगुप्त शिव कहं आराधी एहि विधि पाई राज अवाधी
शौनक मुनि और रहु जो कोई एहि प्रकार शंकर रत होई ॥
शिव प्रदोष पूजन अनुसारी अभिमत फल लहि होय सुखारी
जीवत पावहिं सब मनकामा अंत समय गिरिजापति धामा
एह प्रदोष व्रत पुन्य विधायक तेहि मैं शिव पूजा सुखदायक

सो॰ धर्म अर्थ अरु काम मुक्ति केर साधन परम ॥ ॥
शंभु भजन सुखधाम प्रति प्रदोष नित कीजिये ४०

जो सुनिहै अद्भुत एह गाथा ॥ अतिपावन अरु होहि सनाथा
जो प्रदोष व्रत करहि सुजाना विधि सन पूजहिं गोभगवाना
सावधान एह चरित वहोरी सुनिहै शिव पद प्रीति न थोरी
नहि दरिद्र अरु दुख निअराई ज्ञान संपदा की अधिकाई
ह्वै है अंत समय शिवधामा सब प्रकार नर पूरन कामा
अतिदुर्लभ एह मनुज शरीरा पाय भजैं शिव ते मति धीरा
परम धन्य तिन सम नाहिं कोई है त्रिलोक विजयी नरसाई ॥

दो॰ ॥ तासु पद्म पद रेणु कन जहं २ परैं सुजान ॥ ॥
त्रिभुअन पावन होय सब तेहि सम धन्य न आन ४१

इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम-कृष्ण भारती शिष्य माधवानंदभारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे प्रदोषमहिमा प्रकाशनपरः सप्तमो विश्रामः ॥ ७ ॥

श्री गणेशाय नमः श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

सूत कह्यो शौनक मुनिराई ॥ सुनहु शंभु गाथा सुखदाई
नित्य निरंजन आनंद रूपा निर्विकल्प चैतन्य अनूपा ॥
शांत निरामय शिव अविनाशी ॥ आदि अंत निर्गत सुख राशी
ऐसी शंभु तत्त्व जिन जानी ॥ ते शिव रूप होंहि विज्ञानी
जे विरक्त सद काम विहाई ॥ कर्म वासना सकल नशाई
भक्ति अहेतु किर लगत माना परा भक्ति ते करहिं सुजाना
धीर शंभु रत जे जग माहीं ॥ मुक्त होंहि कछु संशय नाहीं
जे पुनि भोग लालसा धारी ॥ अरु सकाम सेवहिं त्रिपुरारी

सो॰ तेउ शंभु प्रसाद विषयासक्त न होंहि पुनि ॥ १ ॥
प्रमुदित विगत विषाद भोगहिं अभिमत विषय सुख

तेहि कारन जो नर तन धारी ॥ जेहि केहि भाव भजे त्रिपुरारी
तासु विनाश कबहु नहिं होई पावै सुखद परम गति सोई
जे चाहैं शुभ गति नर नारी ॥ सकहिं न त्यागि विषय सुख भारी
कर्म सहित पूजें मद नारी ॥ भोग अंत पुनि होंहि सुखारी ॥
बहुधा विषय तजो नहिं जाई तेहि कारन एह सुगम उपाई
कर्ममई पूजा सुखदाई ॥ कामधेनु सम परम सोहाई
मायामय संसार असारा ॥ जो चाहैं तहं सुख विस्तारा ॥
अंतकाल पुनि मुक्ति सोहाई जिन कौ है एह विधि सुखदाई

दो॰ ॥ शिव पूजा एहि लोक में अभिमत फल दातारि ॥
स्वर्ग मुक्ति की हेतु पुनि मुदित होंहि त्रिपुरारि २ ॥

सोमवार पूजन सुख दाई ॥ शुभग प्रदोषादिक गुन पाई
केवल चंद्रवार पुनि पाई ॥ आराधहिं शंकर मन लाई ॥
तिन्हहिं न कछु दुर्लभ मुनिराया। इहां उहां सब सुख समुदाया
चंद्र दिवस व्रत करहि जो कोई निज इंद्री जीते नर सोई ॥
प्रथमहि करि मज्जन आचारा करि सब संध्यादिक व्यवहारा
अथवा करि लौकिक उपचारा पूजहि विधि सों शंभु उदारा ॥
वट्गरही कन्या कि न होई ॥ सधवा विधवा पुनि जो कोई
तेहि दिन शिव पूजे मन लाई होय सुखी अभिमित वर पाई

दो॰ ॥ श्रोता जन को मन हरन इहां सुनहु इतिहास
मुक्ति लहैं शिव भक्ति को सुनतहि होहि प्रकाश ३

रहा आरयावर्त नरेशा धर्म साहित पाले निज देशा
नाम चित्र वर्मा नरपाला दुष्टन को यम सरिस कराला
धर्म सेतु कर पालनहारा ॥ शरणागत जन को रखवारा
उत्पथ गामिन कर सिख दाता। सब यज्ञन को परम विधाता
जग में सकल पुन्य तेहि कीन्ही। सकल संपदा सब कहं दीन्ही
सकल शत्रु जीते नरनाहा ॥ शिव माधव पद प्रेम निवाहा
बहु रानी अनुकूल सयानी ॥ पुत्र भये तिन में बलखानी ॥
चाह करत बीता चिरकाला ॥ लही एक दुहिता नरपाला ॥

दो॰ ॥ हिमि गिरि जेहि विधि गिरिसुता पाय लह्यौ अति मोद
पूरन मन नरदेव तिमि अतिशय लह्यो प्रमोद ४ ॥

एक बार नरपाल बोलाये ॥ द्विज दैवज्ञ सभा महं आये ॥
जातक लक्षण जाननहारे ॥ नृपति पूजिये वचन उचारे
जन्म घड़ी लखि ज्ञाननिधाना दुहिता लक्षण कहहु सुजाना
तिन महं एक रहा अति ज्ञानी सो भूसुर बोला एह बानी ॥

सीमंतिनी नाम एहि केरा ॥	दमयंती सम रूप घनेरा ॥
उमा सरिस हू है पति प्यारी ॥	सकल कला शारद अनुहारी
देव जननि सम प्रज्ञा घनेरे	जलधि सुता सम गुन बहुतेरे
पतिव्रत में जानुकी समाना	तरणी प्रभा सम तेज निधाना
निशि नायक चंदनि छवि जैसी	नृपतव सुता मनोहर तैसी ॥

दो॰ ॥ अयुत वर्ष लौं पति सहित करि है भोग विनोद
अष्ट पुत्र उत्पन्न करि लहि है परम प्रमोद ५ ॥

एहि प्रकार जब द्विजवर कहेउ	नृपतेहि पूजि बहुत धन दयेउ
द्विज वचनामृत सुनि नरनाहा	अति प्रसन्न मन परम उछाहा
औरहु एक विप्र मति धीरा ॥	बोला निर्भय वचन गंभीरा
चौदह संवत की जब हूहै ॥	एह तनया विधवा हू जैहै ॥
वज्र सार सुनि निष्ठुर वानी	नृपति भयो चिंता की खानी
दुइ घटिका अति व्याकुल रहेउ	कुछु उत्तर नरपति नहिं कहेउ
विप्र भक्त नृप धर्म धुरीणा ॥	विदा किये सब विप्र प्रवीणा
सो हू है जो ईश्वर चाहा ॥	एह निश्चय कीन्हो नर नाहा
नृप तनया शिशु वयस विहाई	क्रमसें वढी वंधु सुखदाई ॥
निज सखि अनन मुख सों सुनि पायो ॥	विधवा भाव विप्रवर गायो
अति चिंता व्याकुल मन वाला	भा निर्वेद परम तेहि काला
याज्ञवल्क्य मुनिवर विज्ञानी	मैत्रेयी मुनि नारि सयानी ॥
तेहि की शरण गही नृप वाला	विनय कीन्ह मन परम विहाला
मात मोहि शरणागत जानी	भय व्याकुल चिंता की खानी

सो॰ ॥ वरनो कछु उपाय जो सौभाग्य वढावही ॥
मम चिंता दुख जाय असी करुना मातु करु ६

निज शरणागत नृपति कुमारी	देखि कह्यो मुनि नायक नारी

शिवासहित गिरिजापति केरी। शरण जाहु वानी गहि मेरी॥
सोमवार व्रत करहु कुमारी। पूजा गिरिजासह त्रिपुरारी॥
करि मज्जन धरि निर्मल वासा। निश्चल मति मन परम हुलासा॥
संयम मौन सहित हर्षित मन। यथा विधान करहु शिवपूजन॥
पुनि द्विजवर भोजन करवाई। शिवहि प्रसन्न करै मन लाई॥

छं॰॥श्री शंभु के अभिषेक ते सब पाप क्षय मन पावनो॥
पुनि पीठ पूजा सों मिलै सम्राज सुख मन भावनो॥ ३॥
जो दिव्य चंदन माल अक्षत प्रेम सहित चढावही॥
सौभाग्य श्रोर अनंत सुख नर नारि अभिमत पावही॥

दो॰ धूप दिये सौभाग्य सुख दीपदान तन कांति॥ २॥
दियें बहुरि नैवेद्य के भोग मिलै बहु भांति॥ ४॥

जो शंकर पर पान चढावै॥ सो मनमानी दौलति पावै॥
भक्ति सहित जो करहिं प्रनामा। चारिहु फल पावैं मन कामा॥
अणिमादिक सब सिद्धि सोहाई। लहै जो जाय करै मन लाई॥
होम करै शंकर हित जोई॥ सकल समृद्धि पाव नर सोई॥
सब देवनि की तुष्टि सयानी॥ संयमि भोजन वेद बखानी॥
एहि प्रकार निश्चय उर आनी। शिवा शंभु कहं भजहु सयानी॥
कैसिहु दारुन विपति अपारा। तरि पैहौ संपति विस्तारा॥
अति कलेश भय दायक जोई। महा घोर कैसहु किन होई॥
पाय उमापति भजन प्रसादा। मिटिजैहैं भय खेद विखादा॥

दो॰॥एहि प्रकार सीमंतिनिहि मुनि नायक बरवाम॥
शंभु भजन उपदेश करि गमन कियो निज धाम ८॥
नृप तनया जेहि विधि सुनो शंकर भजन प्रकार।
तेहि विधि लागी करन मन में प्रेम अपार॥ ९॥

राजानल निषधेश सुजाना॥ जिनकर यश जग में सब जाना॥
प्रिया तासु उत्तम गुन खानी॥ लोकविदित दमयंती रानी॥
इंद्रसेन भयो तासु कुमारा॥ तेहि को सुयश लोक उजियारा॥
चंद्रांगद नामा गुनवाना॥ प्रियदर्शन भयो चंद्र समाना॥
सीमंतिनी पिता सुनि पायो॥ मान सहित निज गेह बोलायो॥
तेहि संग सीमंतिनी बिवाहा॥ करि दीनो न्रप सहित उछाहा॥
जुरी बहुत गुरु विप्र समाजा॥ आये बहु देशन के राजा॥
स्वसुर गेह महं पुनि कछु मासा॥ न्रप तनया पति कीन निवासा॥
यमुना उतरन हेतु सयाना॥ लीला सहित परम गुनवाना॥

दो॰॥ न्रपजा माता एक दिन यमुना तट पर जाय॥
निज मित्रन सह मुदित मन नाव चढेहु हर्षाय॥१०॥

भ्रमर परी तरनी सो जाई॥ दैवयोग नहिं चलो उपाई॥
केवट सह बूडी जब तरनी॥ तेहि छिन को दुख जाइ न बरनी॥
दुहु तट पर ठाढे नर नारी॥ हाय२ तिन सबन पुकारी॥
सेनाजन कर विपुल बिलापा॥ दुख मय शब्द व्योम लों व्यापा॥
नौका महं जे लोग सवारा॥ कोई बूडि गये जल धारा॥
काहू को जलचर गे खाई॥ कोउ तिन महं करनहिं दर्शाई॥
सुनि राह खबरि नदी तट गयेउ पराधरनि व्याकुल न्रप भयेउ
रानिन एह चरचा सुनि पाई॥ भई बिकल तन दशा गंवाई॥
सीमंतिनी हृदय दुख भारी॥ भै मूर्छित तन दशा बिसारी
मंत्री उपरोहित याचक जन करहिं बिलाप शोक अतिशय मन
इंद्रसेन न्रप जब सुनि पायो॥ प्रियन सहित अति दुख उर छायो
तिनके सचिव प्रजा सब कोई तथा देश बासी नर जोई॥
बालक बनिता वृद्ध सयाने॥ अति बिह्वल नहिं जांय बखाने

काहू शिर काहू उर हनेऊ ॥ हा नृप तनय कहाँ तुम गयेउ ॥
द्वौ नृप को अति विकल निहारी उभय नगर वासिन दुख भारी
गुरु वृद्धन बहु विधि समुझायो सीमंतिनी पिता गृह आयो ॥
बहु प्रकार तनया समुझाई ॥ सब की उचित क्रिया करवाई
सती होन की अति अभिलाषा नृप दुहिता उर कियो प्रकाशा ॥
सुता सनेह अधिक मन माहीं सती होन दीन्ही नृप नाहीं ॥
विधवा भै नरनाह कुमारी ॥ यद्यपि प्रिय वियोग दुख भारी
तदपि तजौ नहिं शिव आराधन सोमवार व्रत कर निश्चय मन
जन्म समय जेहि विधि द्विज कहेउ वर्ष चतुर्दश में सब भयेउ ॥
यद्यपि अति दारुन दुख पायो श्री शंकर व्रत को न गँवायो ॥
श्री शिव को ध्यावत अति प्रीती गये तीनि संवत तेहि बीती ॥
इंद्रसेन उर शोक समाना ॥ भयो विकल उन्मत्त समाना ॥
देखि दशा रिपुगन हर्षाई ॥ सपत्नीक बाँधा तेहि जाई ॥
कारागृह में तुरत पठायो ॥ बिनश्रम नृप सिंहासन पायो

दो॰ ॥ चंद्रांगद को चरित अब सुनहु मुनीश सुजान ॥
जब नौका बूडत भई तब नृप सुत बलवान ॥ २ ॥
सो॰ ॥ चलो गयो बहु दूरि तरे तरे सरि वारि के ॥ २ ॥
नाग कामिनी भूरि नृप सुत को देखत भई १२ ॥

जल भीतर ते करहिं विहारा ॥ देखि भयो आश्चर्य अपारा
नृपसुत को नागन की बाला ॥ नाग भवन लै गईं पताला ॥
नाग राज तक्षक पुर आयो ॥ अति अद्भुत रमणीय सोहायो
मानहु सुरपति भवन सँवारा मणिगण को फैलो उजियारा ॥
हीरक मणि वैडूर्य बनाये ॥ विद्रुम के प्रासाद सोहाये ॥
गोपुर माणिक मणि छवि देहीं मुक्तादाम चोरि चित लेहीं ॥

हेम कपाट द्वार अति सुंदर॥ हिमकर मणि अस्थली मनोहर
शत सहस्र मणि दीप उजागर उरग नाथ को धाम सुभगतर
तहाँ जाय तक्षक तेहि देखा॥ वल प्रताप अरु तेज विशेखा
दिव्य वसन भूषण छवि धारी कानन में कुंडल मनहारी॥
रत्न किरीट परम द्युति कारी॥ चंदन चर्चित तन छवि भारी

सो॰॥ फण मणि तेज अपार चित्र विभूषण तन धरें॥
पन्नग सहस उदार कर जोरें सेवा करें १३८॥

दो॰॥ गति विलास शोभा परम यौवन रूप अपार॥
पन्नगेश चहुं दिशि खडी पन्नग सुता हजार ४५

कालानल सम अति दुर्द्धर्षा॥ दिनमणि सरिस तेज उत्कर्षा
सभा मांहि नृप तनय निहारा॥ चख सें जाय व तेज संभारा॥
नृप किशोर अति धीरज धामा पन्नग पति कहँ कीन्ह प्रनामा
तक्षक देखि नरेश कुमारा॥ रूप तेज वल वुद्धि अपारा॥
पन्नग नारिन सें एह कहेऊ को एह कहं सो आवन भयेउ
नाथ न जानाहिं कुल अरु धामू नाहिं इन कर पूछा हम नामू
यमुना जल भीतर हम पायो तव समीप इन को पहुंचायो
पन्नेश नृप सुत दिशि देखी॥ एह पूछा करि प्रीति विशेखी
को तुम कौन देश में रहहू॥ किमि आये मो सन सव कहहू
वसुधा मांहि निषध वर देशा नल संज्ञा तहँ भयो नरेशा॥
दमयंती जिन की पटरानी॥ पावन यश नहिं जाय वखानी
इंद्रसेन है तासु कुमारा॥ तेहि कर प्रभु मैं तनय पिआरा
चंद्रांगद है प्रभु मम नामा॥ अव ही रह्यौ श्वसुर के धामा
विहरत श्री यमुना वर वारी॥ मग्न भई तहँ तरनि हमारी
पन्नग तिअन यहां पहुंचायो वडे भाग तव दर्शन पायो॥

सो॰ निज कुल सह उरगेश आजु धन्य पुनि धन्य में ॥
दया विलोकि विशेष कीन्ही मम संभावना २५

दो॰ ॥ परम चतुरतामय वचन मुनि मन आनंद पाय
उत्कंठा युत उरगपति पुनि वोलो हर्षाय २६ ॥

भो नृप नंदन जनि कुछ डरहू अपने मन धीरज तुम धरहू ॥
सव देवन में को अस देवा ॥ जेहि की सदा करहु तुम सेवा ॥
पन्नगेश को वचन सोहावा सुनि वोला उत्तर मन भावा ॥
विश्व केर आतम है जोई ॥ महा देव सम देवन कोई ॥ २ ॥
उमा नाथ शंकर करुनाकर तिन को हम पूजहिं निशिवासर
जिन के तेज अंश लव लेशा ॥ रजगुन सों विधि भे उरगेशा ॥
ते जग की रचना विस्तरहीं ॥ तिन शिव की पूजा हम करहीं
जासु सतोगुन अंश उदारा ॥ विस्नु सनातन तेज अपारा
विश्व भरन पोषन हरि करहीं तासु समर्चन हम अनुसरहीं
जासु तमोगुन अंश प्रधाना ॥ भये रुद्र कालाग्नि सुजाना ॥
प्रलय समय जारहिं संसारा तिन्हहि भजें हम सह परिवारा
कारन हूं कर कारन सोई ॥ तिमि विधि केर विधाता जोई
तेजन में जो तेज अपारा ॥ २ ॥ सो शिव परगति रूप हमारा

दो॰ ॥ जो महि जल में अग्नि में जो समीर नभ मांहिं ॥
वास करै जगदात्मा जेहि सेवाय कुछु नाहिं २७

सो गौरीपति शंभु महेशा ॥ हम पूजत हैं नित उरगेशा ॥
साखी सव भूतन को सोई ॥ सव के हृदय विराजहि जोई
जेहि की इच्छा के आधीना ॥ सकल लोक नित रहहिं प्रवीना
अंतर्यामि निरंजन जोई ॥ हम पूजहि शिव शंकर सोई
सकल आदि जो पुरुष पुराना माया पति जग पति भगवाना

मायागुन ते सो बहु रूपा ॥ बरनौ जाय अनादि अनूपा
कोइ चैतन्य कोउ बरनन करहीं ॥ कोउ तुरीय तेहि कोउ उचरहीं
कोइ कूटस्थ कहहिं उरगेशा गति हमारि सो नाथ महेशा

छं॰ ॥ निर्लेप औरु अचिंत्य कहि जेहि तत्व को श्रुति ध्यावहीं
जेहि देहधारिन की गिरा मन जानि कबहुं न पावहीं ॥
है जासु धाम दुरंत अनुभव गम्य वेद बतावहीं ॥ १ ॥
तेहि परम शिवजी को सदा हम पूजि ध्यान लगावहीं १
जेहि नाथ केर प्रसाद लहजे संतजन कछु पावहीं ॥ २ ॥
नहिं चहहिं सुरपति लोक नहिं विधि लोक मन तर लावहीं
ते कर्म बंधन कालचक्र विमुक्त है सुख सों रहैं ॥ २ ॥ २ ॥
निर्भय फिरैं संसार में सो शंभु हमरी गति अहैं २ ॥ २ ॥
जिन शंभु को सुमिरन सदा सब पाप रोग नशावहीं ॥
पुष्कर सहु जिनको सुमिरि अपने सकल पाप गंवावहीं
पुनि जासु रूप समस्त श्रुतिगन सर्वदा खोजत फिरैं
तिन शंभु के हित सर्वदा हम उरगपति पूजन करैं ॥ ३ ॥
सुरसरित जिनके शीश में विश्राम अति सुख सों गह्यो
जगदंबिका जेहि पाय वर त्रैलोक में अति यश लह्यो ॥
भे जासु कुंडल वासुकि अरु आप है भुजगाधि पति ॥
सो चंद्रमौलि महेश शंकर अहहिं नाथ हमारि गति ४
जय निगम चूड़ा शिरन पर पदपद्म जासु विराजही
जय योगिवर के हृदय में नित जासु मूरति राजही ॥
जय सकल तत्व उलंघि वर्तिनि विमल कीरति जासु की
जय जय विजित गुण सर्ग प्रभु हम करहिं पूजा तासु की ५
सो॰ ॥ एहि विधि मुनिवर वयन तक्षक परम प्रसन्न मन

उरगाधिप गुन अयन शंभु भक्ति पूरन भयो १८॥

नृपकिशोर पर अति हर्षाई उरग नाथ एह गिरा सुनाई॥
हौं प्रसन्न नरपाल कुमारा॥ होय परम कल्याण तुम्हारा
यद्यपि वालक वयसि तुम्हारी जानहु परम तत्त्व त्रिपुरारी॥
दिव्य रत्न मय एह वर लोका इहाँ वसत नहिं कछु दुख शोका
चारुविलोचनि ये वर नारी॥ रूप शील लीला गुन भारी॥
ये कल्पद्रुम के तरु भारी॥ वापी रुचिर सुधारस धारी॥
घोर मृत्यु को कछु भय नाहीं रोग जरा नहिं एहि पुर माहीं
इहाँ रहहु प्रिय राजकुमारा करहु यथारुचि भोग विहारा
नागराज की सुनि एह वानी नृपकिशोर जोरे युग पानी
परम उदार बुद्धि नरपाला प्रीति सहित एह वचन रसाला
वोला सुनु कृपालु भुजगेशा मोर पिता जो है निषधेशा॥
तासु एक मैं प्राण अधारा॥ नहिं तिन के कोउ और कुमारा

दो॰ मेरो पुनि ह्वै गयो है भुजगाधीश विवाह॥ ९९॥
मम गृह एनी नित शंकरहि पूजहि सहित उछाह १९

हम कहँ ते सव मृत अनुमानी ह्वै हैं तिन के मन दुख खानी
प्राण वियोग भयो तिन केरा कैजीवहिं सहि दुख वहु तेरा
एहि ते मम निवास वहु काला इहाँ उचित नहिं दीन दयाला
ऐसी कृपा करहु मोहि पाहीं पहुँचाओ धरती तल माहीं
नृपकिशोर को वचन सुहायो उरगाधिप के मन अति भायो
करवायो नृप सुत कर मज्जन कल्पवृक्ष संभव पुनि भोजन
गंध वसन भूषण अभिरामा विविधि भोग सुंदर सुख धामा
एहि प्रकार करि वहु पहुनाई उरग नाथ एह गिरा सुनाई॥

दो॰॥ जव जव करिहो मोरि सुधि पैहो दरश हमार

पुनि दीन्हो काम गतुरग सो जो सकल प्रकार २०
नानादीप समुद्र महँ अरु सब लोकन माहिं ॥
जेहि की गति सब ठौर पुनि कहूं रोक कछु नाहिं २१

दिव्या भूषन वसन घनेरे ॥	दीन्हे रत्न भार बहुतेरे ॥
एक संग दीन्हो भुजगेश्वर ॥	तिन सब को वाहक रजनीचर
दियो भुजगपति सुत महाराजा	नृपसुत के सहाय के काजा ॥
विदा कियो नरदेव कुमारा	एह प्रकार सब साज संवारा
वाजी निष्भर रुचिर सहाई	नृपकिशोर बहुतर धन पाई
तिन सह चलि भयो राजकुमारा	कामगतुरग भयो असवारा
यमुना जल पर निकरो जाई	दुइ घरिका लागन नहिं पाई
यमुना तट पर करहि प्रचारा	अश्वारूढ नरेश कुमारा ॥ २१ ॥

दो॰ तेहि अवसर सीमंतिनी सुमिरत मन वृषकेतु
सखिन सहित आवत भई यमुना मज्जन हेतु २२
सो॰ ॥ देखा करत विहार नृपसुत को सीमंतिनी ॥ २॥
घोड़े पर असवार संग निष्भर पन्नग तनय २३

पहिलो सो नहिं राजकुमारा ॥	दिव्य वसन भूषण शृंगारा
दिव्य माल अवतंश मनोहर	देवी सकल साज सब सुंदर
दिव्य गंध तन में मन भाई ॥	सौ योजन सुरभी रहि छाई
देखा सकल अलौकिक वेषा ॥	सो विस्मित मन भई विशेषा
नृपतनया उन्मत्त समाना ॥	भई मनहु जड जनु भयमाना
एकटक चितवहि नेह विशेखा	तथा नृपति बालक तेहि देखा
अति कृशगात महीप कुमारी	मन में परम शोक दुखभारी
केशपाश रचना भई नाहीं ॥	नहिं अंजन द्वौ लोचन माहीं
ग्रीवा कंठाभरण विहीना ॥	अंगराग वर्जित अति दीना

प्रथम लखी कबहूं एह नारी ॥ नृपकिशोर निज हृदय विचारी

दो॰ तब उतरो निज तुरग ते बैठो यमुना तीर ॥ २२ ॥
निज समीप बैठारि तेहि बोलो गिरा गँभीर ॥

सो॰ ॥ कोहौ केहि की नारि केहि की कन्या मोहि कहो
हे भामिनि सुकुमारि किमि पायो दुख बालपन २५

एहि प्रकार नरदेव कुमारा ॥ नेह भरो जब बचन उचारा ॥
हृदय लाज उपजी बहु तेरी लोचन जल की धार घनेरी ॥
तासु सखी बोली एह बानी ॥ चित्र वर्म नृप सुता सयानी
सीमंतिनि संज्ञा जग जानी चंद्रांगद नृप की एह रानी ॥
दैव योग सो राज कुमारा ॥ बूडि गयो यमुना मँह धारा ॥
विधवा तेहि दिन ते एह रानी अति दुख पुष्प सरिस कुमिलानी
तीनि वर्ष बीते एहि भांती ॥ परम शोक व्याकुल दिन राती
आजु चंद्र वासर व्रत पाई ॥ यमुना मज्जन हित एहि आई
निषध देश को जो नर पाला ॥ पुत्र दशा सुनि शोक विहाला
रिपुगन तासु राज लै लीन्हा माहिषी सह वंदी करि दीन्हा
यद्यपि पायो दुः ख अपारा ताहू पर एह शुभ आचारा ॥

दो॰ ॥ सोमवार के दिन करै उमा महेश्वर ध्यान ॥
भक्ति सहित पूजहि सदा श्री शंकर भगवान २६

सो॰ ॥ दीन्हो सकल सुनाय सखी द्वार अपनो चरित
पुनि तेहि को रुष पाय नृप दुहिता बोलत भई २७

कोतुम सुंदर मदन समाना ॥ सुर नर हो किमु सिद्ध सुजाना
किमु किंनर गंधर्व कुमारा ॥ कौन हेतु पुनि चरित हमारा
पूछहु नेह सहित केहि काजा ॥ का मोहि जानत हो महराजा ॥
अथवा मोहि कतहुं तुम देखा तुम्हहि देखि मोहि नेह विशेषा

अथम कहुं भे जनु दरश तुम्हारे भान होइ जिमि स्वजन हमारे
सांची कहौ सकल मोहि पाहीं सत्य सार सज्जन महिमा हीं
एतनौ कहि नरदेव कुमारी ॥ करन लगी रोदन अति भारी
गद्गद कंठ न कुछु कहि आवा ॥ पति वियोग सुधि कर दुख पावा
मोह विकल मूर्छित तन भयेऊ सखी जनन तेहि को गहि लयेऊ
सुना सकल प्यारी दुख कारन न्रप सुत परम विकल भा निज मन
रहा मुहूरत भरि अरु गाई ॥ न्रप सुत पुनि निज हृदय दृढाई
वचन निपुन बहु भांति सुनाई विविधि रीति प्यारी समुझाई

दो॰ ॥ हैं देवन की जाति में सिद्ध हमारो नाम ॥ २२ ॥ २ ॥
काम गहैं सब लोक में फिरैं न्रपति वर वाम २८

सीमंतिनी सुनी एह वानी ॥ निज मन में शंका एह आनी
जनि कहुं एहु मम कर गहि लेही पुलकि गात कांपी सब देही
तव अतिशय समीप तेहि आई प्रिया श्रवण महँ दीन सुनाई
काहू लोक विषे वर वयनी ॥ हम देखा तव नाह सुनयनी
तव व्रत नेम देखि हर्षाई ॥ वेगि मिलहिंगे तव सुखदाई
भामिनि वीते दिन दुइ चारी हरि लैहें तेरो दुख भारी ॥
आयो कहन हेतु सुधि एहा ॥ नहि लावो निज मन संदेहा ॥
हौं तव पति को सखा सयानी ॥ मोर कथन मिथ्या नहिं रानी
शिव चरनन की सपथ सयानी करहु मानु मेरी फुर वानी ॥
जो लौ मिलै न नाथ तुम्हारा ॥ प्रगट करौ जनि वचन हमारा

दो॰ ॥ सुधा धार सौं ते अधिक जवहि सुने वर वयन ॥
संभ्रम वश न्रप सुता के घूमि उठे द्वौ नयन २९ ॥

बहुरि चकोर सरस अनुरागी तासु चंद्र मुख निरखन लागी
प्रेम बंध वर्णित वर वयना ॥ चतुराई पूरन रस अयना ॥

लीलापुनविहसनिभ्रन्ति सुंदर
चितवन मधुरापांग मनोहर
निज कर पर्श जनित छवि छायो
पुलकावलि मय गात सोहायो
अंगचिन्ह जे प्रथम निहारे ॥
भावरणादि पाये ते सारे ॥
वय प्रमाण पुनि हृदय विचारी
वर्ण वेष सोइ सकल निहारी
एहि प्रकार करि बहु अनुमाना
एह निश्चय अपने मन आना
हैहै एहु भर्त्ता मम सोई ॥
एह विहाय दूसर नहिं कोई

दो॰॥ जेहि कारन मेरो हृदय एहि में रह्यो समाय ॥
प्रेम भरो आसक्त है एहि सों नहिं विलगाय ॥

बहुरि तर्क मन उठी अपारा
एहि विधि लागी करन विचारा
मम पति जो परलोक सिधायो
सो स्वरूप धरि केहि विधि आयो
मोसम दुर्भागिनि नहिं कोई
नष्ट नाथ दर्शन किमि होई
हे विधि मैं देखति हौं जोई ॥
स्वप्न होय अथवा नहिं होई
एहु भ्रम अथवा भ्रम नहि होई
अथवा एहु कपटी नर कोई ॥
अथवा कोउ गंधर्व सुजाना ॥
यक्ष किधौं एहु रूप निधाना
अथवा मुनि पत्नी जो कहेउ
तासु परम फल प्रकटित भयेउ

दो॰॥ अथवा द्विज वर को वचन सफल भयो अब आय
अयुत वर्ष सौभाग्य मम जो कहि गयो बुझाय ३९

जो विगरी छिन मांहि सँवारा
ईश्वर गति को जान निहारा
शकुन होंहि दिन प्रति बहुतेरे
बहु मंगल मय स्वप्न घनेरे ॥
गिरिजापति प्रसन्न जेहि काला ।
नहिं कछु दुर्लभ आश विशाला
एहि प्रकार बहु कियो विचारा
सब उर को संदेह निवारा ॥
लाजन भूमुख भई सयानी
नृपसुत बहुरि कही एह बानी
तब पति जननी जनक दुखारी
जाहु तहां मैं नृपति कुमारी ॥
तिनहूं को सब चरित सुनाई ॥
मेंटहु दुख आनंद सरसाई

होहु सेन अरु नव कल्याना ॥ वेगि पाइ है नाह सुजाना ॥

दो॰ ॥ एहि विधि कहि चढि निज तुरग साथ लिये द्वौ वीर
छिन में पहुंचे निषध पुर वेग सहित मति धीर ३२

सो॰ पुर उपवन में जाय कियो आपु विश्राम तहं ॥
पन्नग दियो पठाय निज शत्रुन के बोध हित ३३

दो॰ ॥ भुजग तनय वर रूप धरि न्रपति सभा महं जाय
न्रप रिपु गन को एहु वचन दीन्हो भव बल सुनाय ३४

इंद्र सेन जो चतुर न्रपाला ॥ तिन को छोरि देहु तत्काला
बिनहिं विचार कियो न्रप आसन इंद्र सेन को करहु समर्पन
तिन को सुत चंद्रांगद नामा परम चतुर अतिशय बल धामा
यमुना जल महं डूवत भयेउ ॥ उरग राज मंदिर महं गयेउ
पन्नगेश बहु दीनि सहाया ॥ सो पुनि धरणी लोक महं आया
जो नहिं मानहु वचन हमारा न्रप सुत करि है नाश तुम्हारा
एहि प्रकार जब कथा सुनाई बोले पन्नग सों भय पाई ॥
साधु २ वड हर्ष सुनावा ॥ करब तुम्हार वचन मन भावा
सब मिलि इंद्र सेन पहं जाई ॥ पुत्र समागम दीन सुनाई ॥
पुनि कीन्ही तिन विनय घनेरी दूरि कियो दुख बंदनि वेरी ॥
सब रिपु गन पायो भय भारी दीन्हो न्रप आसन वैठारी ॥
सुनि २ नगर लोग सब धाये पुर उपवन में लखि हर्षाये
राजहिं आय कहे सुख वयना तिन्हहिं दियो बहु धन गुन अयना

दो॰ ॥ सुत के आवन को चरित सुनि रानी महिपाल ॥
लोक देह की खवर नाहिं आनंद भयो विशाल ३५
नगर महाजन सचिव गुरु संग वाहन अति भीर
आगे लीन्हो भेटि तेहि लै आये न्रप तीर ॥ ३६ ॥

उत्सव सहित नरेश कुमारा। हर्षित निज मंदिर पगुधारा॥
कीन्हो मात पिता पद वंदन। प्रेम वारि पूरन द्वै लोचन॥
परी चरन सुत नृप नहिं जाना। अति प्रमुदित न देह संधाना॥
तब मंत्रिन नृप कहं समुझाये। संज्ञा पाय तनय उर लाये॥
क्रम सों मातन कहँ शिर नावा। तिन के सब के सनेह उर छावा॥
सकल मातु आलिंगन कीन्हो। मन अति प्रमुदित आशिरव दीन्हो॥
सचिव महाजन सब पुरवासी। कहि प्रिय वचन किये सुखराशी॥
सभा मध्य बैठो हर्षाई॥ पितहि सकल निज कथा सुनाई॥

दो०॥ उरग नाथ की मित्रता कही यथा विधि गाय॥
रत्न धनादिक जो मिलो पितहि दियो दर्शाय ३७

सुजन चरित्र सुना अरु देखा। प्रेम शिथिल नृप हर्ष विशेखा॥
बहुत दिवश कीन्हो जो तन मन। मम सुत वधू शंभु आराधन॥
तासु सोहाग उदय एह भयेउ। नृप उर दृढ निश्चय एह ठयउ॥
अति मंगलमय खबरि सोहाई। निज समधी कहं तुरत पठाई॥
चित्रवर्म सन आनंद सानी॥ चारन आय कही सुखवानी॥
सुनतहि मन अति आनंद बाढा। अति संभ्रम ह्वै गौ नृप ठाढा॥
तिनको दे बहु भांति बिदाई। नाचन लागो मन हर्षाई॥
आनँद परवश अति नरनाहा। कहि न जाय मन केर उछाहा॥
पुनि नरपति निज सुता बोलाई। सजल दिलोचन कंठ लगाई॥
शंभु कृपा वैधव्य गंवाई॥ २५ दिये नृपति भूषण पहिराई॥

सो०॥ अति प्राय भयो उछाह घर २ पुर ग्रामादि महं
नीको कियो निवाह सीमंतिनि शिव भक्ति को

एहि प्रकार सब लोग लुगाई। नृप दुहिता की करहिं बडाई॥
चित्रवर्म नरदेव सयाना॥ वृद्ध विप्र गुरु बंधु सुजाना॥

चंद्रांगद कहँ लियो बोलाई । पुनि विवाह की विधि जो गाई
करि वैदिक लौकिक सब रीती । व्याहि दई निज सुता सप्रीती
सीमंतिनि पति परम सयाना । पुनरु द्वाह भये हर्षाना ॥
भुजगाधिप गृह में जे पाये ॥ रत्नविभूषण परम सोहाये
मनुजन को अति दुर्लभ जोई । पहिराये वर भूषण सोई ॥

दो० अंगराग जेहि के लगे कुंदन सम छवि गात ॥
अति सुगंध पुनि जासु की दश योजन लौ जात
कल्पवृक्ष के पुष्प की कंचन वरन विशाल ॥
जो कवहूं सुरराय नहिं पहिराई वरमाल ४०

एहि विधि अति शोभा सरसानी । नृपतनया नहिं जाय बखानी
पुनि कछु दिन तहँ रहि सुखपायो शुभ अवसर सब विधि जब आयो
सासु ससुर अनुमोदन पायो महिषी सह निज धाम सिधायो
इन्द्रसेन लखि तरुन कुमारा शुभ दिन नृप आसन बैठारा
आप गयो बन में तपहेतू ॥ तहँ आराधन करि वृषकेतू
सन्यासिन की जो गति बरनी अंतलही नरपति दुखहरनी
दश हजार संवत सुख साथा सीमंतिनी सहित नरनाथा
भोग किये बहु विषय घनेरे आठ सुअन जाये तिन केरे ॥
भई एक दुहिता अति सुंदर वर आनन अति रूप उजागर

दो० पति समेत सीमंतिनी रमै सदा सुख पाय ॥ १ ॥
उमा महेश्वर पूजहि दिन प्रति प्रेम बढाय ॥ २ ॥
सो० ॥ अद्भुत एह इतिहास शौनक में बरनन किये
करिहौं तदुपरि प्रकाश महिमा सोम प्रदोष की ४२
इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम
कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश

मार्गे सोमवार व्रत महिमा प्रकाशनं नाम अष्टमो विश्रामः ८ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो नारायणाय चौपाई

साधु सूत भल चरित सुनावा। हम सब के मन में सुख छावा॥
दया करौ और हु कछु कहहू। व्यास कृपा सब जानत अहहू॥
सुनि मुनि गन के वचन सप्रीती। सूत कहन लागे एहि रीती॥
है विदर्भ सुंदर जो देशा॥ वेदमित्र तहँ रहा द्विजेशा॥
वेद शास्त्र कर जानन हारा॥ जिनकी निर्मल बुद्धि अपारा॥
तासु मित्र सारस्वत नामा॥ सोउ द्विज अतिशय गुन धामा॥
एक नगर में वास वहोरी॥ रही परस्पर प्रीति न थोरी॥
वेदमित्र को पुत्र सुजाना॥ नाम सुमेधा अति गुन वाना॥
सारस्वत कर तनय सोहावा। साम वान संज्ञा मन भावा॥

सो॰ सम दूतहु कर वेष सम वय सम विद्या उभय।
दुहु महँ प्रेम विशेष सह निवास के हेतु सों ९

साथ २ दुहु कर संस्कारा॥ तिन कर सम भास व्यवहारा॥
पढे अंग संयुत सब वेदा॥ तर्क व्याकरण पुनि बिन खेदा॥
तथा सकल इतिहास पुराना। धर्म शास्त्र पूरन तिन जाना॥
सब विद्या महँ कुशल सुजाना। सम गुरु द्वौ बालक गुन वाना॥
निज गुन तिन सब कहँ वश कीन्हा। निज जन कन कहँ अति सुख दीन्हा॥
षोडश संवत के द्वौ बालक॥ निज आचार नेम के पालक॥
महा मनोहर आकृति देखी॥ उभय विप्र करि प्रीति विशेखी॥
कहन लगे तिन सों एह बानी॥ अब तुम भये सकल गुन खानी॥
ब्रह्म तेज तुम्हरे तन माहीं॥ विद्या सकल बसहिं तुम पाहीं॥
अब विवाह कर समय तुम्हारा। मानहु यह उपदेश हमारा॥
द्वौ विदर्भ नरपति पहँ जाई॥ तेहि कहँ निज विद्या दर्शाई॥

पावहुगे तुम द्रव्य अपारा ॥ तब हू जैहै व्याह तुम्हारा ॥
इतनहु सुनि निज पितु के वयना नृप समीप गवने गुन अयना
अपनो उत्तम गुन दर्शायो भूपति को तिन वहुत रिझायो
राजहि अति प्रसन्न मन जानी बोले द्विज बालक एह वानी
भो विवाह कर समय हमारा धन हित तव मंदिर पगु धारा

दो॰ ज्ञाना अभिमत दुहुन कर विहंसत मुख नर नाह ॥
लोक तत्व के ज्ञान हित बोला सहित उछाह २ ॥

निषध देश नृप की पटरानी सीमंतिनी सकल गुन खानी
सोम वार कर व्रत आचरही शिव गौरी को पूजन करही ॥
तेहि दिन सपत्नीक भूसुर गन वेद ज्ञान पूरन जे सज्जन ॥
तिन को भक्ति सहित आराधन करि कै सदा देय वहु तर धन
तुम दौ आज्ञा मानि हमारी ॥ एक नारि को वेष सँभारी ॥
बनहि दूसरो तेहि कर नाहा ॥ दंपति बनि दौ सहित उछाहा
रानी सीमंतिनि गृह जाई ॥ ह्वैहौ मुदित वहुत धन पाई
वहुरि लौटि मम ढिग जब ऐहो हम हूं सों अभिमत धन पैहो
नरपति की दौ सुनि एह वानी द्विज बालक न परम भय मानी
कर्म नरेश कहा तुम जोई ॥ सो यह करत हमहि भय होई

दो॰ मातु पिता अरु देव गुरु तथा राज कुल माहिं ॥
करहिं कुटिलता मोह वश ते कुल सहित नशाहिं ३

राजन के अंतः पुर माहीं ॥ केहि प्रकार कोउ छल करि जाहीं
केतहु गुप्त करै किन कोई ॥ कवहूं प्रगट होय पुनि सोई
शीलाचार श्रुतादि घनेरे ॥ जे साधे हम गुन वहुतेरे ॥
कुटिल पंथ दीन्हे पगु राजा ॥ तुरतहि नाशहि सुगुन समाजा
छल मार्ग महँ जिन पगु दीन्हा कहौ कौन पातक नहिँ कीन्हा

वैर पाप निंदा अरु भीती ॥ तिन महँ चारि वसैं एह नीती
दुराचार पापी हम नाहीं ॥ जन्म लहा पावन कुल माहीं
दुर्जन सेवित एह आचरनू कबहू न हम करिहैं रिपु दमनू
सुनि द्विज वाल कि गिरा सोहाई पुनि महीश बोला अनरवाई

दो॰ मातु पिता गुरु नृपति को जो अनुशासन होय
उल्लंघन नहिं कीजिये तेहि को उत्तर न कोय ४

जो तिन कर आयुसु होई ॥ शुभ अरु अशुभ गिनै नहिं कोई
जो आपन चाहे कल्याना ॥ सावधान अरु सभय सुजाना
सदा मानि तिन कर उपदेशू किये लहै नहिं कबहूँ कलेशू
देखहु हम नरपाल तुम्हारे ॥ तुम संमत शुचि प्रजा हमारे
नृप अनुशासन करिहौ जोई सब प्रकार एउ रशुभ होई ॥
जो नहिँ मानहु वचन हमारा ह्वै है तुम कहँ भीति अपारा
एहि कारण सब हठ परिहरहू मोर वचन रुचि सों तुम करहू
एहि विधि जब नरदेव बखाना भयवश कीन्हो वचन प्रमाना
सारस्वत कर तनय सुजाना साय वान संज्ञा गुन वाना ॥
नृप तेहि को तिय वेष बनायो रुचिर वसन भूषण पहिरायो

छं॰ कृत्रिम समुन्नत कुच रुचिर वेणी परम छवि छाजहीं
श्रुति लोल कुंडल देह में वर अंग राज विराजहीं ॥
चख श्याम अंजन रूप अद्भुत जन मनोहर ह्वै गयो
एहि रीति सों द्विज तनय उत्तम नारि सम छिन में भयो १

दो॰ बनि दोउ द्विज दंपती नृप आयसु अनुसार ॥ ॥
निषध देश को चालि भये करि निज हृदय विचार ५
जो होनी सो आमिट है होइहु न कछु संदेह ॥ ॥
सोम वार के दिन गये निषध भूप के गेह ॥ ६ ॥

और द्विजनसह कीन प्रवेशा
भयो दूरि सव पंथ कलेशा
प्रथम पाद प्रक्षालन भयेउ
वैठन को शुभ आसन मिलेउ
जवहीं द्विज दंपति प्रमुदित मन
वैठिगये सव निज २ आसन
सीमंतिनी तहाँ चलि आई ॥
एक २ पूजो मन लाई ॥ २ ॥
कृचि भा द्विज दंपति पहिचानी
हँसी प्रथम नृप नारि सयानी
वहुरि तिन्ह हि गौरी शिव मानी
पूजा की रुचि कीनि सयानी
जे भूसुर तिन महँ शिव शंकर
वनितन महँ हिमगिरि तनया कर
एहि प्रकार कीन्हो आवाहन
माला धूप तथा निराजन ॥
पूजि सवहि पुनि कियो प्रनामा
करन लगी पारुस नृप वामा
हेम थार पायस अति रूरी
घृत शर्करा सहित अरु पूरी
शाक मनोरम अरु आपूपा ॥
शाल्योदन वर गंध अनूपा
कृसर तथा संयाव सोहावा
माषपक्व सुंदर मन भावा
औरहु अन्न असंख्य प्रकारा
भक्ष्य भोज्य वर सरस अपारा
दधि ओदन अनूप सुंदर जल
शुचि सुगंध मिश्रित अरु शीतल
तृप्त भये जव द्विज समुदाई
दिये पान आचमन कराई
धेनु हेम अरु वसन सोहाये
रत्न माल भूषन मन भाये ॥

दो॰ दीन्ही एहि विधि दक्षिणा पुनि २ कीन प्रणाम
विदा भये सव भूमिसुर सकल गये निज धाम ३

द्विज वालक जे नृपति पठाये
निषधेश्वर गृह वाहर आये
नारी रूप विप्र जो रहेउ ॥
गौरि वुद्धि पूजन जव भयेउ
सोमवान सांचहु वर नारी
होत भयो नर भाव विसारी
वना रहा जो वर तेहि केरा
ताही में करि प्रेम घनेरा ॥
भई काम पीड़ा तेहि भारी ॥
मदन विवश वोली वर नारी
प्राणनाथ वर नयन विशाला
देखहु मम दिशि करहु निहाला

ठाढ होहु सुंदर कहँ जाहू ॥ निज प्यारी कर सुनहु उछाहू
एहु बन अति रमणीय सुजाना । लताभवन पुष्पित जहँ नाना
मोर मनोरथ नाथ अपारा ॥ करहु यहाँ मम सहित विहारा
एहि प्रकार तेहि वचन सुनाया । आगे वरस्त्ररूप द्विज राया ॥
तासु वचन परिहास विचारी । नहि कछु भूसुर गिरा उचारी
चलो जाय मारग मन लाये । पुनि वाला ये वचन सुनाये ॥
कहाँ जाहु ठाढे किन होहू ॥ मो पर नाथ करौ किन छोहू
मदन वेग अब नहि सहि जाई । तजहु वेगि मन की निठुराई
करहु मोर परिरंभ दयाला । पान करावहु अधर रसाला
प्राणनाथ अब नहिं चलि जाई । कामवाण पीडा अधिकाई
जैसो वचन कबहूँ नहिँ बोला । रमणी कैसो स्वर अनमोला
सुनि २ मन शंकित रहि गयऊ । सहसा ताहि निहारत भयऊ
जब देखी अति सुंदर नारी ॥ भयो ताहि विस्मय अति भारी
कमलविलोचनि को यह नारी । कृश कटि अरु श्रोणी थल भारी
पीनोन्नत कुच वर संधाना । नव पल्लव कोमल सब गाना
सोई एहु मम सखा सुजाना । तरुनी ह्वै गयो विधि बलवाना
पूछौ प्रथम दशा एहि केरी ॥ एह निश्चय करि तेहिं दिशि हेरी
बोला सुनु प्रिय सखा सुजाना । भान होहु मोहि तुम विधि आना
औरहि रूप और गुन तेरे ॥ औरहि भाँति वचन वहु तेरे
कहहु सखा जिमि कामिनि कोई । एहु सब लखि अति विस्मय होई

सो॰ ॥ जानहु वेद पुरान ब्रह्मचर्य्य को व्रत गहे ॥ ५ ॥
द्विज वर परम सुजान सारस्वत के पुत्र तुम ।
इंद्रीगन बलवान जीति लई तुमने सकल ॥ ३ ॥
शमदम धर्मनिधान अस भाषहु कारन कवन ६

सुनिएह वचन कह्यो द्विज पाहीं स्वामी सुनहु पुरुष मैं नाहीं
वाला सोमवती मम नामा तव रति दायिनि हौं गुन धामा
जो संशय कौनहु मन तोरे ॥ तौ तुम देखि लेहु अंग मोरे ॥
पुनि तुरतहि वन में लै जाई सहसा निज अंग दियै देखाई
सहज अशुभग सुंदर सव रूपा जघनादिक सव अंग अनूपा
कृत्रिम नहि तहं कौनहु देखा जव धरनी सुर वालक देखा
हृदय भई कछु मनसिज पीरा भयो विकल तद्यपि मति धीरा
वुध वर करि अति यत्न सोहावा मन विकार सव दूरि वहावा
भयो अधिक विस्मय मन माहीं दुइ घटिका वोला कछु नाहीं
पुनि कामिनि यह वचन उचारा गयो नाथ संदेह तुम्हारा ॥
तौ देखहु एह विपिनि सघनतर परवनिता रति योग मनोहर
चलहु तहां मम सेवन करहू काम जनित पीडा मम हरहू

सो॰ ॥ असे सुनि वहु वयन कह्यो सुमेधा डारि तेहि
तुम पंडित गुन अयन जनि वोलौ एहि विधि वचन १०
मातिनाशहु मर्य्याद मदमत वारे पंथ जग ॥
है एह परम विषाद ज्ञाता हू जानौ नहीं ११ ॥
दो॰ कुल विद्या अरु वोध के उचित न एहु व्यवहार
जो तुम कीन्हो चहत हो जार पंथ आचार १२ ॥

सुनहु सखा तुम अवला नाहीं आपुहि कौन लखौ मन माहीं
नाहिन काहू कर अपराधा एह अनरथ निज कर हम साधा
मातु पिता कर वंचन कीन्हा वचन कुटिल नृप कर सुनि लीन्हा
नृप परवश है अनुचित कीन्हा विधि हम को तुरतहि फल दीन्हा
सव प्रकार नर श्रेय विनाशक कृपा अनुचित दुख दोष प्रकाशक
जे तुम विप्रन नय विज्ञानी ॥ पायो नारि भाव अघ खानी

मारग तजि वन में जो जैहै ॥ सो नर कांटे न को दुख पैहै ॥
हिंसक जीव जाहि ते हि खाई ॥ जो सुपंथ तजि कानन जाई
एहि प्रकार बहु वोध विचारी ॥ चले चलहु ग्रह मौन संभारी॥
हु है द्विज गुरु देव प्रसादा ॥ मिटिहै नारि स्वभाव विखादा
दैव योग नवनारि स्वभावा ॥ जैहै नहिं जो कासु प्रभावा ॥
पिता करै जव तव मम व्याहा ॥ तवर मिल्यो नित सहित उछाहा
अहो चित्र वड दुख समुदाया ॥ कहि न जाय अतिशय वल माया
शिव आराधन जनित सोहावा ॥ अहो महीपति नारि प्रभावा
वार वार वहु विधि समुझायो ॥ मद न विवश मन में नहिं आयो
वल करि करि लीन्हो आलिंगन ॥ कियो अधर पल्लव कर चुंवन
एहि विधि यद्यपि नवल किशोरी ॥ करी तासु धर्षण नहिं थोरी
तदपि सुमेधा अति मतिधीरा ॥ करि वहु यत्न परम गंभीरा
धर्म सहित ग्रह में लै आयो ॥ द्वौ विप्र न कहं चरित सुनायो
सुनि अति कोप भयो मन माहीं ॥ तुरतहि गये महीपति पाहीं ॥
सारस्वत नरपति कहं देखी ॥ वोला करि अति कोध विशेखी
मम सुत देखु कुटिल नरनाहा ॥ तव अनुशासन करि निर्वाहा
कर्म जुगुप्सित में मन लायो ॥ तेहि कर फल मम सुत एह पायो
तनय हमार भयो एहु नारी ॥ नष्ट भई संतान हमारी ॥
अव नहिं पुत्र जन्म की आशा ॥ भये हमारे पितर निराशा ॥

सो॰ ॥ शिखा यज्ञ उपवीत मौंजी दंड कमण्डलू
तजि वटु धर्म पुनीत भई पुत्र की एह दशा ९३

दो॰ ब्रह्म सत्र सावित्र व्रत जप संध्या अस्नान ॥
सव तजि अवला ह्वै गयो पावै किमि कल्यान ९४

कीन्ही संतति नष्ट हमारी ॥ गति हमारि नृप कहहु विचारी

एहि प्रकार मुनि विप्र विलापा । भयो नृपति उर अति संतापा
सीमंतिनि कर परम प्रभावा ॥ लखि नरेश अति विस्मय पावा
राजा सब ऋषिराज बुलाये ॥ पूजि भली विधि वचन सुनाये
जेहि प्रकार तजि कामिनि भावा । पुरुष होहि एहु नाथ प्रभावा
करहु वेगि प्रभु सोन उपाई ॥ मम दुर्मति भव कोप विहाई
ऋषय कह्यो सुनिये नरपाला । ऐसो को समरथ एहि काला
गिरिजा शंभु समीहित जोई । तेहि अन्यथा करै किमि कोई
तासु भक्त संकल्प उदारा ॥ को जग में भयो मेटन हारा ॥

दो॰ ॥ भरद्वाज मुनि राज की करि विनती महि नाथ ॥
द्वौ द्विज वर द्वौ द्विज तनय लै लीन्हे नृप साथ १५

गयो भवानी भवन नरेशा ॥ भरद्वाज मुनि जस उपदेशा ॥
निशिदिन श्री गिरिजा पद सेवा । करहिं सप्रेम अचल नरदेवा
तजि दीन्हो भोजन महिपाला । गृहण किये वर नेम विशाला
पूजा जाप कबहुं पुनि ध्याना ॥ कबहूं पाठ विनय विधि नाना
वार वार करि दंड प्रनामा ॥ एहि विधि बीती तीनि चियांसा
नरपति की लखि भक्ति घनेरी । पूजा अरु विनती बहुतेरी ॥
ह्वै प्रसन्न निज रूप दिखावा ॥ कोटि कलाधर सम छवि छावा
कह्यौ देवि नरपति कहु चहहू ॥ आपन अभिमत तहम सन कहहू

सो॰ देवि देहु वरदान पुरुष होय द्विज तनय जिमि ॥
सुनु महिपाल सुजान दुर्घट भाषहु वचन तुम २६
कर्म शुभाशुभ जोय हमरे भक्तन को किये ॥ २ ॥
सो अन्यथा न होय यत्न करै बहु कल्प लौ २७

पुनि नरनाह कही एह वानी । सुनु वरदायनि मातु सयानी
द्विज वर के एह एक कुमारा ॥ देखि दशा तेहि शोच अपारा

तैसे सुअन बिना तेहि को दुख मिटै कौनि विधि द्विज पावै सुख
सुनु महीपाल प्रसाद हमारे हैहै तेहि के और कुमारा ॥
विद्या गुन संपन्न सुजाना ॥ बड़ी आयु उर ज्ञाननिधाना
सामवती एह विप्र कुमारी ॥ होय सुमेधा की प्रिय नारी ॥
एहि विधि दै गिरिजा वरदाना तुरत है गई अंतर्ध्याना ॥
नृप भूसुर निज २ ग्रह जाई गिरिजा ऽऽ पूजा कीन्हो हर्षाई
सारस्वत पुनि देवि प्रभावा गुन मंदिर दूसर सुत पावा
भयो सुमेधा केर विवाहा ॥ सोमवती सह सहित उछाहा
देवि प्रसाद लह्यो संयोगा भोगे बहुत काल वर भोगा ॥

दो॰ ॥ न्रपति प्रिया सीमंतिनी तासु प्रभाव अपार ॥
मुनिवर मैं वरनन कियो शिव महिमा विस्तार १७

सो॰ ॥ कहौं बहुरि मैं गाय शिव भक्तन को शुभ चरित
सुनि मंगल सरसाय अति प्रभाव विस्मय जनक १८

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे सीमंतिनी प्रभाव प्रकाशन परो नवमो विश्रामः ९

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः अथ दशमो विश्रामः

दो॰ ॥ अति विचित्र शंकर चरित अरु महिमा विस्तार
शिव भक्तन को चरित पुनि तिमि पावन अघहार १

स्वर्ग मुक्ति कर साधन जोई मुनि नायक वरनत हैं सोई
पुरी अवंती नाम सुहाई ॥ तहाँ बसै मंदर द्विज राई
अति लंपट धन संग्रह कारी नारी वश विषई अति भारी
त्यागि दियो संध्या अस्नाना प्रिय सुगंध भूषण परिधाना
कुस्त्री सक्त कुमारग गामी रहो अजामिल को अनुगामी

गनिका एक पिंगला नामा ॥ मंदर वसहि सदा तेहि धामा
इंद्रीगन परवश्य द्विज मंदर ॥ रमत रहै तेहि संग निशि वासर
एक समय वैठे गृह द्वारा ॥ तहां शिव योगि ऋषभ पगु धारा
मानहुं तिनकर सुकृत सोहावा शिव योगी स्वरूप धरि आवा
देखि प्रिया प्रीतम हर्षाने ॥ करि प्रणिपात विविधि सन्माने
प्रीति सहित गृह में लै आये सिंहासन पर छौम विछाये
चरन धोय आसन वैठायो चरनोदक निज सीस चढायो
स्वागत भाखि अर्घ पुनि दीन्हा विधि समेत वहु पूजन कीन्हा
मधुर रुचिर भोजन करवाये अति सुगंध मुख वास खवाये

सो॰ ॥ करवाई तव सयन पुनि मंदर अरु पिंगला
कहि २ द्वौ मृदु वयन लगे पाद सेवा करन २ ॥

दो॰ दैव योग अति भक्ति सों करि सेवा मन लाय ॥
मन प्रसन्न करि ऋषभ को दीन्हा पलंग सोवाय ३

एहि प्रकार सो रयनि गंवाई प्रात होत मुनि गे हर्षाई ॥
एहि विधि ते द्वौ रहहिं सप्रीती वहुर हु गयो काल वहु वीती
छूटि गयो पुनि विप्र शरीरा ॥ कछु दिन पर गनिका मतिधीरा
तजी देह पाई तिन जो गति ॥ सुनहु ताहि मुनिराज महामति
दाशारण संज्ञा वर देशा ॥ वज्रवाहु तहं रहा नरेशा ॥
सुमती नाम तासु पटरानी न्रपति प्रिया अति चतुर सयानी
मंदर विप्र देह जव त्यागी ॥ तासु गर्भ आयो वड भागी
गर्भ जनित अति मान वडाई न्रप सनेह की लखि सरसाई
सहि न गयो तेहि कर उत्साहा सौतिन के उर दारुन दाहा
गर्भ नाश हित तिन अघ कीन्हा रानी कहं छल करि विष दीन्हा

दो॰ विन जाने खायो गरल तदपि गयो न शरीर ॥

दैव योग जीवत रही तन वाढी अति पीर ॥ ४॥

मरन सरिस तेहि दुख बहु पायो । समय पाय बालक एक जायो ॥
विषवश रानी तन बहु पीरा । फूटि गयो सब रुचिर शरीरा ॥
तैसेइ नृप सुत केर शरीरा । व्रणमय अंग अति घायत नपीरा ॥
जाया पुत्र दुखी अति देखी । करवायो नृप यत्न विशेखी ॥
वैदन कीन्हे विविध उपाया । तदपि गयो नहिं रोग निकाया ॥
राति दिवस ह्वै नींद विहीना । परम दुखी आकुल अति दीना ॥
बीति गये एहि विधि कछु मासा । भयो न जननी सुअन सुपासा ॥
मृतक समान दुनहु तन धारी ॥ तिन्हहि देखि सब लोग दुखारी ॥
दशा देखि नृप कियो विचारा । मम जाया पुनि पुत्र हमारा ॥
नरक त्यागि जनु मम गृह आये । निरय भोग सम बहु दुख पाये ॥
व्रण पीडित अति रोदन करहीं । मम निद्रा निशि दिन परहरहीं ॥
नहिं जीवहिं नहिं मरहिं अभागी । निज कृत पाप जनित दुख भागी ॥
इन पापिन को करब उपाया ॥ मिटिहि जौन विधि दुख समुदाया ॥
तिन कर त्याग सुखद अनुमाना । एह निश्चय नरपति उर ठाना ॥
सो तिन कर नृप नेह संभारे ॥ तिनके सुत नृप कहं अति प्यारे ॥
महिपति तुरतहि सूत बोलाई । गुप्त कह्यो तेहि को समुझाई ॥
सुत रानी ह्वै रथ वैठारी ॥ तजहु जहां पावहु वन भारी ॥
जेहि प्रकार नृप आयसु दीन्हा । नरपति सूत तथा सब कीन्हा ॥
सूत गयो एनिहि जब त्यागी ॥ क्षुधा तृषा अति घायन हं लागी ॥
देह व्यथा कछु कहि नहिं जाई । भयो त्याग दुख अति अधिकाई ॥
चली लिये बालक निज गोदा ॥ पद २ गिरत दुखित गत मोदा ॥
नयन सजल अरु लेहि उसासा । वन जीवन की मन अति त्रासा ॥
कहुं कंटक वेधित सब अंगा ॥ वाघ शब्द सुनि धीरज भंगा ॥

कहूं आय सर्प न तेहि घेरा॥ दियो पिशाचन दुख बहुतेरा
बहु निशाचर अरु बेताला॥ कहूं ताहि भय दियो कराला
अतितीखे क्षुर धार समाना। पग फूटैं लग २ पाखाना

सो॰॥ गिरत परत नृप नारि महा घोर वन में भ्रमत
बहुरि कर्म अनुसारि वणिगन को मारग लह्यो ५

गोवाजी नर सेवित जोई॥ गहि लीन्हो तेहि मारग सोई
बहुत यत्न करि अरु श्रम भूरी। वणिग नगर देखा चलि दूरी
अति शोभित जहँ बहु नर नारी। विचरहिं प्रमुदित सकल सुखारी
वैश्य धनी पद्माकर नामा॥ नगर अधीश रहा गुण धामा
पद्माकर दासी लखि पाई। नृप गृहणी के ढिग चलि आई
चरित सकल जाना तेहि केरा॥ भई दयातुर प्रेम घनेरा॥
नगराधीश तीर चलि आई। रानी को सब कथा सुनाई॥
नगरनाथ निज निकट बोलायो। तासु कष्ट लखि अति दुख पायो

सो॰ रहसि बहुरि लै जाय पूछ्यो नृपतिय को चरित।
रानी दई सुनाय सकल अवस्था आपनी ६॥

अहो कष्ट भामिनि अति पायो। मृदुल वचन कहि शोच नशायो
निज समीप दूसर गृह दीन्हा। सेवा को उपाय सब कीन्हा॥
जाना तेहि निज मातु समाना। देहि उचित भोजन परिधाना
करहिं यत्न रक्षा बहुतेरी॥ रोग गयो नहिं पीर घनेरी
वेदन कीन्हो यत्न अपारा॥ कछु दिन बीते नृपति कुमारा
निज प्रारब्ध विवश मरि गयऊ। रानिहि महा शोच तब भयऊ
मूर्छित परी धरनि बिलखाई। गज प्रभग्न जिमि बेलि सोहाई
नयन बहैं आसुन की धारा। रही नाहिं तन वसन सँभारा
पद्माकर नारिंन समुझायो। प्रीति सहित गहि भुजा उठायो

अति दुख लागी करन विलापा । कहि २ एहि विधि वचन कलापा ।
तात तात हा पुत्र हमारे ॥ हा मम प्राणन के रखवारे ॥
अहह तात आनंद विधायक । हा न्रप कुल पूरन निशि नायक ।
दूरि कुटुंबी बंधु हमारे ॥ तुमही रहे प्राण रखवारे ॥
दीन अनाथ जननि कहं त्यागी । कहां गये न्रप सुत बड भागी ॥

दो॰ इत्यादिक बहु दीनतर वचन कहे बिलखाय ॥
द्रवत हृदय सुनि कोउ नहिं सके तासि समुझाय ७
सो॰ रानिहि शोच विशाल ऋषभदेव शिव योगिवर
आयगये तत्काल कह्यो प्रथम जिन को चरित ८॥
विधिवत् पूजन कीन्ह पद्माकर तिन को जवहि
न्रप वनिता लखि दीन शिव योगी बोलत भये ९

वृथा शोच केहि कारण करहू । भामिनि मूढ बुद्धि परिहरहू ।
कासु जन्म पुनि कासु विनाशा । होत भयो तुम करहु प्रकाशा ।
जीव सदा चेतन अविकारी । तासु न नाश कबहुं न्रप नारी ।
देहादिक जल फेन समाना । क्षणभंगुर जग में सब जाना ।
कबहूं प्रगट होंहि जग माहीं । काल पाय पुनि कबहुं विलाहीं ।
बुद्बुद सरस सदा तन एहा ॥ नष्ट होहि नहिं कछु संदेहा ॥
रहा शोक अवसर कछु नाहीं । बुधजन नहिं शोचहिं एहि माहीं ।
त्रिगुण रचित सब भूत पसारा । भरमत रहहिं कर्म अनुसारा ।
काल विवश खैंचे सब फिरहीं । सयन वासना महं सब करहीं ।
गुन त्रय माया के उपजाये ॥ गुण मय सकल देह न्रप जाये ॥
सत्तगुन हाहि देव तन पावै ॥ रज सों मनुज योनि में आवै ॥
तम सों तिर्यग्योनि सयानी ॥ निज वासना विवश अज्ञानी ॥

सो॰ ॥ भामिनि एहि संसार कर्म बंध वश जीव सब ॥

पावहिं गति विस्तार दुर्विभाव्य दुखसुखमई ॥ २०
लहहिं विपर्य्यय सोय कल्पायुष जे देववर ॥
वहुत रोग वश जोय मनुजन की तहँ का कथा ॥ २१

देह हेतु कालहि कोउ मानहिं
कोई कर्म कोइ गुन जानहिं ॥
काल कर्म अरु गुन आधीना ॥
पंचरचित एहि देह मलीना
जन्म देखि बुध सुख नहिं मानहिं
मृतल रवि शोच नहीं उर आनहिं
जो अव्यक्त रूप भगवाना ॥
प्रगट होंहिं तिहि सो जग जाना
पुनि ताही में लय है जाई ॥ ८ ॥
मध्य व्यक्त इव जग दर्शाई
जिमि बुद्बुद जल में प्रगटाहीं
वहुरि वारि महँ सकल विलाहीं
गर्भ मध्य जव जीव समाना ॥
लहहिं दुःख वहु नाश समाना
गर्भहि में केते मरि जाहीं ॥ ८ ॥
जन्म होत कोउ तुरत विलाहीं
कोई युवा वृद्ध है कोई ॥ ९ ॥
मरि हैं अवशि प्रगट भा जोई

दो॰ ॥ प्रथम जन्म कर कर्म जस जेहि प्राणी कर होय ॥
तैसोई तन लहत है तैसोइ दुख सुख सोय ॥ २२ ॥
सो॰ माया प्रबल प्रभाव मातु पिता के सुरत सें ॥ २ ॥
जीव सदा तन पाव पुरुष नारि अरु क्लीव को ॥ २३

सुख दुख आयु पुण्य अरु पापू
धन विद्या कीरति संतापू ॥
जो ललार महँ विधि लिखि दीन्हा
पावहिं सकल जन्म जहँ लीन्हा
काल कर्म उल्लंघ सयानी ॥
करि नजाय वरनहिं सव ज्ञानी
क्षणभंगुर पुनि लखि संसारा
न्रप वनिता तनु शोक अपारा
नहिं थिरता जिमि स्वप्न माहीं
सांचो इन्द्रजाल जिमि नाहीं ॥
चपल मेघ जिमि निस्पन होई ॥
जानु कलेवर की गति सोई ॥
जन्म कोटि प्रात सुसुखि तुम्हारे
वीते विन परतत्व विचारे ॥
भयो नोहि अतिशय भ्रम भारी
लोक दृष्ण नाहिं कवहुं विचारी

काहू की तनया ह्वै जाई ॥ २ ॥ काहू की तैं जननि कहाई ॥

दो॰ ॥ काहू की गृहिणी भई कोटि जन्म एहि रीति ॥
बहु भूम को अनुभव कियो जग में अति विपरीति २४

महि जल पावक व्योम समीरा । पंचभूत सों रचित शरीरा
त्वचा मास शोणित अरु मेदा । मज्जा अस्थि भरे अति खेदा
विष्टा मूत्र केर एह भाजन ॥ तन मल रूप कहहिं सब सज्जन
तव तन कोमल रूप सयानी । ताहि तनय अपनो अनुमानी
वृथा कियो तुम शोच अपारा । तजहु वेगि सुनि वचन हमारा
मृत्यु केर जो होत उपाया ॥ नहिं सहते दुख नृप मुनि राया
विद्या तप अरु मंत्र रसायन । बुधि बल मृत्यु पार कोउ पायन
आजु मौत के वश कोइ होई । होत प्रभात मरैगो कोई ॥ ३ ॥
क्षण भंगुर एह तन अनुमानी । वृथा शोच जनि करहु सयानी

सो॰ ॥ मौत बसै निज पास लोगन को कहु कौन सुख
नहिं पशु लहै सुपास बैठे सन्मुख सिंह के २५
जो तैं सुमुखि सयानि जन्म मृत्यु जीतो चहसि ॥
उमानाथ वरदानि मृत्युंजय की शरण गहु २६

दो॰ जन्म जरा और मृत्यु की तौलो भय मन मांहिं ॥
जौलो शंकर चरन की शरण गही नर नाहिं २७ ॥

अति दाहन भामिनि संसारा । अनुभव करि तहं दुःख अपारा
मन में उपजे जबहिं विरागा । ध्यावै शिव हि सहित अनुरागा
शंभु ध्यानमय सुधा सोहाई । मन सों जबहि पान करि पाई
भवविषयन कर आसव जोई । बहुरि तहां तृस्ना नहिं होई ॥
सर्व संग वर्जित जब भयेउ ॥ विमल विराग परम उर छयेउ
शिवपद मगन जबहि मन होई । पद निर्वाण कहावै सोई ॥

निज बालक सम राजकुमारा । जानि करै नित प्रेम अपारा ॥
काल पाय कीन्हो उपनयना । तब सों ते दोऊ गुन अयना ॥
श्री गुरु के ढिग नित प्रति रहहीं । शुश्रूषा करि विद्या गहहीं ।
राज पुत्र की श्रुति सरसाई ॥ जबहीं वर्ष सोरहीं आई ॥
ऋषभ देव योगी प्रभु उदारा । राज पुत्र के गृह पगु धारा ॥
न्रप गृहणी अरु राजकुमारा । उठे देखि मन हर्ष अपारा ॥
कीन्हो बारहिं बार प्रनामा ॥ पूजे भक्ति सहित गुन धामा ।
शिव योगी बैठे शुभ आसन । बोले न्रप सुत सों हर्षित मन

दो॰ ॥ तात तुम्हारी कुशल है तब माता की क्षेम ॥ २ ॥
विद्या संग्रह कियो तुम पालत हो बहु नेम ॥ ३ ॥

गुरु सेवा तुम करहु कि नाहीं ॥ आपन चरित कहौ मोहि पाहीं ।
तब गुरु सुहृद प्राण रखवारे । करहु तात सुस्मरण हमारे ॥
योगीश्वर की सुनि एह बानी ॥ विनय सहित न्रप नारि सयानी
निज सुत सों प्रणि पात करावा । पुनि सप्रेम एह बचन सुनावा
एह तुम्हार सुत तुम गुरु ताता । तुम एहि के पितु प्राण प्रदाता
एहि को सब न साग करि दीन्हा । तुम करुना करि पालन कीन्हा
करहु अनुग्रह शिष्य बनाई ॥ सन्मारग प्रभु देहु सिखाई ॥
एहि विधि जब बहु बिनय सुनाई । तब शिव योगी मन हर्षाई ॥
जेहि सेवत सब दूरि कलेशा । कीन्हो सन्मारग उपदेशा ॥
न्रप किशोर सुनिये सुस्थिर मन । सोई जानहु धर्म सनातन ॥
श्रुति स्मृति पुराण दर्शायो ॥ वर्णाश्रम को नेम सोहायो ॥
ताहि सदा तुम सेवन करहू ॥ सदाचार नित प्रति अनुसरहू
जग में जे देवज्ञ सुजाना ॥ २ ॥ सदा करहु तिन कर सन्माना
कबहुं देव गुरु की परिहेलन । मनहूं सौं ना करौ तुम सज्जन

गुरु गो देव विप्र सेवकाई ॥ सदा करहु तुम भक्ति दृढाई १०

सो॰ ॥ यदपि होय चांडाल अतिथि केर सन्मान तुम ॥
करौ सदा महिपाल परम धर्म एह जानिउर ॥ ४ ॥
कैसहु संकर काल तजहु सत्य नहिं कवहुं तुम ॥
मिथ्या कहहु भुआल रक्षा हित गो विप्र के ५ ॥

परको धन औरन की नारी ॥ देव विप्र की वस्तु पिआरी ॥
मानि करहु तस्का जनि कवहूं दुर्लभ यदपि तजहु तुम तवहूं
सदाचार सत्कथा मनोरम सज्जन व्रत अरु सुंदर आगम
शुभ धर्मादिक संग्रह के हित राजपुत्र करि औ लक्षानित ॥
वेद धातु तर्पण अरु नाना ॥ गो सुर पूजन होम विधाना ॥
मंत्र जाप अतिथी आराधन ॥ इन में जनि आलस करु सज्जन

सो॰ ॥ द्वेष क्रोध शठ भाव असदाग्रह भय पापिशुनता
दंभहि कुटिल स्वभाव उद्वेगहि त्यागहु सदा ६ ॥

राज धर्म यद्यपि अनुसरहू ॥ वृथा जीव हिंसा जनि करहू ॥
शुष्क वैर मिथ्या परिहरहू ॥ पर निंदा कवहूं जनि करहू ॥
मृगया सुरा द्यूत अरु नारी ॥ अवला जित विषयी जे भारी ॥
पाप परायण दुर्विनई जे ॥ इन में अति सनेह नहिं कीजे
सुखी नरन सों करहु मिताई दुखित देखि करुना अधिकाई
सुकृती लखि मुदित अनुसरहू कुमति विलोकि उपेक्षण करहू
अति श्रम निद्रा अति आहारा ॥ अति क्रीडा अति क्रोध अपारा ॥
अप्यालाप सदा नहिं करहू ॥ एती अति अतिशय परिहरहू

दो॰ अति विद्या अति निपुणता अतियश अति उत्साह ॥ ८ ॥
अति श्रद्धा धीरज स्मृति संपादहु करि चाह ॥ ७ ॥

सो॰ ॥ निज तिय मांहि सकाम अरु सरोष निज शत्रु महँ

लेहु न पापी नाम होहु पुण्य महं लोभ युत ६

पाखंडी संग द्वेष अपारा ॥	सज्जन के संग प्रीति उदारा ॥
पिशुन कथा महं वाधिर समाना	दुष्ट मंत्र लावहु जनि ध्याना
जड जह क्रूर पतित अरु चंचल	नास्तीक अरु धूर्त कितव खल
एतेन था कुटिल नर जोई ॥	तजिओ दूरि हित तुम सोई ॥
अपनि प्रशंसा जनि मुख आनहु	लोगन को इंगित पहिचानहु
धन वालक अरु प्रिय परिवारा	करहु न तहं आसक्ति अपारा
पतिव्रता जो नारि तुम्हारी ॥	तथा ससुर अरु जननि पिआरी
गुरू साधु इन सब की वानी ॥	करहु प्रतीति सदा हित जानी
आपनि रक्षा जानि प्रधाना ॥	सदा परायण होहु सुजाना
सावधान हृद व्रत अनुसरहू	नेम भंग कबहूं जनि करहू ॥

सो॰ ॥ करेहु न प्रिय विश्वास कबहूं सेवक जनन को ॥
चोरहु केर विनाश करि प्रतीति नहिं कीजिओ ॥ ६ ॥

दो॰ ॥ वृद्ध निराग स कृपण अरु अवला बाल अनाथ
बल बुधि धन अरु प्राण सों नित पालहु महि नाथ ॥ ७ ॥

निरछल में शंका जनि करहू	सत्य नेम तुम जनि परिहरहू
वध के योग शत्रु किन होई ॥	शरणागत मारहु नहिं कोई
पात्र अपात्र होय नर जोई ॥	उत्तम नीच होय किन कोई ॥
यद्यपि फिर मांगे कोउ तेरा ॥	दीन्हे पै हो सुयश घनेरा ॥ ८ ॥
करि उपाय बहु फल घनेरा ॥	संचय करहु सुयश बहुतेरा
नृप कर पंडित कर जग मांहीं	यश के सम भूषण कोउ नांहीं
कीरति सों कमला गृह आवै ॥	पुनि कीरति वड पुन्य वढावै
वर कीरति सों लोक विराजहिं	जिमि चंदनि सों विधु अति राजहिं
हय गज हेम राशि बहु नेरी ॥	पर्वत सरस रत्न की ढेरी ॥ ९ ॥

जेहि सों नव अप कीरति होई॥ तजि अरु तरुन सम तुरतहि सोई

दो॰ मातु पिता गुरु कोप अरु सुत भूसुर अपराध॥

धन के व्यय को सहहु नित न्पप सुत बुद्धि अगाध॥९

सो॰ जेहि विधि सों द्विज राय मुदित होहिं सोइ करहु तुम

भूसुर करहिं सहाय नरपति कहँ संकट परे १२॥

धन आयुर्वल पुन्य उदारा कीरति सुख उत्कर्ष अपारा॥

इन की वृद्धि होय जेहि कीन्हे सोई कर्म करि औचित दीन्हे

कार्याकार्य रूप व्यवहारा जो कछु तुम ने हृदय विचारा

देश काल निज शक्ति विचारी यत्न सहित नित करहु सँभारी

काहू को वाधा जनि करहू॥८॥ नित प्रति पर वाधा अपहरहू

रिपुगन दुष्ट चोर दुखदाई वाधहु सदा शक्ति सरसाई॥

जप अरु होम तथा अस्नाना देव पितर हित कर्म विधाना

इन में आतुरता परिहरहू॥ निद्रा भोजन में आचरहू॥

सो॰ सत्य मनोरम होय अल्याखर पुनि अर्थ वहु॥

वानी कहिओ सोय सठता गत चातुर्य्य मय १३॥

दो॰ शत्रु पक्ष अरु विपति में निर्भय होहु सुजान॥

द्विज गुरु अरु पाप की भय करिओ गुनवान १४

जाति वंधु द्विज वालक जाया पुनि जे राउर मित्र अमाया॥

इन सव सों समान अनुसरहू पंक्ति भेद कवहूं जनि करहू॥

साधु करहिं जेहि हित उपदेशा जहां होय प्रभु चरित सुदेशा

विद्या सभा धर्म विधि माहीं॥ कवहूं होहु विमुख तुम नाहीं

जहां होय शुचि वारि निवासा करहिं जहां भूसुर कुल वासा

महादेव शंकर मय जोई॥ करव निवास खोजि तुम सोई

कुल रोगनि का गन वहुतेरी वसती जहँ विषयी जन केरी

नीचसंग अरु जे दुर्देशा ॥ २ ॥ तहाँ न कवहूं करहु प्रवेशा ॥

सो॰ त्रिभुअन नाथ दयाल एक शंभु की शरण गहि ॥
सव सुर को महिपाल करहु उपासन भक्ति सों १५

कामादि॥

देवपर्व को पुनि सन्माना ॥ रुचि सों करत रहेउ गुनवाना ॥
सदा शांत धर्म स्थित रहहू ॥ नित शुचि दक्ष भाव पुनि गहहू ॥
जीतहु अरि षड्वर्ग सुजाना ॥ रहु विविक्त सेवी गुनवाना ॥
भूसुर जे दैवज्ञ सुजाना ॥ २ ॥ तथा यतीजन ज्ञान निधाना ॥
तीरथ पावन महा सरोवर । पुण्य नदी अरु पावन तरुवर ॥
धेनु वृषभ पति दैवत नारी ॥ महारत्न निशिनाथ तमारी ॥
होंहिं देवता जे निज धामा ॥ इनको सहसा करहु प्रनामा ॥

सत्कार॥

दो॰ ॥ उठि प्रभात ह्वै विमल मन करि आचमन सुजान
प्रथम हि गुरुहि प्रणाम करि करहु शंभु को ध्यान १६

जलपुष्पादि॥

श्रीपति नारायण सुरनायक । चतुरानन गणनाथ विनायक ॥
षन्मुख अरु जग जननि भवानी । सरस्वती कमला जग जानी ॥
लोकपाल पुनि ऋषि तपसाला । जे पावन कीरति महिपाला ॥
इन्हहिं सुमिरि नित प्रति गुनधामा । करहु उदित दिनमणि हि प्रनामा ॥
पुष्प सुगंध पक्व फल पाना ॥ प्रिय नवीन भोजन गुनवाना ॥
पहिले शिवहि निवेदन करहू । वहुरि आपु सेवन अनुसरहू ॥
जो वोलहु जो जपहु सुजाना ॥ करहु जो कछु मज्जन अरु दाना ॥
जो तप व्रत सुमिरन आहवनू । शिवहि समर्पहु सव रिपुदमनू ॥

सो॰ वोलत पीवत खात सोवत देखत सुनत पुनि ॥ २ ॥
विहरत आवत जात सुमिरहु श्री शंकर सदा १७ ॥

छं॰ ॥ वर अक्ष कंकण लसत द्वौ भुजदंड मांहि सुहावनो ।
उरमाल भस्म त्रिपुंड मस्तक विमल अति मन भावनो ।

शिवमंत्र राज षडक्षरी कंह जपत अपने चित्त सों ॥
पशुनाथ पद सुमिरन करत नित रमहु तुम आनंद सों १७
सो॰ दीन्हो तात सुनाय संग्रह सबरे धर्म को ॥ २ ॥
कह्यो पुरानन गाय जेहि को बहु विस्तार सों १८
दो॰ ॥ सब पुराण में गुप्त जो नाशक पाप अपार ॥
अति पावन अरु विजय प्रद विपति विमोचन हार १९
ऐसो शंकर वर्म अब बरनहुं तात सुजान ॥ २ ॥ २ ॥
जेहि सों राउर परम हित ह्वै है सब कल्यान २० ॥
इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे सदाचारोपदेशनं नाम एकादशो विश्राम: ॥ ११ शिव ॥
श्रीगणेशाय नमः श्रीशंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

ऋषभ कह्यो सुनु राजकुमार	सब रक्षा कर हेतु उदार ॥
करि प्रनाम शिव शंभु महेश	शिवमय वर्म करहुं उपदेश
प्रथम पाठ विधि सुनहु सुजाना	जीतहि इंद्री गन अरु माना ॥
निज आसन विधि सहित बिछाई।	बैठै थल पावन सुखदाई ॥
करहि सदाशिव को पुनि ध्याना	जो व्यापक प्रभु व्योम समाना
हृदय कमल वासी अविनाशी	परानंद चिद्घन सुखराशी
जासु तेज सब दिशि महं छावा	मन बानी जेहि जानि न पावा ॥
आदि अंत सूक्ष्म सुखदाई	चिर ध्यावहिं एहि विधि मन लाई

दो॰ कर्म शुभाशुभ जानि तस छुटहिं बंध विस्तार ॥
चिदानंद में मगन मन चिरलौ भली प्रकार ॥ २ ॥
कराहिं षडक्षर मंत्र सों कर अंगन को न्यास ॥ २ ॥
सावधान शिव वर्म पुनि गावै सहित हुलाश २ ॥

ॐ अं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ नं शिरसे स्वाहा ॐ मं शिखायै वषट् ॐ शिं कवचाय हुं ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यं अस्त्राय फट् ॥—

मैं भव कूप परो श्री शंकर ॥
दया करो करुणामय सागर ॥
दिव्य मंत्र वर नाम तुम्हारा ॥
विश्व रूप पुनि ज्योति स्वरूपा
सकल ठौर सो मम रखवारी ॥
अणु से अणु मूरति जेहि केरी
सो अशेष भय ते मोहि नाथा
जेहि शंकर गाहि धरनि स्वरूपा
अष्ट मूर्ति शंकर त्रिपुरारी ॥
जो प्रभु जल को रूप सँवारी
उमानाथ सो शंभु सुजाना ॥

सकल देव मय नाथ कृपाकर
मेरी रक्षा करहु निरंतर
नाश करै उर पाप हमारा ॥
चिद्घन आतम आनँद रूपा
सदा करहु मद नारि पुरारी ॥
बड ते बड अरु शक्ति घनेरी
रक्षा करि नित करहिं सनाथा
धारन कीन्हो विश्व अनूपा ॥
करौ धरणि महँ मम रखवारी
करत लोक जीवन सुखकारी
रक्षहु जल सों मोहि भगवाना

सो॰ प्रलय काल कहँ पाय जारि देहिं जो भुअन सब ॥ २ ॥
उर लीला सुरराय नृत्य करैं जो हर्ष युत ३ ॥ २ ॥
कालरुद्र त्रिपुरारि दावानल अरु पवन सों ॥ २ ॥
रक्षा करहु हमारि सब भय सब संताप ते ४ ॥ २ ॥

चपला कनक सरिस अवभासा
विद्यावर अरु अभय कुठारा
जो तत्पुरुष नाम गुन अपना
सो प्रभु पूरुव ओर हमारा ॥
नील स्वरूप धरे मुखचारी ॥

चारि वदन धर भूरि प्रकाशा
सदा धराहि जो जग रखवारा
गौरीपति सुखधाम त्रिनयना
शंकर सदा होहु रखवारा ॥
आठ भुजा धर प्रभु मद नारी ॥

अंकुश वेद कुठार कृपाला॥ करलीन्हे जो नाथ यचियना॥ सोप्रभु सकल भीति अपहरहू फटिक शंख कुंदेंदु सकाशा॥ अति प्रभाव हर त्र्यक्ष पुरारी॥

डमरू शूल अक्ष गुणमाल जो अघोर वरन्यो गुन अयना॥ दक्षिणदिशि रक्षा मम करहू जासु दिव्य मूरति अवभासा॥ चारि वदन धरति भिभुजचारी

सो॰॥ वेद अक्ष की माल वरदा भय धर चिन्ह वर॥ सद्योजात कृपाल पश्चिम दिशि मोहि रक्षहू॥५॥

दो॰॥ अक्ष माल वर अभय पुनि धरें दंकै शुभ हाथ॥ जो सरोज किंजल्क सम गात रुचिर सुर नाथ ६॥

सो॰॥ चारि भुजा त्रय नयन वामदेव जिन सों कहैं॥ सो शंकर गुन अयन उत्तर दिशि रक्षा करौ ७॥

दो॰ वेद अभय अरु इष्ट पुनि अंकुश टंकै कृपाल धरे पाश डमरू विशिख शूल अक्ष की माल ८

दशभुज धर शंकर मति धीरा ममऊपर दिशि प्रभु ईशाना॥ चंद्र मौलि शंकर असुरारी॥ भालु विलोचन शंभु उदारा॥ जो गिरिजापति भगचख हारी विश्वनाथ शंकर मदनारी॥ श्रुति वर्णित सदा शंभु सुजाना गिरिजा नाथ कपाली नामा॥

पंचानन वर गौर शरीरा॥ रक्षहु पर प्रकाश भगवाना करहु सदा मम शिर रखवारी सो प्रभु मम ललाट रखवारा सो करु मम लोचन रखवारी रक्षहु प्रभु नासिका हमारी करहु करण रक्षा भगवाना॥ रक्षहु नित कपोल गुन धामा

सो॰॥ पंच वक्त्र गुन धाम मुख की नित रक्षा करैं॥ ९॥ वेद जिह्व अस नाम सो रक्षहु रसना मेरी॥ ९॥ ९॥ कंठ गिरीश कृपाल नील कंठ रक्षा करैं॥ ९ ९ ९॥

कर रखवार दयाल शंकर पाणि पिनाकधर १०

भुजा मूलकी मम रखवारी ॥ करिहौ धर्म बाहु त्रिपुरारी
दक्षयज्ञ जिन कियो विनाशा रक्षहु वक्षस्थल चहूं पासा
जो गिरिंद्र धन्वा श्रुतिगाया उदर मोर रक्षहु सुरराया ॥
आशुतोष पशुपति मद नारी करहु मध्यस्थल रखवारी ॥
जो प्रभु श्री गणपतिकर ताता सो हर मम नाभी कर त्राता ॥
जो ईश्वर धूर्जटि भगवाना मम कटि त्राता होहु सुजाना
जो कुबेर को मित्र कृपाला ॥ रक्षहु सो मम ऊरू दयाला ॥
जगदीश्वर जग क्षेम विधाता सो मम होहु जानु युग त्राता
पुंगव केतु जासु वर नामू ॥ रक्षहु मम जंघा गुन धामू ॥
जो महेश सुर वंदित चरनू ॥ सो मम पद रक्षक दुख हरनू ॥

दो·॥ दिनके पहिले याम में माहेश्वर भगवान ॥२०॥
रक्षहु मोहि मध्यान्ह में वामदेव गुनवान ॥ ११ ॥
सो·जे त्र्यंबक जन पाल मेरी तीजे पहर महँ ॥ २० ॥
रक्षा करहु दयाल वृषभध्वज संध्या समय २२
दो·॥ शशिशेखर निशि आदि में गंगाधर अधरात
मृत्युंजय सब काल में गौरीनाथ प्रभात २३ ॥

ग्रह भीतर शंकर रखवारी ॥ स्थाणु नाम बाहिर त्रिपुरारी
उभय मध्य पशुपति सुरराया मम रक्षा करिहौ करि दाया
शंभु सदाशिव जन सुखदाता सो सब ठौर होहु मम त्राता ॥
जब मैं ठाढो होई कृपाला ॥ तेहि छिन भुवन नाथ जन पाला
प्रथमनाथ जो प्रभु सुरनायक चलत बार मम रक्षा दायक
जो वेदांत वेद्य सुर सांई ॥ २४ ॥ रक्षहु बैठे मोहि गोसांई ॥
शिव अविनाशी सुगुन अपारा सोवत समय मोर रखवारा

दो॰ नीलकंठ मम पंथ महँ श्री शंकर त्रिपुरारि
पर्वतादि दुर्गम थल न रक्षा करहिँ हमारि
सो॰ ॥ जो मृग ब्याध उदार शक्ति शंभु करुनायतन
होहु मोर रखवार सो वनवास प्रवास में २५

वीरभद्र वपु शंभु उदारा ॥ प्रलयकाल करि क्रोध अपारा
प्रकटहिँ अट्टहास विकराला । प्रचालित एक ब्रह्मांड विशाला
रिपुदल सागर मांहि हमारा । दुर्निवार भय सों रखवारा ॥
गजरथ हय पदाति बलवाना । सहस लाख अरु अयुत प्रमाना
अक्षोहिनि विशाल अतिभयदाता आततायि जे जन सुर त्राता ॥
तिन सब कहँ मृदु परम उदारा छेदहु प्रभु कुदारि की धारा ॥
त्रिपुर विनाशन केर त्रिशूला सब प्रकार जग रक्षा मूला
प्रलयानल सम तेज अपारा नाशहु सकल चोर परिवारा
शार्दूल वृक भालु कराला ॥ सिंहादिक दुर्जंतु कृपाला ॥
तव पिनाक धनु ईश सुजाना त्रास देहु सब को भगवाना ॥

दो॰ ॥ दुष्ट स्वप्न दुः शकुन पुनि दुर्गति दुर्मन भाव ॥
दुष्ट ब्यसन दुर्भिक्ष बहु दुर्यश दुष्ट स्वभाव २६
सो॰ ॥ विष भय पुनि मम पाप ग्रह पीडा उत्पात सब
जगनायक संताप नाश करौ सब ब्याधि मम २७

अथ सहस्राक्षमंत्र

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सकलतत्वविदूराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्तिभंजनाय सकलजगदभयंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासा

य निराभयायनिष्प्रपंचायनिष्कलंकायनिर्द्वंद्वायनिःसंगाय निर्मलायनिरूपमविभवायनिराधायनित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्ण सच्चिदानंदाद्वयायपरमशांतप्रकाशतेजोरूपायजयजयम हारुद्रमहारौद्रावतार महाभैरवकालभैरवकल्पांतभैरवक पालमालाधरखट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरूशूलंचापबा णगदाशक्तिभिंडिपालतोमरमुसलमुद्गरपाशपट्टिशपरशु परिघभुशुंडीशतघ्नीचक्रायुधभीषणकरसहस्रमुखदंष्ट्रा करालविकटाट्टहासविस्फारितब्रह्मांडमंडलनागेंद्रकुंडल नागेंद्रहारनागेंद्रचर्मधरमृत्युंजयत्र्यंबकत्रिपुरांतकविरू पाक्षविश्वेश्वरविश्वरूपवृषभवाहनविषभूषणविश्व तोमुखसर्वतोरक्षरक्षमांज्वलज्वलमहामृत्युमपमृत्युभ यंनाशयनाशयममशत्रूनुच्चाटयोच्चाटयशूलेनविदारय विदारयकुठारेणभिंधिभिंधिखड्गेनछिंधिछिंधिखट्वांगेनविपोथ यविपोथयमुसलेननिष्पेषयनिष्पेषयबाणैःसंताडयसंताडय रक्षांसिभीषयभीषयभूतानिविद्रावयविद्रावयकूष्मांडवेतालम रीगणब्रह्मराक्षसान्संत्रासयसंत्रासयममाभयंकुरुकुरुवित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासयनरकभयान्मामुद्धारयोद्धारयसंजीवयसं जीवयक्षुत्तृड्भ्यांमामाप्याययाप्याययदुःखातुरंमामानंदयानंद यशिवकवचेनमामाच्छादयाच्छादयत्र्यंबकसदाशिवनम स्तेनमस्ते ॥ —

दो॰॥ परम दिव्य एह वर्म हम तुम कहं दीन सुनाय ॥
अतिरहस्य बाधा सकल तुरतहि देहि नशाय ॥ १६ ॥

शंभु कवच एह परम सुहाई ॥ धारहि जो नर वर मन लाई ॥
तेहि पर शंभु अनुग्रह होई ॥ भीति समीप आव नहिं कोई ॥

आयू जासु भई बहु छीना ॥ मृत्यु ग्रसित रोगातुर दीना ॥
ताहू को अति आयु सुख होई बड़ी आयु पावै पुनि सोई ॥२॥
सब दारिद्र केरि क्षय कारी ॥ सो मांगल्य बढावनि हारी ॥
शंभु कवच धारहिं जो नर वर तेहि कहँ पूजहिं और नर बहिं सुर
जे पातकउपपातक जोई ॥ मुक्त होय सब सो नर सोई ॥
अंत समय शिव वर्म प्रभावा लहहि उमापति पद मन भावा

सो॰ तुमहू धरहु सुजान श्रद्धा करि शिव कवच को ॥
लहिहौ अति कल्यान अतिउत्तम शिव वर्म एह २७

अस कहि योगीश्वर गुनवाना॥ एक शंख अति रौव निधाना ॥
अरिनाशनि वर खड्ग सोहाई नृप सुत कहँ दीन्ही हर्षाई ॥
अभिमंत्रित पुनि भस्म सोहाई सब अंगन महँ दीनि लगाई
बारह सहस नाग बल जोई ॥ नृप सुत को दीन्हो पुनि सोई
भस्म प्रसाद परम बल पावा स्मृति धृति ऐश्वर्य सोहावा॥
अति शोभित नरदेव कुमारा शरद भानु सम तेज अपारा॥
कर जोरें बैठा गुरु आगे ॥ बोले बहुरि ऋषभ अनुरागे
तात खड्ग जो एह हम दीन्हा ॥ तपो मंत्र अनुभावित कीन्हा

सो॰ ॥ सो एह खड्ग उदार दर्शै हौ जेहि शत्रु कहँ ॥२॥
देखत तीक्षण धार मरिहै जिमि नर मृत्यु लखि २८
शंख केर अति नाद जे जे सुनिहैं शत्रु तव ॥२२॥
गिरिहैं सहित विखाद मूर्छा खाय अचेत ह्वै २९

खड्ग शंख द्वौ दिव्य उदारा ॥ एक करिहैं रिपु सेन संहारा ॥
निज सेना के पे रखवारे ॥ तेज प्रताप बढावन हारे ॥
इन दुहु के प्रभाव नरपाला॥ शंभु कवच के तेज विशाला
द्वादश सहस नाग बल पायो भस्म प्रभाव तेज सर सायो ॥

इन सब कौ तुम पाय महा बल	जीतहुगे निज शत्रुन कौ दल ॥
निज पितु कर सिंहासन पाई ॥	पालहुगे भूतल हर्षाई ॥ २१

सो॰ ॥ एहि करि उपदेश जननि सहित भद्रायु कहँ ॥
गये यथा रुचि देश वर पूजन लहि अभय कृत २२

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ३ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे श्री शिव धर्म प्रकाशनं नाम द्वादशो विश्रामः ॥ १२ ॥ शिव ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः अथ त्रयोदशः

दो॰ ॥ नृप नंदन को चरित में सकल कह्यौ मुनिराय ॥
सुत नारिहि लखि नृप दुखी भयो सो देहु सुनाय १

वज्रवाहु जो रह्यौ नृपाला ॥	तासु शत्रु मागध महिपाला
नाम हेमरथ वाहु विशाला	रण उत्कट अति तेज भुआला
लै निज साथ सेन वहु तेरी ॥	नृप कर देश लियो तेहि घेरी
मागध सेना पति वलवाना	लागे करण उपद्रव नाना ॥
वसु मणि गन लूटहिं जो पावैं	घरन मांहि कोउ अग्नि लगावैं
गृहण करैं कोई कन्या धन ॥ २ ॥	कोई धाय धरहिं तरुनी गन ॥
कोई गृहण करैं नर गोधन ॥	एकहि अन्नराशि कोउ भाजन
कोइ नाशहिं ग्रह पुर उद्याना ॥	कोउ आराम सस्य वलवाना
एहि विधि करि वहु देश विनाशा	लिये धनादिक सहित हुलासा
वहु विधि करि उत्पात घनेरा ॥	वज्रवाहु कर पुर तिन घेरा ॥

दो॰ एहि प्रकार निज नगर वहु लखि पीडित निज देश ॥
समर हेतु सेना सहित निकरा प्रवल नरेश ॥ ३ ॥

जे नरपति भूपाल सहायक	सचिव सहित सेना के नायक
लरन लगे मागध संग जाई ॥	निज वल तेज प्रताप देखाई ॥

वज्रबाहु रथ बैठि सयाना ॥ पहिरि कवच कर गहि धनुवाना
करत भयो शर वृष्टि घनेरी ॥ मारी रिपु सेना बहुतेरी ॥ २ ॥
वज्रबाहु का देखि प्रतापू ॥ ३ ॥ सब मागध संभारि शर चापू
वेग सहित नरपति दिग जाई घेरो सब दिश शर वर्षाइ
बहुत काल करि समर अपारा कीन्हो बहु दल कर संहारा ॥
एहि प्रकार अति वल दर्शाई लही विजय शोभा अधिकाई
काहू धनु कर छेदन कीन्हा ॥ काहू ताहि विरथ करि दीन्हा ॥
एक आय सारथि संहारा ॥ ४ ॥ काहू कारो खड्ग उदारा ॥ ५ ॥

दो॰ टूटो रथ हत सारथी छिन्न खड्ग अरु चाप ॥ २ ॥
बाँधि लियो नरपाल कहँ अति दर्शाय प्रताप ३॥

सो॰ ॥ मागध अति वलवान जीत सेन सब मंत्रि गन
मुदित बजाय निशान घुसि आये सब नगर में ४

रथ गज बाजि ऊंट पशु नाना अवला गण धन बहु परिमाना
नरपति की कन्या वर दारा ॥ तथा अमित दासी परिवारा
बहु मणि भार कोश समुदाया मागध गहि लीन्हो मुनिराया
एहि प्रकार करि नगर विनाशा गोधनादि लै सहित हुलासा
वज्रबाहु कहँ रथ महँ बाँधी ॥ चले शत्रु निज कारज साधी ॥
एहि विधि भा कोलाहल भारी देश नाश आकुल नर नारी ॥
नृप किशोर भद्रायु सुजाना ॥ सकल खबरि पाई वलवाना
सपत्नीक निज पितु कर बंधन देश विनाश सेन परिमर्द्दन
कीन्हो सिंहनाद वलवाना ॥ साथ लियो निज सखा सुजाना
महाशंख अरु खड्ग विशाला शंभुवर्म वर्मित महिपाला ॥
सखा सहित ह्वै तुरग सवारा गयो तहाँ करि वेग अपारा ॥
नगर लोग देखे तेहि जाई ॥ शत्रुजनित पीड़ा अधिकाई

एक बंधे कोई रोदत भारी ॥ हतधन गोधन दुहिता नारी ॥
सूनो राज भया वन देखी ॥ प्रगट भयो उर क्रोध विशेखी

दो॰॥ रिपुदल माँहि प्रवेश करि नृप सुत अति बलवान
निज कोदंड चढाय के वर्ष न लागे बान ॥ ५ ॥

फिरी मगध सेना तेहि देखी ॥ घेरि लियो करि क्रोध विशेखी
तिन मारे अति उल्बण बाना ॥ तन बेधित नृप सुत बलवाना
शंभु कवच रक्षित गत पीरा ॥ रन लागे नहिं अति रणधीरा
यथा मत्त गज कुसुम प्रहारा ॥ सहि लीन्ही शर वृष्टि अपारा
रथ पदाति गज तुरग सोहाये ॥ नृप सुत कोटिन मारि गिराये
नृप नंदन पुनि कीन्ह प्रहारा ॥ सारथि सहित एक नृप मारा
बनिग पुत्र कहँ सूत बनाई ॥ ताही रथ पर चढि हर्षाई ॥
रण भीतर विचरहिँ रन धीरा ॥ जिमि पंचानन मृग कुल भीरा
एहि विधि नृप नंदन लखि योधा ॥ धनु चढाय धाये करि क्रोधा ॥
चमूपाल ते अति बलवाना ॥ घेरत भे सब समर सुजाना

दो॰ नृप सुत देख्यो शत्रु बल घेरि लियो मोहि आय ॥
तिन सबके सन्मुख भयो निज पौरुष दर्शाय ६॥

सो॰॥ दारुन परम कराल काल जीभ सम चपल अति
मनहुं हुताशन ज्वाल दर्शाई निज खड्ग वर ७॥

देखी जिन २ खड्ग उदारा ॥ तत्प्रभाव लहि मोह अपारा
निहत भये बहु रिपु समुदाई ॥ यथा कीर पावक दिग जाई ॥
सकल सेन कर घात विचारा ॥ महाशंख वर राजकुमारा ॥
बहुरि महाभुज दीन बजाई ॥ सब दिशि रही तासु ध्वनि छाई
जे गज के जे तुरग सवारा ॥ जे रथ पर बैठे वरि आरा ॥
ते सब सुनत महा ध्वनि भारी ॥ गिरे धरन तन दशा बिसारी ॥

मृतसमान वह सेन निहारी । नहिं मारी रण धर्म विचारी ॥
पितु समीप तुरतहि चलि आयो । रिपु बंधन सों ताहि छुड़ायो ।

दो॰ ॥ नृप गृह रानी पुर योषिता अरु मंत्रिन की नारि ॥
बालक बाला धेनु धन सब कर बंध निवारि ॥ ८ ॥

अत्याश्वास सबन कर कीन्हा । सब कहँ अभय दान तेहि दीन्हा ।
बहुरि शत्रु गन की बर नारी ॥ तथा मत्त गज गिरि अनुहारी ।
बाजि पवन मन बेग अपारा ॥ कंचन स्यंदन रुचिर उदारा ।
दासी चंद्रानन बहु तेरी ॥ रिपु गन की बर बस्तु घनेरी ।
बेग सहित एह सब हरि लायो । मागधेश के ढिग तब आयो ।
बांधि लियो तेहि को करि क्रोधा । मंत्री सेना पति बर योधा ॥
बज्र बाहु सेनप बलवाना ॥ तथा मंत्रि गन परम सुजाना ।
प्रथम भग्न है सब दिशि धाये । नृपसुत विजय देखि पुनि आये ।

दो॰ ॥ देख्यो राजकुमार बल विस्मय भयो अपार ।
आयो है कोई देव बर मन कीन्हो निर्द्धार ९ ॥

सो॰ अहो हमारो भाग उदय भयो तप केर फल ॥
कहँ सहित अनुराग नृपसुत महिमा गुन कथन १० ।

एहु कोउ प्रबल बीर बर आयो । मृतसम हम कहँ बहुरि जिवायो ।
योग सिद्ध तपसि है सुजाना । अथवा एहु कोई अमर प्रधाना ।
इन कर है अति बल मन भायो । किये अमानुष कर्म सो हायो ।
इन की जग ठकुराइनि माता । पिता शंभु जग सम विधाता ।
जेहि ते इन की शक्ति अपारा । नव अक्षौहिणि दल संहारा ।
एहि विधि अति अचरज बहुताई । परम हर्ष नहिं हृदय समाई ।
करहिँ परस्पर बहुत बड़ाई ॥ पूछहि तासु चरित शिर नाई ।
नृप सुत आपु हि नहिं अगरायो । बहुरि पिता के तीर सिधायो ।

सो॰ विस्मय हर्ष अपार वज्र वाहू के उर भयो ॥ ः ॥
आनंद जल की धार ह्वै नयनन नृप के स्रवै ११ ॥
सो॰ नृपसुत कियो प्रनाम तव निज पितु कहँ शिर नाय
नृपति प्रेम कातर हृदय लियो ताहि उर लाय १२ ॥

को तुम तात सुमति गंभीरा ॥ के गंधर्व देव नर वीरा ॥ ः ॥
कौनि मातु को जनक उदारा ॥ कौन देश कह नाम तुम्हारा ॥
रिपुगन पर वश हम सुख हीना ॥ मृतक समान हत तेज मलीना ॥
कौन हेतु करुना सरसाई ॥ सपत्नी क मोहि लियो छुडाई
धीरज तेज प्रताप सोहावा ॥ वल उत्कर्ष कहां तुम पावा ॥
मनुज सुरासुर त्रिभुअन मांही जीति सकै कोहि को तुम नाहीं ॥
वरु मम जन्म सहस चलि जाहीं तुम सों कवहुँ उरिन हम नाहीं
पुत्र दार पुर राज विहाई ॥ ः ॥ तव दिशि हृदय प्रेम सरसाई
हमरे प्रानन के रखवारे ॥ ः ॥ तेहि कारन मम प्राण पिआरे
मम तीअ जीवन तव आधीना सकल कहो निज चरित प्रवीना
एहि प्रकार पूछा नर नाहा ॥ नृपसुत बोला सहित उछाहा
वैश्य नाथ कर तनय पिआरा सुनय नाम एह सखा हमारा ॥
इनके ग्रह में जननि समेता वास करैं नित कृपानिकेता ॥

सो॰ ॥ भद्रायू मम नाम पुनि कहिहौं आपन चरित्र ॥
जाहु नगर गुन धाम निज दारा प्रिय सुहृद सह १३
ह्वै है तव कल्यान शत्रुन की भय जनि करो ॥ ः ॥
सुख विहरहु गुनवान नृप सिंहासन बैठ के १४

जनि छोडहु इन को रिपु दमनू जौ लौं होय न मम आगमनू
जैहौं भवन भई मोहि देरी ॥ तहाँ होत ह्वै है अब सेरी ॥ ः ॥
एहि विधि नृप सन राज कुमारा विदा मांगि निज ग्रह पगु धारा

जननी कहँ सब चरित सुनायो । हर्ष वारि चख हृदय लगायो ॥
पद्माकर पुनि हृदय लगावा । पूजा परम प्रेम उर छावा ॥ २ ॥
प्रमुदित वज्रबाहु नरपाला । प्रविशे पुनि निज भवन निहाला ॥
सुत वनिता सह कियो निवासा । सचिव सहित मन परम हुलाशा ॥
सो रजनी गत भयो विहाना । ऋषभ योगि वर परम सुजाना ॥

सो॰ ॥ गे निषधेश्वर धाम चंद्रांगद जिन सो कहैं
कह्यो अमानुष काम भद्रायू कर जन्म पुनि १५

दो॰ ॥ सब चरित्र कहि न्रपति कहँ एह अनुशासन दीन
निज तनया तेहि देहु तुम सुनि न्रप शिर धरि लीन १६

प्रेम सहित एहि विधि समुझाई । योगीश्वर गवने हर्षाई ॥ २ ॥
सीमंतिनिपति परम उदारा । बोलि पठायो राजकुमारा ॥
लगन शोधि पुनि सहित उछाहा । न्रपसुत को करि दीन्ह विवाहा ॥
कीर्त्तिमालिनी जो न्रप कन्या । वय माधुर्य्य रूप गुन धन्या ॥
हेम सिंहासन उभय विराजे ॥ दिव्य वसन भूषन छवि छाजे ॥
वरपत्नी सोहें तहँ कैसे ॥ २ ॥ विधु रोहिणी द्वौ सुंदर जैसे ॥
ब्याह भये पीछे सोउ आयो ॥ २ ॥ वज्रबाहु कहँ नेवत पठायो ॥ २ ॥
भवन लाय पूजन बहु कीन्हा । निषधेश्वर आगे ह्वै लीन्हा ॥

सो॰ ॥ नृपकिशोर शिर नाय वज्रबाहु चरनन परे ॥ २ ॥
बल करि लियो उठाय हृदय लगायो प्रीति अति १७

पुनि बोला निषधेश्वर पांहीं । इन कौ मैं जानत हौं नांहीं ॥ २ ॥
निषधाधिप एह तनया माता । हैं हमरे प्राणन कर दाता ॥
शत्रुविनाशक अति बलवाना । महा वीर अरु परम सुजाना ॥
एहि कौ कुल उत्पत्ति सोहाई । मोहि कृपा करि देहु सुनाई ॥
एहि विधि पूछा जब नरनाहा । निषधेश्वर तब सहित उछाहा ।

भुजगाहि ताहि रहसि बैठारा ॥ बिहंसत मुख एह वचन उचारा
एह तुम्हार है राज कुमारा ॥ रहा रोग आकुल एह बारा ॥
तासु मातु पुनि रोग दुखारी ॥ उभय तजे तुम विपिनि मंझारी

दो॰ ॥ रानी वन भरमत फिरी अति कलेश दुख दीन ॥
वैश्याधिप ताहि को बहुरि सब विधि पालन कीन ९८

दैव योग एह मरो कुमारा ॥ योगी नाथ ऋषभ पगु धारा
रानी को दुख शोच मिटाई ॥ मुनि वर एहि को दियो जिआई
योगी राज प्रभाव उदारा ॥ ॥ लहो जननि सुत रूप अपारा
तिन ही खड्ग शंख वर दीन्हा जेहि बल रिपु दल इन क्षय कीन्हा
बारह सहस नाग बल धारी ॥ शंभु वर्म इन की रखवारी ॥
विद्या सकल ज्ञान नर नाहा ॥ मम दुहिता संग भयो विवाहा
जननी सह अव सहित उछाहू इन कहं निज मंदिर लै जाहू ॥
इन पर हैं प्रसन्न भगवाना पावहुगे अतिशय कल्याना

सो॰ ॥ एह सब चरित सुनाय श्री निषधेश्वर न्रपति वर
महिषी दई दिखाय बैठी जो रनि वास महं ॥ ९९ ॥

सब सुनि लखि बालक प्रिय नारी बाढी ताहि लाज अति भारी ॥
बनो मूढता बस जो काजा ॥ कीन्ही निज निंदा बहु राजा ॥
उभय दरश बाढो अति मोदा ॥ लह्यो परम आश्चर्य्य प्रमोदा
पुलक शरीर न कछु कहि आयो महिषी बालक हृदय लगायो
बहुत भांति पुनि भा सत्कारा ॥ भई रुचिर भोजन जेवनारा
निज महिषी सुत बधू समेता बिदा भये न्रप गये निकेता ॥
न्रप किशोर जब मंदिर आयो पुर ग्रह सब लोगन सुख पायो
प्रमुदित सब परिवार सप्रीती एह विधि गयो काल कछु बीती
बज्रबाहु सुरलोक सिधायो ॥ न्रप सुत न्रप सिंहासन पायो ॥

करन लगे प्रथिवी कर पालन ॥ भयो न तेहि समान महिपालन
मागधेश न्रप बंध निवारी ॥ ब्रह्म श्राविन के दिग वैठारी ॥
तेहि सन संधि मिलाप दृढाई ॥ मगध देश को दियो पठाई ॥

छं॰॥ शिव योगि वर की एक निशि पूजा जो विधि सों वनि परी॥
मुनिराज तासु प्रभाव न्रप सुत केरि सव आपद हरी ॥२॥
पायो न्रपासन तेज पौरुष वढत भानु दिन प्रति नयो ॥२॥
निषधेश कन्या सहित प्रमुदित भोग सुख पावत भयो १

इति श्री मत्परम हंस परि व्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी एम कृष्ण भारती शिष्य माधवा नंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे भद्रायु विजय विवाह प्रकाशन परो त्रयोदशो विश्रामः १३

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः॥ अथ चतुर्दशः॥

सो॰ पितु सिंहासन पाय भा भद्रायु नरेश जव ॥२॥
एक दिवस मुनिराय प्रिया सहित वन महं गयो १॥

जहं अशोक विकसत अनुकूला ॥ नव पल्लव रुचि सुंदर फूला॥
मल्लि खंड कुसुमित अति नीके ॥ गूंजहिं भ्रमर भावते जी के ॥
नव केसर सौरभ जहं आवे ॥ भोगि हृदय उत्साह वढावै ॥
वर अशोक तरु वर की माला ॥ श्यामल छाया सघन तमाला ॥
माधवि लता भवन जहं सुंदर ॥ पुष्प भार महि कुशत मनोहर ॥
अरुन पत्र वर वौर विशाला ॥ अति शोभित जहं विटप रसाला ॥
वन पुन्नाग परम रस खानी ॥ आवति जहं वर कोकिल वानी ॥
ऋतु वसंत लखि राजकुमारा ॥ कियो नारि सह विपिन विहारा ॥
कछुक दूर पर वाघ कराला ॥ आगे देखत भा नरपाला ॥
सो द्विज दंपति पाछे धायो ॥ तिन दुनहुं वहु रुदन मचायो ॥

दो॰॥ पाहि २ महाराज न्रप करुना सिंधु अुआल ॥

हमरे भक्षण करन हित शार्दूल विकराल ॥८॥

आवत सकल प्राणभयकारी गर्जत घोर महारव भारी ॥
जेहि विधि खायन देह हमारी करहु तथा हमरी रखवारी ॥
एहि प्रकार सुनि विप्र गोहारी चाप लियो नरपति भयहारी
तौलौ द्विज गृहिणी कहँ आई पकरि लियो मृगपति दुखदाई
हा प्रीतम मम परम सुजाना हा जगपति शंकर भगवाना
द्विज नारी बहु कीन्ह पुकारा बहुत बाण नृप किये प्रहारा
गये न कछु मृगराज उदारा गिरिवर यथा वृष्टि जलधारा
मृगपति बार बांक नहिं भयउ विप्रवधू कहँ सो लै गयउ ॥
भूसुर उर भा अति संतापू ॥ करन लाग एहि भाँति विलापू
हा पति दैवत प्राण पिआरी मोहि त्यागि प्रिय परम दुखारी
जो तुम परम लोक पगु धारा ॥ केहि विधि रहिहै प्राण हमारा
महा धनुष नृप तव कहँ भयऊ बारह सहस नाग बल गयऊ
कहाँ गये वे अस्त्र तुम्हारे ॥ बनचर देखि शक्ति सब हारे

दो॰ ॥ शंख खड्ग तव कहँ गयो धनुर्वेद को ज्ञान ॥९॥
परम प्रभाव प्रताप तव पुनि बल अमित प्रमान ॥

जो न रहा तव तेज अपारा ॥ विफल भयो सब आजु तुम्हारा
बनचर क्षुद्र जीव जेहि कारन तुमसों है नहिं सको निवारन
दुखी प्रजा रक्षा जिमि होई ॥ परम धर्म नरपति कर सोई
निज कुल धर्म न तुम निर्वाहा ॥ वृथा तोर जीवन नरनाहा ॥
शरणागत रक्षा नृप करहीं निज धन प्राणनहूं परिहरहीं
तेहि विहीन जो नृपति अयाना सो नृप जीवत मृतक समाना
दान विहीन जिअत धनवाना धिग जीवन सो मरन समाना
करहि न जो आरत रखवारी तेहि गृहस्थ सन भलो भिखारी

दो॰ ॥ वरविषभोजन नृपति कहँ उत्तम आगि प्रवेश ॥
रक्षा दीन अनाथ की नहिं करि सके नरेश ४ ॥ ८ ॥

सो॰ कियो विलाप अपार नृप निंदा एहि भांति द्विज
लागो करन विचार शोच भयो नृप हृदय अति ५

अहो नष्ट पौरुष मम भयेऊ
दैव विपर्य्यय मम ह्वै गयेऊ ॥
नाश भई कीरति उजि आरी ॥
लगो मोहि पातक अति भारी
धर्म कुलोचित नष्ट हमारा ॥
भयो प्रगट दुर्भाग अपारा ॥
निश्चय मम संपति क्षय ह्वै है
आयू सहित राज मम जैहै ॥
आयू पुत्र भोग धन दारा ॥
दैव योग संपति परिवारा ॥
उदय होंहि छिन महँ सव आई
छिन महँ पुनि सव जांहि विलाई
तेहि ते लखि नश्वर संसारा ॥
हरिहौं द्विज कर शोच अपारा
द्विजहित अपन प्राण परिहरिहौं
जेहि विधि सुखी होव सोइ करिहौं
एह निश्चय निज मन दृढ़ राखो
पद गहि द्विज वर कहँ समुझायो
मोपर विप्र कृपा अव करहू ॥
ज्ञान धाम शोके परिहरहू ॥
लेहु विप्र धन रत्न अपारा ॥
एह रानी एहु राज हमारा ॥
तथा मोर तन तव आधीना ॥
माँगहु जो रुचि होय प्रवीना
धर्म नीति करुना रस सानी ॥
सुनि वोला द्विज वर एह वानी
नयन हीन दर्पण केहि काजा ॥
पुस्तक जिमि मूढ़हि महराजा
धवल धाम भिक्षू कहँ जैसे ॥
प्रिया हीन हम कहँ सव तैसे ॥
भोगे नाहिं यथा रुचि भोगा ॥
भयो मोहि प्रिय नारि वियोगा
कियो चहौ जो मम दुख दूरी ॥
तौ नृप देहु प्रिया निज रूरी ॥
गुरु अनुशासन विन नहिं विचारी
वोलहु नहिं द्विज धर्म सँभारी
परदारा अभिमर्श गोसाई
सुगति सुकीरति देहि नशाई

दो॰ ॥ दाता हैं गज वाजि के देहिं राज धन मान ॥ ८ ॥

ग्रहणी दाता नहिँ सुने करि देखहु अनुमान ॥ २२ ॥
परदारा के भोग में द्विज वर जो अघ होय ॥ २२९ ॥
सो॰ निःकृति कीन्हो वहुरि मेंटि सकै नाहिं कोय ७ ॥

सुनि भूसुर एह उत्तर बखाना । तप प्रभाव का तुम नहिं जाना
ब्रह्म घात अघ नृप किन होई ॥ सुरापान कर पातक जोई ॥
तप बल मोहि तिन कर भय नाहीं । परदारा केहि लेखे माहीं ॥ २ ॥
अपनि प्रतिज्ञा जनि परिहरहू । तुरतहिँ नारि दान मोहि करहू
नतरु नर्क ह्वै है नरपाला ॥ तुम ने जो न धर्म प्रतिपाला ॥
विप्र गिरा सुनि नृप भय पायो । निज मन में एहि विधि ठहरायो
द्विज रक्षा जो नहिँ वनि आई । तौ ह्वै है पातक आधिकाई ॥
एहि कारन देहौं निज दारा ॥ तरि जैहों में पाप अपारा ॥
पुनि पावक महँ एह तन जारी । पलहूँगो कीरति उजिआरी
एहि प्रकार निज मनहि दृढाई । चिता रोपि तहँ पावक लाई ॥
वहुरि वोलि द्विज नृपति सुजाना । करि दीन्हो महिषी कर दाना ॥
कियो निमज्जन नृप गुन धामा । देवन कहँ पुनि कीन्ह प्रनामा ॥

दो॰॥ अग्नि प्रदक्षिण तीनि करि कियो शंभु को ध्यान ॥
गिरो चहै ज्यों अनल महँ नृप शिव भक्त सुजान ८
सो॰॥ त्यों प्रगटे भगवान नरपति को वारन कियो ॥
देखा नृपति सुजान पंचानन विश्वेश कहँ ९ ॥

कोटि भानु सम तेज अपारा ॥ गौर मृणाल गात उजिआरा
नैन विशाल तीनि छवि देहीं । नाग विभूषन मनहरि लेहीं
चंद्रकला अवतंश कृपाला । पीत जटा शिर रुचिर विशाला
तेहि पर गंग तरंग सोहाई ॥ रूप मनोहर वरनि न जाई ॥
अति शोभित गज चर्म सोहावा । नाग किरीट परम छवि छावा

शूल पिनोक अभय वरदाना ॥	मृग कुठार अरु चर्म कृपाना
शुभ खट्वांग पद्म कर सोहैं	वृषभारूढ मुनिवर मन मोहैं
नीलकंठ प्रभु दीन दयाला ॥	सरं। नयन सन्मुख महिपाला
देव कुसुम वर्षा नभ करहीं ॥	ऋषि मुनिवर जय २ उच्चरहीं
बाजहिं रुचिर देव सहनाई	नाचहिं देव वधू कल गाई ॥
लोकपाल मघवादि सयाने	शंकर रूप देखहिं सचु पाने ॥
चारिहु दिशि सनकादि सुजाना	देव ब्रह्म ऋषि ज्ञान निधाना
सब के मध्य सोह करुनाकर	उमा सहित त्रिभुअन पति शंकर
भक्ति नमूठ दो नरपाला ॥	वर्षहिं करुना सार कृपाला
दर्शन सों अति आनंद बाढा ॥	नरपति हृदय प्रेम अति गाढा
प्रेम वारि लोचन मन माना	अंग रोम भे पनस समाना ॥
गद्गद कंठ मनोहर वानी ॥	हाथ जोरि विनती नृप ठानी

छं॰ ॥ प्रणमामि देव सनादि मज मव्यक्त शंभु मुमापतिं
श्री सकल देव प्रधान मव्यय मगुन गुनमय सद्गतिं ॥
वंदेत्य कारण कारणं तं सर्वगं कारण परं ॥ २२ ॥
आनंद चिद्घन मीश्वरं महंयामि गिरिजापति हरं १
तव गूढ धाम अपार महिमा जग हृदय वासी सदा ॥
हे विश्व कारक साक्षी तोहि भक्त जन खोजहिं मुदा
तव मिलन कारन विदुख नित मति बुद्धि मन करि ध्यावहीं
बहु योग यत्न उपाय करि तव चरन में चित लावहीं २
जे एक भाव विचारि सुमिरहिं तिन्हहिं एक स्वरूप हो
जे करहिं नाना बुद्धि तिन को अमित रूप अनूप हो ॥
नित विगत माया भ्रम सनातन नौमि शंभु अगोचरं
किमि कहौं ध्यावहुं नाथ तोहि मन पंथ सों तव पद परं ३

(margin) दोहा ॥ हरिगीतछंद ॥

सो॰ आपु मन बानी अगोचर योगि राज दुराप जो ॥ ः ॥
परमात्म रूपहि विगत मोहाहि तुमहिं विन तोहि जानको
जो गुन प्रकृति महँ लीन अति विषयानुराग बढावहीं ॥
सो गिरा मम तव सिंधु गुन कर पार केहि विधि पावहीं
जे जानि प्रणतारति विभंजन शरण तव पद की गहैं
ते भक्ति भावित हृदय सब संसार दुख छिन में दहैं ॥
सोई जानि मैं भव दाव पीडित भजहुँ राउर चरन को ॥
नहिं और सुगम उपाय कोउ भव भीति दुख के तरन को
सो॰ ॥ नमो नमो देवेश महादेव श्री शंभु हर ॥ ः ॥
पद वंदौं अखिलेश तीनि रूप गिरिजा रमन ९०॥

भव भव विभव पराभव हेतू । वंदौं श्री शंकर वृषकेतू ॥ ः ॥
नमो नाथ विश्वादि स्वरूपा । सब जग प्रत्य साक्षि अनूपा
सत चित तत्त्व रूप भगवाना । वंदौं प्रभु सुख बोध निधाना ॥
वंदौं सकल क्षेत्र के वासी ॥ क्षेत्रा ऽभिन्न शक्ति अविनासी
नौमि प्रसक्त स्वरूप सुजाना ॥ सक्ता ऽऽभास रूप भगवाना
वंदौं निराभास गुण सागर । सतनित आतम बोध उजागर
वंदौं शुद्ध रूप जगदीशा ॥ दूर समीप चराचर ईशा ॥
नौमि नाथ सब कर्म विहीना । वंदौं सब गुनमय गुन हीना ॥
जो वेदांत वेद्य त्रिपुरारी ॥ वेद मूल वासी असुरारी ॥
वंदौं विविधि कृपा गुनवाना । गुन वृत्तिन सों भिन्न सुजाना

दो॰ ॥ नमो नमो कल्यान बल फल दायक कल्यान ॥
नमो ऽनंत गुन अनंत प्रभु शंकर ज्ञान निधान ९१

नौमि अघोर रूप सुखदाई । जो सुघोर दुर्जन दुखदाई ॥
घोर अघौघ विदारण शंकर । नौमि पाय नमत तरुन दिवाकर

वंदौं भर्ग सदा जनरंजन ॥८॥ नौमि नित्य भव बीज विभंजन
नौमि शिवं गुरुरूप ममायं ॥ विशदीकृत निज गुन समुदायं
पाहि२ प्रभु त्रिभुअन नाथा ॥ शंभु सनातन करहु सनाथा
पाहि रुद्र म्रत्युंजय शंकर ॥ विरूपाक्ष अव्यय करुनाकर
हे शशांकशेखर सुरराया ॥ शांत रूप हम पर करु दाया ॥
गौरीपति गोपति गुन अयना विश्वनिवास हुताशन नयना

दो॰ ॥ गंगाधर जगमथन शिव पावन कीरति धाम
भूतनाथ भूधर भवन पुनि२ करौं प्रनाम ॥ ८ ॥

सो॰ ॥ एहि प्रकार नरपाल कीन्ही अस्तुति भक्ति सों ॥
गिरिजा सहित कृपाल ह्वै प्रसन्न बोलत भये ॥१३

हौं प्रसन्न तोहि पर नरदेवा सुनि तव अस्तुति लखि तव सेवा
कीन्ही मन अनन्य सेवकाई मम पूजा नित प्रेम दृढाई ॥
राउर भाव परीक्षा कारन ॥ आये विप्र भेष करि धारन
द्विजनारी गिरिराजकुमारी ॥ जेहि लेगयो म्रगपति भयकारी
मायामय म्रगराज शरीरा ॥ तव शर वेधित भै नहिं पीरा ॥
तव धीरज अवलोकन काजा तव महिषी मांगी महिराजा
मम पद अहै प्रीति जिमि तोरी रानिहुं कहं मम भक्ति न थोरी
मोहि अतिशय परितोषित जानी दंपति मांगहु वर अनुमानी
सुनी गिरा करुनाम्रत सानी ॥ हाथ जोरि बोला न्रप बानी ॥
गिरा अगोचर ज्ञाननिधाना भयो नयन गोचर भगवाना
मांगहुं और कहा वरदाना ॥ तदपि देहु यह कृपानिधाना
एह रानी अरु मम पितु माता सह सुत पद्माकर सुखदाता
मोहि समेत ये सकल गोसांई निज समीप वासी करु सांई ॥
कीरति मालिनि न्रप पटरानी प्रेम सहित बोली एह बानी ॥

निषधेश्वरममपितुयशखानी ॥ सीमंतिनिममजननिसयानी ॥
ते द्वौ वसहिं नाथ नव तीरा ॥ मुदित सदा गहि दिव्यशरीरा

सो॰ जनवत्सल भगवान एवमस्तु कहि दुहुन सों ॥
दै अभिमत वरदान शंकर अंतर्हित भये २४ ॥

जेहिवर को सुर लोगसिहाहीं सो पायो नरपति शिव पाहीं
प्रिया सहित बहु भोग सोहाये भोग किये महिपति मन भाये
अव्याहत बल सहित समाजू कीन्हो अयुत वर्ष लौं राजू ॥
निज पुत्रन कहँ दै न्रप आसन प्रियासहित नरपति प्रमुदितमन
गवनो श्री गिरिजापतिधामा ॥ शंभु प्रसाद लह्यौ मन कामा
चंद्रांगद न्रप कीरतिखानी ॥ सीमंतिनी सहित प्रिय रानी ॥
प्रेम सहित करि शिव पदपूजन पायो शंभु धामजन रंजन ॥

सो॰ ॥ एह विचित्र अघ हारि अति रहस्य त्रिपुरारि यश
कहहिं सुनहिं नरनारि शिव पावहिं बहु भोग सुख २५

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्णभारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे भद्रायु महिमा प्रकाशनं नाम चतुर्दशो विश्रामः १४ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पंचदशो विश्रामः ॥ १ ॥

सो॰ ॥ मुनिवर दई सुनाय ऋषभदेव महिमा परम ॥
वरनत हैं मन लाय चरित अपर शिव योगि को

दो॰ महिमा रुचिर विभूति की अब कहि हैं मुनिनाथ
जाहि सुनत ही होंहि गे पापिहु लोग सनाथ २ ॥

हैं शिवयोगि महातप धामू ॥ वामदेव जिनकर शुभ नामू ॥
हैं निर्मम अरु द्वंद विहीना ॥ समदर्शी निःसंग प्रवीना ॥
निज आत्माराम जित क्रोधा गृहदारा वर्जित अति बोधा ॥

गति जिन की जानी नहिं जाई ॥ फिरहिं तुष्ट मन महि हर्षाई ॥
अंत सो न व्रत नित आचरहीं कछु संग्रह कबहूं नहिं करहीं
लोक अनुग्रह बस मन मांहीं दूसरा जिन्हहिं काज कछु नांहीं
एक बार अति घोर गंभीरा ॥ क्रौंचारन्य गये मति धीरा ॥
मानुष के रिज हों गमि नांहीं बसै ब्रह्म एकस तेहि मांहीं ॥
क्षुधा तृषा दुख परम दुखारी ॥ रूप भयंकर दारुण भारी ॥
शिवयोगी कहं तेहि जब देखा रही ताहि बहु क्षुधा विशेखा
मुनि सन्मुख भक्षणहित धायो महा भयानक मुख फैलायो
आवत देखि ताहि निज तीरा ॥ शिवयोगी विचले नहिं धीरा

दो॰ ॥ धाय गहो तेहिं खान हित यदपि किये अघ भूरि ॥
पर्श होत मुनि देह के भयो पाप सब दूरि ॥ ३ ॥

नहीं अधम कोउ जासु समाना मुनि प्रसंग भा निर्मल ज्ञाना
जिमि चिंतामणी के ढिग जाई तुरत लोह कंचन ह्वै जाई ॥
जंबू नदी पाय मुनि राई ॥ २ ॥ जिमि माटी सुवर न ह्वै जाई ॥
मानसरोवर वायस जाई ॥ हंस होय निर्मल तन पाई ॥
कीन्हो जबहि अम्रत रस पाना अमर होय जेहि विधि गुनवाना
तथा साधु संगम मुनि राया ॥ हरै पाप दलि दुख समुदाया
दर्श पर्श सेवन अरु भाषन ॥ कौन सुसंगति लहि भयो सज्जन
सत संगति दुर्लभ मुनि राई ॥ मिलै ना बिन बहु पुन्य सहाई

दो॰ ॥ ब्रह्म निशाचर घोर अति क्षुधा विकल मुनिराय ॥
बेगि तृप्त अति ह्वै गयो उर आनंद न समाय ॥ २ ॥
सो॰ ॥ शिवयोगी तन योग श्वेत भस्म संपर्क सों ॥ २ ॥
भा घन पाप वियोग तम स्वभाव सब दूरि ह्वै ५ ॥
बहु जन्मन कर ज्ञान लहि योगी वर पद गहे ॥ २ ॥

कीन्हो बहु सन्मान विनय सहित बोलत भयो ६॥

योगि राज अब करहु प्रसादा। भरहु करुना सिंधु विखादा।
आनंद वारिधि जन सुख दायक। भव तापित जन क्षेम विधायक।
कहँ मैं पाप बुद्धि अति घोरा॥ कहाँ कृपानिधि दर्शन तोरा॥
परो नाथ दुख सिंधु अपारा॥ मेरो प्रभु कीजै उद्धारा॥ २२॥
जव से मैं तव दर्शन पायो॥ २॥ छिन २ मम आनंद अधिकायो।
एह सुनि ब्रह्म निशाचर वानी। बोले वाम देव मुनि ज्ञानी॥
को तुम घोर जंतु मोहि कहहू। केहि कारन एहि वन में रहहू॥
अतिशय घोर महा दुख दाई। एह गति केहि प्रकार तुम पाई।
योगि गिरा करुना रस सानी। सुनि बोले निश्चर एह वानी॥
सुनो नाथ मम चरित सप्रीती। चौबिस जन्म गये मम वीती॥
तेहि ते पहिले नाथ कृपाला। यवन देश को मैं नरपाला॥
रह्यो मोर प्रभु दुर्जय नामू॥ परम दंड धारी वल धामू॥
परम मदोत्कट पापाचारी॥ दुराचार पुनि स्वैर विहारी॥
दयाहीन खल प्रजा विनाशक। विषयासक्त सदा जन त्रासक।
मम ग्रह में ग्रहणी बहुतेरी॥ तदपि तृप्त नाहिं गो गण मेरी॥
प्रतिदिन आवहिं नूतन नारी। देशन सों मम रुचि अनुसारी।

सो॰ एक २ के साथ विषय भोगि पुनि तजों मैं॥ २२॥
एहि प्रकार मुनि नाथ नारिन सों बहु ग्रह भरे ७

ग्रामाकर पुर ब्रज निज देशा। तथा नगर बहु शैल विदेशा।
जहँ २ रूपवती सुनि पाई॥ २॥ पठै दास जन तुरत मँगाई॥
रमन कियो जेहि संग एक वारा। फिरि न दीख तेहि वदन हमारा।
औरो नहिं कोउ भोग न पावा॥ एहि विधि तिनकर दुख सरसावा।
परवश परीं सकल ग्रह मांहीं। शोचत हीं निशि वासर जांहीं।

द्विज क्षत्री वनिगन की दारा॥ दास नारि हरि लईं अपारा॥
जिन द्विज बरन केर तहँ बासा दारन सहित भजे करि त्रासा

दो॰॥ कन्या और रजस्वला सधवा विधवा जोय ॥ः॥
रमी मदन वश नाथ मैं तजी जाति नाहि कोय ८॥
द्विज वर नारी तीनि सौ क्षत्रिन की सौ चारि ॥ः॥
वनिगन तिय षट् शत बहुरि सहस दास की नारि ९
सो॰॥ सौ चंडालिनि नारि वामा सहस पुलिंद की ॥
रजक नारि सौ चारि शैलूषी पुनि पंच शत १०

गनिका की संख्या मोहि पाहीं योगीश्वर कहि आवति नाहीं
यद्यपि भोगी तिय बहु तेरी भई न काम तृप्त प्रभु मेरी॥
मदिरा पान विवश मतवारा एहि विधि विषयौंकि अपारा
यक्ष्मादिक रोगन के मारे॥ भयो न कोउ संतान हमारे॥
रोगाविवश अरु पुत्र विहीना सेवक मंत्रिन मोहि तजि दीना
रिपुगन पीडित सहि दुख भारी कर्म विवश भै मौत हमारी॥
आयुर्बल कर होत विनाशा कैरे विवर्द्धित अयश प्रकाशा
बरप्रारब्ध क्षीण ह्वै जाई॥ः॥ दिन प्रति दुर्गति की अधिकाई
पितर स्वर्ग सों च्युत ह्वै जाहीं बहुरि रहन पावत तहँ नाहीं
धर्म हीन नर कहँ मुनिराया॥ उक्त रीति बहु दुख समुदाया
तन तजि यम मंदिर जब गयेऊ घोर नर्क तहँ पावत भयेउ
रेत कुंड में लह्यो निवासा॥ देंहि जहाँ यम किंकर त्रासा॥
तीनि अयुत संवत तहँ रहेउ पुनि प्रभु वन पिशाच ह्वै गयेउ
क्षुधा प्यास व्याकुल निशि बासर दुख पायो तहँ अति करुनाकर
देवन की सौ वर्ष गँवाई॥१॥ बहुरि बाघ काया मैं पाई॥
तीसर अजगर को तन पाया चौथो शूकर शरीर मुनिराया

पंचम शूकर षट् कृकलासा ॥ श्वान देह में वहुरि निवासा
अष्टम पायो जन्म शृगाला ॥ गवय देह पुनि गही कृपाला

दो॰ ॥ दशमो मृग को तन भयो ग्यारहों मर्कट रूप ॥
गीध वारहें जन्म महँ तेरहों नकुल स्वरूप
काक चतुर्दश जन्म महँ वहुरि भालु को रूप
षोडश वन कुक्कुट भयो पुनि खर तन मुनि भूप १३

अष्टादश भव मम जव आयो ॥ मारजार को तन तव पायो ॥
दादुर कच्छप को मुनि रूपा ॥ मीन मूष को वहुरि स्वरूपा
पुनि उलूक तन लह्यो सुजाना वहुरि भयो वन गज वलवाना
पंचविंश एह जन्म हमारा ॥ ब्रह्म निशाचार को तन धारा ॥
सदा वसौं निर्जन वन मांहीं खान पान पावहुँ कछु नाहीं
तुम्हहिं नाथ मैं आवत देखा ॥ लगी रही मोहि क्षुधा विशेखा
धाय गहो प्रभु भक्षण काजा ॥ तव तन छुअत हि श्री मुनिराजा
सहस जन्म की सुधि मोहि आई प्रगटो उर विराग अधिकाई
अति प्रसन्न मम हृदय सुजाना तेहि ते पूछत हैं भगवाना ॥
एह प्रभाव केहि विधि तुम पायो योग प्रभाव कि तप वल आयो

दो॰ ॥ तीरथ सेवन करि लह्यो के सुर भक्ति दृढाय ॥
मंत्र शक्ति अथवा मिलो मुनिवर देहु सुनाय
सो॰ ॥ लगी भस्म मम देह तेहि कर जानु प्रभाव एह ॥
तव मति विन संदेह ताही सौं उत्तम भई १४ ॥

भस्म महातम शिव हि विहाई कोउ न जान सुर नर समुदाई
शिव महिमा जिमि जानि न जाई तिमि विभूति महिमा मुनिराई
वरनत हों तोहि सन इतिहासा जेहि सुनि होहि सकल अघ नाशा
तुम समान कोउ धर्म विहीना द्रविड देश वासी द्विज दीना ॥

ऐसो नीच कर्म वनि आयो ॥ द्विज पदवी तजि दास कहायो
मूढ महा शठ चोरी करही ॥ कामी वृषली रति अनुसरही
एक वार दासी गृह आयो ॥ जार भाव गृहपति लखि पायो
महा क्रोध करि तेहि वध कीन्हा वाहेर ग्राम डारि तन दीन्हा ॥
क्रियाहीन यमपुर महँ गयेउ नर्क वास दारुन तहँ भयेउ ॥

दो॰ कछुदिन पहिले पथिक तहँ कीन्हो पाक सुजान ॥
तेहि विभूति महँ लिप्त पद शव तन पर है श्वान १५

दैव योग विचरेउ वहु वारा ॥ लागी शव तन सोई छारा ॥
शिव दूतन तन देखि सोहावा सव अँग वर विभूति सों छावा
वेग सहित यम लोक सिधारे यम किंकर तिन डाटि निवारे
विप्रहि रुचिर विमान चढाई शिव पद कहँ चलि भे हर्षाई ॥
धर्मराज शिव गन दिग आई ॥ एहि प्रकार निज गिरा सुनाई ॥
अति पापी एहु विप्र अयाना ॥ किमि पैहै शिव लोक सुजाना
वोले श्री शिव दूत सुजाना ॥ शव तन देखहु ज्ञान निधाना
उर ललाट द्वौ भुजा सोहाई ॥ रुचिर विभूति सकल अँग छाई
एहि कारन शिव शासन पाई याहि लेन आये यमराई ॥ ॥
धर्मराज संशय परिहरहू ॥ हम कहँ तुम वारन जनि करहू

सो॰ ॥ एहि विधि यमहि सुनाय द्विज वर को शिव दूत ले
शंभुलोक हर्षाय सव के देखत लै गये १६ ॥ ॥ ॥

तेहि ते पाप समूह नशावनि सदा विभूति धरहु मैं पावनि
शिव भूषण विभूति श्रुति गाई एह माहिमा निश्चर सुनि पाई
सुना चहै विस्तार सहीला ॥ पुनि वोला एह वचन विनीला
साधु २ मुनि नाथ सुजाना ॥ पायो तव दर्शन भगवाना ॥
आजु कृतारथ मैं मुनि नाथा भयो धन्य पद देखि सनाथा

सोउपाय अवकहहु कृपाला ॥ जेहि क्रूर देह कराला ॥ ८८ ॥
तवप्रसाद भव बंधविहाई ॥ ह्वैहौं मुक्त सुरति मोहि आई ॥
अहै नाथ कुछ सुकृत हमारा ॥ जेहि बल पायो दर्श तुम्हारा ॥

सो॰ ॥ रहीन्रपति की देह तव दीन्ही शिव भक्त कहँ ॥
प्रथिवी सहित सनेह सस्या ऽऽ राम समन्विता ९७
यमहूं दियो बुझाय पंच विंश भव मांहि तव ॥ ८८ ॥
शिव योगी सँग पाय जैहै संसृति छूटि सब ९८

प्रथमजन्म संचित वह मोरी ॥ सफल पुन्य लहि पद रज तोरी ॥
नतरु कहा प्रभु दरश तुम्हारा ॥ एहि वन में जो घोर अपारा ॥
घोरपाप वश योनि अपारा ॥ भ्रमत फिरो लहि दुख परिवारा ॥
मोहि उधारहु करि निज नेहू ॥ अभिमंत्रित विभूति मोहि देहू ॥
केहि विधि धारन कराहिं गोसाईं ॥ कौन मंत्र मोहि देहु सुनाई ॥
देशकाल सब कहहु सुजाना ॥ तुम मम गुरु वर ज्ञाननिधाना ॥
प्रभु समान जे साधु सुजाना ॥ तन हित निरत नेम नहिं आना ॥
निज स्वारथ देखहिं नहिं काजु ॥ कल्प विटप सम सहज सुभाऊ ॥

सो॰ ॥ सुने निशाचर वचन शिव योगी बहु विनययुत
कहन लगे गुन अयन महिमा बहुरि विभूति की ९९

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम-रूपभारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे विभूतिमाहिमा प्रकाशनं नाम पंचदशो विश्रामः १५ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ षोडशः ॥

नानाधातु विचित्र सोहावा ॥ मंदर शैल पुरानन गावा ॥
विविधि जीव संकुल तरु नाना ॥ नाना कुसमित लता विताना ॥
तहँकाल अरि नरुद्र भगवाना ॥ जग वंदित प्रभु कृपानिधाना ॥

भूतनाथ सुखप्रद पशुधारा ॥ साथ रुद्र शत कोटि अपारा ॥
बैठे तिन के मध्य सुजाना ॥ ८ ॥ देव त्रिलोचन ज्ञाननिधाना ॥
देवन युत सुरपति तहँ आये वरुणानलकुवेर छवि छाये
गवने तथा वायु यमराजा ॥ आयो गंधर्वन को राजा ॥
चित्रसेन तहँ परमविनीता ॥ गंधर्वन के वृंद सहीता ॥
वैवस्वत किंपुरुषनिकाया सिद्ध साध्य गुह्यक समुदाया

दो॰ ॥ खेचर पन्नग रजनिचर विद्याधर मुनिराय
दक्षादिक सब प्रजापति आये सहित सहाय १
वशिष्ठादि सब ब्रह्म ऋषि आये सहित समाज
नारदादि पुनि तहँ गये देवन में ऋषिराज २

अर्यमादि सब पितर सयाने आये दर्श पाय हर्षाने ॥ ८ ॥
उरवश्यादि अमर वर दारा चंड्यादिक सुर मातु उदारा
अष्ट वसू द्वादश सविता गन विश्वे देवा सकल मुदित मन
आये निमि अश्वनी कुमारा भूतनाथ बलतेज अपारा ॥
महाकाल नंदीश्वर दोऊ ॥ शिव समीप आवत भे सोऊ
आये वीरभद्र भगवाना ॥ शंकुकरण पुनि अतिबलवाना
शंखकपाल नामवर शिवगन प्रभु समीप आये प्रमुदित मन

छं॰ ॥ घंटाकरण दुर्द्धर्ष अरु मणिभद्र कुंडोदर तहाँ ॥
पुनि विकट कुंभोदर पधारे रहे श्री शंकर जहाँ ॥
गणनाथ मंदोदर प्रबल अरु करणधार महोजसा
निमिकेतु भृंगीरिटी गवने वर्द्धमान स्वतेजसा ॥ १
सो॰ ॥ औरहु बहु मुनिराय भूतनाथ आवत भये ॥ ८ ॥
महा प्रबल अतिकाय चित्र वरन अरु वेष बहु ३ ॥

कोउ अति ह्रस्व पर्वत अतिएका दादुरि के सम वरन अनेका ॥

हरितधूमसम धूसर नाना ॥ कोई कर्बुर बरन समाना ॥२॥
पीत बरन कोउ लोहित कोई ॥ चित्र बरन कहि जाय न सोई ॥
चित्र विचित्र अंग सब केरे ॥३॥ लीला धर बल विपुल घनेरे
नानायुध पुनि नाना भूषन तिन के नाना विधि के वाहन ॥
बाघ बदन अरु शूकर मुख एका नक्र श्वान गज बदन अनेका
उंट शृगाल बदन बहु तेरे ॥ सिंह बाजि बक बदन घनेरे ॥
गीध बदन कोई खर भानन कोउ भे रुंड बदन एकानन ॥

दो॰ दुइ मुख कोई तीनि मुख बिन मुख के गन एक ॥
एक तीनि अरु पांच कर बिन कर विकट अनेक ४

कोउ बिन पाद एक बहु चरना कोउ श्रुति हीन एक बहु कर्ना
एक नयन के गण बहु तेरे ॥ चारि चक्षु धर तथा घनेरे ॥
दीर्घ देह कोई तन बामन ॥ प्रभु कहं सेवैं सब हर्षित मन ॥
तेहि अवसर मुनि ज्ञाननिधाना आये सनतकुमार सुजाना ॥
जगदीश्वर दर्शन मन लोभा देखी श्री शंकर की शोभा ॥
कोटि दिवाकर सरिस प्रकाशू सुमिरत होय मोह तम नाशू
प्रलय काल मर्याद विसारी ॥ सप्त सिंधु कर स्वन अति भारी
तैसो शब्द महा गंभीरा ॥२॥ गौर बरन अति विमल शरीरा
संवर्तानल ज्वाल समाना ॥ जटा यूट शोभित भगवाना
भाल नयन ज्वाला अधिकाई तेहि सों मुख द्युति की रुचिराई

दो॰ ॥ चूडामणि शशि खंड सों शोभित श्री भगवान ॥
तक्षक बायें श्रवण में बासुकि दाहिने कान ५ ॥२॥

नील रत्न सम हनु थल शोभा नील कंठ देखत मन लोभा ॥
महाबाहु अतिशय छबि छाजैं नाग हार अति रुचिर विराजैं
अंगद कंकणादि आभूषन ॥ फणि मय सों भूषित सिगरो तन

जो अनंत गुन सहस बनाई ॥ मणि रंजित मेखला सोहाई ॥
बाघचर्म परिधान सोहायो घंटा दर्पण अति छबि छायो
महापद्मकर कौरक विषधर अरु धनुष धनंजय अहिवर
सोहैं नूपुर सम पद माहीं ॥ वर आयुध सोहैं प्रभु पाहीं ॥
तोमर टंक प्रास धनु भारी ॥ अरु खट्वांग शूल भय हारी ॥
रत्नसिंहासन प्रभु आसीना करि प्रनाम मुनि गिरा प्रवीना

सो॰ प्रेम सहित मुनिराय भक्ति वेग पूरन हृदय ॥ ॥
विनती दई सुनाय श्रुति सम्मत अति मृदु वचन
हाथ जोरि शिर नाय पूछे धर्म अनेक मुनि ॥ ॥
कहे रुद्र हर्षाय जे मुनि पूछे धर्म सब ॥ ७ ॥ ॥

पुनि बोले मुनिनाथ सुजाना तुम सन धर्म सकल भगवाना
सुने पाप नाशक त्रिपुरारी मुक्तिप्रदायक भवभ्रम हारी ॥
अब करुना करि कहिये सोई अल्पाऽऽयास महा फल होई
बरने निगमागमन घनेरे ॥ धर्म हजारन श्रम बहुतेरे ॥
भली भाँति सेवन तिन केरे ॥ जब जन करै काल बहुतेरे ॥
देहिं न देहिं सिद्धि को जाना तेहि ते विनय करौं भगवाना
भुक्ति मुक्ति कर साधन जोई तथा लोकहित दायक होई
ऐसौ धर्म सकल उपकारी ॥ जाना चहौं नाथ भय हारी ॥

सो॰ ॥ सुनि मुनिवर के वयन बोले श्री शंकर सुखद ॥
सुनहु तात गुन अयन सब धर्मन महँ जो परम ८

जो त्रिपुंड धारन मुनिराया ॥ अति रहस्य वेदन दर्शाया ॥
सुनि बोले मुनि सनतकुमारा विधि वरनौ प्रभु तासु उदारा
अरु अस्थान कहौ दर्शाई ॥ द्रव्य शक्ति सुर देहु जनाई ॥
पुनि प्रणाम कर्त्ता समुझावो ॥ मंत्र तथा फल मोहि सुनावो ॥

६
अरुचि पुंड लक्षण सुरराई
जगन्नाथ वरनौ विधि सोई॥
मुनिवर भस्म कहावै सोई॥
अब तुम मंत्र सुनौ दै काना
सद्योजातादिक श्रुति गाये॥
अग्नि मंत्र अभि मंत्रित कीजै

एह सब कहियेजन सुखदाई
लोक अनुग्रहजोहि विधि होई
गोमय दग्ध जनित जो होई
सोइ त्रिपुंड की द्रव्य सुजाना
पंचब्रह्म मय मंत्र सोहाये॥
इन मंत्रन सों कर में लीजै॥

दो॰ मानस्तोक मंत्र सों मर्दन करि मुनिराय॥ २९॥
त्र्यंबकेति एहि मंत्र सों शिर में देहि लगाय २॥
पुनि ललाट भुज कंध में लेपाहि भस्म सुजान
त्रियायुषादिक मंत्र वर पढि पढि ज्ञान निधान १०

ज्ञाननिधान उचित एह ताही
तेहि सों करै सकल व्यवहारा
प्रणव मंत्र मन में उच्चारै॥
तीनि तीनि रेखा मुनिराई॥
अव प्रमाण सुनु सहित सनेहा
तहँ लौ रेखा तीनि सोहाई॥
पुनि अनामिका जो गुनवाना
मध्य रेख प्रतिलोम सुधारै॥
एहि को नाम त्रिपुंड कहावै
इनके देव सुनौ मुनिराई॥
कहहुँ सकल अव ज्ञाननिधाना

वेद मंत्र अधिकार न जाही॥
पंचाक्षर जो मंत्र उदारा॥
यती भस्म जव अंग सँवारै॥
जो अस्थान कहे मैं गाई॥
करिवो उचित न कछु संदेहा
जहँ लौ द्वौ भौं हैं मुनिराई॥
मझिली अंगुरी ज्ञाननिधाना
इनहूँ सो दुइ रेख सँवारै॥
सो अंगुष्ठ सो श्रुति दर्शावै॥
तीन रेख जो हम कहि गाई॥
प्रतिरेखा नव देव सुजाना

छं॰॥ अवर्ण अरु गृहे पत्य पुनि ऋग्वेद मुनिवर जानिये
भूलोक रजगुण आत्मा तिमि क्रिया शक्ति वखानिये॥
पुनि कहैं काल प्रभात श्रुतिगन महादेव हि जानहू॥

१ प्रणव के तीन अक्षर अ॰ उ॰ म॰ २ गार्हपत्य

एहि रीति पहिली रेख के नव देव तुम पहिचानहू ॥ ८८ ॥
उ वर्ण पावक दक्षिणा नभ लोक सत गुन जानिये ॥
यजु वेद अरु मध्यान अवसर ऋषि प्रवर पहिचानिये
पुनि शक्ति इच्छा अंतरा तम अरु महेश्वर जानहू ॥ ८९ ॥
एहि भांति दुसरी रेख के नव देव बर पहिचानहूं ॥ ९० ॥
म वर्ण आहवनीय परमातम महा मुनि जानिये ॥ ९१ ॥
दिवि लोक सायंकाल तम गुन साम श्रुति उर आनिये ॥
शिव ज्ञान शक्ति तृतीय रेखा देव नव पहिचानिये ॥
जब करिअ तान त्रिपुंड सब कौ प्रणाति करि मन्मानिये ३
सो॰॥ गायो वेदन मांहि माहेश्वर एहु परम ब्रत ॥ ९२ ॥
पुनि भव में भव नाहिं जो मुमुक्षु सेवन करै ॥ ९३ ॥

एहि विधि सों जो नर मुनिराई
करै भस्म धारन सुखदाई ॥
गृही ब्रह्मचारी बन वासी ॥
अथवा यती प्रपंच उदासी ॥
महा पाप संघात घनेरे ॥ ९४ ॥
कूरहिं उपपातक बहुतेरे ॥
वीर ब्रह्म हत्या करि जांहीं ॥
जनि आनौ संशय मन मांहीं
बिन महिमा जाने गुन बाना ॥
बिनहु मंत्र जो पुरुष सुजाना
भाल भस्म को पुंड सवारा ॥
नाशहीं हि पातक परिवारा ॥
औरन के धन को अपहारा ॥
जेहि ने भोग करी परदारा ॥
ऐसा तम गुन हृदय प्रकाशा ॥
कीन्हो सत्या ॥ राम विनाशा
गृह दाहादिक पाप घनेरे ॥
परनिंदादिक अघ बहुतेरे ॥
पर को क्षेत्र हरन पर पीडन
ब्रत को त्याग नीच को सेवन ॥
असत्काव्य पै भून्य सुजाना ॥
परुष भाव तिमि ज्ञान निधाना
विक्रय वेदन को मुनिराया ॥
सारैवी कूट तथा छल माया ॥
गो भू हेम माहिष तिल कंबल
अन्न वस्त्र धान्यादि तथा जल

नीचजनन सों इन कर दाना ॥ लीन्हे कर जो पाप सुजाना ॥

दो॰ दासी गनिका अरु नदी वृषली तथा भुजंग ॥ [illegible] ॥
कन्या विधवा ऋतुवती नारी केर प्रसंग ॥ [illegible] ॥

सो॰ ॥ चर्म रसादिक लौन आमिष को जो बेचिबो ॥
इत्यादिक पुनि जौन विविध भाँति को गनिस कै ॥
पाप होंहिं सब खीश वेगि लगावत भस्म के ॥
महिमा महा मुनीश श्रुति वर्णित बहु भस्म की

शिव धन को अपहरन सुजाना। शिव निंदा तिमि ज्ञान निधाना
निंदा शिवजन की करु जोई ॥ निष्कृत कीन्हेहु शुद्ध न होई ॥
जासु अंग रुद्राक्ष सोहावन ॥ भाल त्रिपुंड तथा तन पावन
सो चंडाल जाति किन होई ॥ पूजनीय उत्तम है सोई ॥ [illegible] ॥
जे तीरथ पावन संसारा ॥ [illegible] ॥ गंगादिक जो सरित उदारा ॥
सब मज्जन फल पावै सोई ॥ भस्म त्रिपुंड करै नर जोई ॥
सप्त कोटि शिव मंत्र सोहाये ॥ पंचाक्षर आदिक श्रुति गाये ॥
औरहु कोटिन मंत्र उदारा ॥ जे कैवल्य हेतु संसारा ॥ [illegible] ॥
सकल जाप फल पावहि सोई भाल त्रिपुंड लगावहि जोई ॥

दो॰ ॥ भूत सहस अरु भावि निज कुल के लोग हजार ॥
जो त्रिपुंड धारन करै करै सकल उद्धार ॥ १५ ॥

जो त्रिपुंड नित धरहिं सुजाना। सब प्रकार तिन कहँ सुख नाना।
चिरजीवहिं भोगहिं सब भोगा विगत व्याधि बाधैं नहिं रोगा ॥
देह त्याग अवसर जब आवै ॥ तजै सुखेन न कछु दुख पावै ॥
दिव्य शरीर पाव पुनि सोई अणिमादिक गुन युत वपु जोई
बहुरि चढ़ै अति दिव्य विमाना। देव वधू सेवहि विधि नाना ॥
विद्याधर सिद्धन को लोका ॥ गंधर्वन को लोक विशोका ॥

आठहु लोकपाल के धामा ॥ क्रम सों जाय लहै विश्रामा ॥
भोगहि तहँ बहु भोग सोहाये बहुरि प्रजेश लोक मन भाये

दो॰॥ सर्वोपरि जो ब्रह्म पद पावहि अति कमनीय ॥
तहाँ कल्प लौं रमै लहै भोग रमणीय ॥ ८८ ॥
सो॰ विष्णु लोक महँ जाय तौलौं सुख सों तहँ रमै ॥
जौलौं सुनु मुनिराय बीतैं ब्रह्मा तीनि सौ ॥
शंभु लोक महँ जाय विहरहि अक्षय काल लौ
मुक्ति चतुर्थी पाय पुनि नहिं जन्महि लोक महँ ९९

सब उपनिषद केर जो सारा ॥ बारबार बहु कियो विचारा ॥
भाषहि निर्णय बिन संदेहा ॥ परम श्रेयकारी विधि एहा ॥
एह त्रिपुंड महिमा सुखदाई संक्षेपहि हम दीनि सुनाई ॥
अति रहस्य एहि जानि सुजाना गोपनीय सब विधि गुनवाना
एहि प्रकार मुनिवरहि सुनाई अंतर्ध्यान भये सुरराई ॥ ८८ ॥
तब मुनिनायक अति हर्षाये चतुरानन के धाम सिधाये ॥
भस्म प्रभाव बिलोकु निशाचर तेरेहु मति है गै निर्मलतर ॥
तुमहु भस्म अति पावन जानी धरहु त्रिपुंड मानि मम बानी

दो॰॥ वामदेव शिव योगिवर एहि प्रकार समुझाय ॥
अभिमंत्रित करि भस्म वर दीन्ही तेहि मुनिराय ९८

ब्रह्मनिशाचर अति हर्षाई ॥ लीन्हो भाल त्रिपुंड लगाई
सुनु शौनक मुनि तासु प्रभावा ब्रह्मनिशाचर भाव नशावा ॥
भई वेगि सविता सम काया ॥ चहुँदिशि मंडल तेज निकाया
दिव्य अंग अति रूप सोहायो ॥ दिव्य भाल अंबर छवि छायो
शिव योगी गुरु की प्रमुदित मन प्रेम सहित करि तीनि प्रदक्षिन
दिव्य विमान चढ़ो हर्षायो ॥ पुण्य लोक कहँ तुरत सिधायो

वामदेव शिव योगि कृपाला ॥ दिय परम गति कियो निहाला
लगे बहुरि विचरन सुख दाता मन कृष्णपुरशंकर जग त्राता
एह विभूति महिमा सुख कारी श्रवण करै जो कोउ नर नारी ॥
अथवा जो कोउ पठहि सुनावै ॥ सो मुनि नाथ परम गति पावै ॥

छं॰॥ जो मुक्ति हेतु सोहावनी गौरीश कीरति गावई ॥
शिव योगि बंदित शंभु पद पाथोज कहँ शिर नावई
शिव भक्त मानस काय निर्मल रचहि भाल त्रिपुंड जो
नहिँ बहुरि जननी गर्भ को दुख दोष दारुन भजहि सो ॥

इतिश्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती मदर्शिते कैलाश मार्गे विभूति महिमा प्रकाशो नाम षोडशो विश्रामः ॥ १६ ॥ शिव ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ सप्तदशः चौ॰

शौनकादि ऋषि धर्म धुरीना कीनि प्रश्न एह परम प्रवीना ॥
ब्रह्म वादि गुरु ज्ञान निधाना वेद अंग तत्वज्ञ सुजाना ॥ १ ॥
जेहि उपदेश करहिँ मुनिनायक वेगि सों होहि अवशि सिधि दायक
नीति निपुन जे नर गुनवाना ॥ तिन कीन्हो उपदेश सुजाना
केहि प्रकार की सिधि मुनिराया होहि सुनावहु सो करि दाया ॥
एहि प्रकार सुनि प्रश्न सोहाई ॥ कह्यो सूत मुनिवर हर्षाई ॥
श्रद्धा जननी सम हितकारी ॥ सो सब धर्म बढ़ावनिहारी ॥
उभय लोक महँ मुनिवर नायक श्रद्धा लोगन कहँ सिधि दायक
श्रद्धा सहित भजहि जो कोई ॥ अश्म शिला फल दायिनि होई
यद्यपि गुरु मूढ़ कि न होई ॥ २ ॥ भक्ति सहित पूजे जो कोई ॥ ३ ॥
सोउ गुरु सिधि दायक न संदेहा श्रुति पुराण कर संमत एहा ॥
विन विधि भजे मंत्र कि न कोई श्रद्धा सों फल दायक होई ॥

श्रद्धासहित भजै भगवाना ॥ नीच हु पावै सिद्धि सुजाना ॥

सो॰ ॥ यज्ञ तपो व्रत दान बिन श्रद्धा जो कुछ कियो ॥
निः फल होय सुजान वंध्य वृक्ष को सुमन जिमि २॥

सकल ठौर जेहि संशय होई ॥ श्रद्धा विगत सु चंचल जोई ॥
परमारथ पथ पार न जाई ॥ तेहि कहं संसृति अति दुखदाई
मंत्र देव द्विज तीरथ गुरु वर ॥ तथा भिषज ज्योतिष ज्ञाता नर
जहं २ होय भावना जैसी ॥ ५ ॥ सिद्धि होय मुनि नायक तैसी
सब अस सिद्धि की हेतु सुजाना एक श्रद्धा अति बलवाना ॥
तेहि ते भाव भई संसारा ॥ पुन्य पाप सब भाव पसारा ॥
भावहीन जो कोउ जग माहीं ॥ दूनहु होंहि कबहु तेहि नाहीं ॥
इहां एक तुम सन इति हासा ॥ अति अचरज मय करहु प्रकाशा

सो॰ ॥ सिंहकेतु अस नाम पांचाल नृप को तनय ॥
सकल गुनन को धाम राज धर्म महं रत सदा ३॥

एक दिवस नृप सुत बलवाना मृगया हित बन कियो पयाना
शबर एक नृप सुत संग केरा ॥ मृगया हेतु बिपिन बिचरु तेरा
बिचरत देवालय तेहि देखा ॥ गिरा जीर्ण स्फुरित विशेखा ॥
तहां एक शिवलिंग उजागर भिन्न परो अर्घा के बाहर ॥
सरल सूक्ष्म मधि दीप रपायो मनहु भाग निज दर्श दिखायो
प्रथम कर्म प्रेरित मुनिराई ॥ वेग सहित तेहि लीन्ह उठाई
राज सुअनकहँ आनि देखायो देखहु शिव विग्रह मैं पायो
एहि को पूजन मैं नरनाहा ॥ करब यथा मति सहित उछाहा
जे पूजहिं विधि मंत्र समेता ॥ जे नहिं जानहिं मंत्र अचेता ॥

दो॰ मुदित होंहि जेहि रीति सों पूजित श्री गिरिराय ॥
सो पूजा विधि मोहि प्रभु सादर देहु सुनाय ॥ ३ ॥

प्रेम सहित कीन्ह्यों शिव ध्याना॥ अनल प्रवेश बहुरि मन आना।
कर संपुट करि शीश नवाई॥ शावरी एहि विधि विनय सुनाई

छं॰ मम होंहि गो गण पुष्य राउर धूप सम तन जानिये
एहु हृदय होहु प्रदीप प्रभु को प्राण आहुति मानिये
नख होंहि आखत रूप इमि सब अंग पूजा लीजिये
जो नाथ पूजन फल परम मम जीव को प्रभु दीजिये॥
नहिं चहौं सब धन स्वामिता नहिं स्वर्ग सुख मन भावनो
नहिं अचल महि को राज मैं नहिं ब्रह्म धाम सोहावनो॥
जो होहि भव भव जन्मनि नाथ एह वर मांगहूं॥१॥
तव पद्य पदम करंद मैं भौंरी सरिस अनुराग हूं २॥
मम जन्म होहु अनेक शत एह विनय प्रभु सुनि लीजिये
अज्ञान हेतुक प्रकृति वश मम हृदय जनि प्रभु कीजिये
कुछ बेर आधेहु छिन हृदय सों चरन जनि बिसरावहूं॥
प्रणमामि पुनि २ ईश एहु वर दान शंकर पावहूं ३

सो॰॥ एहि विधि विनय सुनाय शावरी अति दृढ निश्चया
पावक गई समाय भस्म भयो तन छिनक महं॥८॥
चिताभस्म तव पाय दग्ध भवन के तीर तव॥९॥
शावर हृदय हर्षाय शिव पूजा लागे करन १०॥

नित एह नेम रहा मुनि राई॥ ह्वै जाती पूजा सुख दाई ॥२॥
विनय सहित कर अंजुलि बाधी तहं आवति प्यारी चुप साधी
ताहू दिन करिकै शिव पूजन॥ सुमिरी प्राणप्रिया हर्षित मन
लेन हेतु शुचि शंभु प्रसादा। जब हीं सुमिरी नारि विषादा।
पीछे आप भई सोइ ठाढी॥ देखि नाहि चिंता अति बाढी
निज मन लागे करन विचारा मम गृह प्रथम भयो जरि छारा

भाषा

यथाप्रथम मोहिं देत देखाई ॥ दग्ध नारि केहि विधि पुनि आई
अनल तेज सों सब करु क्षारा ॥ निज कर सों सब दिन मणि जारा ॥
दंड द्वार जारै निज राजा ॥ ८ ॥ मन द्वारा द्विजराज समाजा ॥

दो॰ ॥ स्वप्न रह्यो हौं देखिविधि के माया भ्रम सार ॥ ८ ॥
एहिप्रकार बहु शवर मन भा विस्मय विस्तार १९

गृह समेत भामिनि तव देहा ॥ प्रथम दग्ध भा विन संदेहा ॥
भस्म शेष तें केहि विधि आई यथा प्रथम पुनि गृह दर्शाई
तव शवरी पति सन्मुख आई साहित प्रेम एह गिरा सुनाई ॥
जेहि अवसर एह गृह में दाहा प्रविशी पावक सहित उछाहा
रही न तन की खबरि विशेखी तेहि छिन पावक मैं नहिं देखी ॥
ताप लेश जाना मे नाहीं ॥ ८ ॥ पैठी जनु शीतल जल मांहीं ॥
सोय गई छिन में जनु जागी देखा गृह अचरज मति पागी
कहुं न जरो जस प्रथम सोहावा तैसोइ सब देखा मन भावा ॥
भयो शंभु पूजन अवसाना ॥ आई लेन प्रसाद सुजाना ॥
एहि विधि दंपति अति बडभागी करहिं वतकही शिव अनुरागी
दूनहु के सन्मुख तेहि काला ॥ आयो दिव्य विमान विशाला
सौतारा पति सरिस उजागर तेहि में चारि ईश के अनुचर ॥
शवर दंपती सहित शरीरा ॥ वैठारे शिव गण मति धीरा ॥
शंभु दूत कर परश प्रभावा ॥ तुरतहि देव रूप तिन पावा ॥
तेहि कारन शौनक मुनिराया श्रद्धा कारज सिद्धि उपाया ॥
नीच हु शवर जीव दुखदाई ॥ श्रद्धा सों उत्तम गति पाई ॥

छं॰ ॥ कहु लाभ उत्तम वरण सों जो शंभु प्रेम न मन भयो ॥
फल भयो विद्या सों कहा आगम विचारत वित नयो ॥
है जासु उर शिव भक्ति पावनि धन्य सो नर जानिये ॥

तेहि सरिस और त्रिलोक महँ कोई न निज उर आनिये ८

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्णभारती शिष्य माधवानंदभारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे गुरुवचन श्रद्धा माहात्म्य प्रकाशनं नाम सप्तदशमो विश्रामः १७ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

बहुरि सूत बोले हर्षाई ॥ सुनहु मुनीश कथा मन लाई
धर्मन में अति उत्तम जोई ॥ वरनहुँ सो तुम सन अब सोई
उमा महेश्वर व्रत मुनि नायक सकल अर्थ को है सिधि दायक
रहौ विप्र वर सब गुन धामा ॥ विद्यासिंधु वेदरथ नामा ॥
दार पुत्र संपन्न सुपासी ॥ परम यशी आनर्त निवासी ॥
एक भई कन्या तिन केरी ॥ नाम शारदा रुचिर घनेरी
पंकज लोचनि रूप विशाला भई वर्ष द्वादश की बाला ॥
पद्मनाभ संज्ञक द्विज राजा ॥ अति धनि जासु सखा पुनि राजा
अति सुशील मृत दार सुजाना मांगी कन्या रूप निधाना ॥

दो॰ ॥ यांचा भंग न करि सक्यो द्विजवर सहित उछाह ॥
शुभग लग्न महँ करि दियो शारद केर विवाह १ ॥

मध्य दिवस भा मंगल काजा ॥ सांझ समय श्रीवर महराजा ॥
संध्या करन हेतु मुनि राई ॥ सरत टगमन्यो जन सुखदाई
संध्या करि विधि सों द्विजराया फिरत फैलि गो तम समुदाया
मारग में विष धर डसि गयेउ विगत प्राण श्रीवर तब भयेउ
श्रीवर केरे मरत सुजाना ॥ भा अति शोक न जाय बखाना
रोवहिं सब वर बंधु जनाती ॥ समधी दुख गति कहि नहिं जाती
कियो बराति नवर तन दाहा ॥ गे निज २ ग्रह विगत उछाहा
शारद विधवा सहि दुख भारी ॥ रही पिता ग्रह जनक दुलारी ॥

भोजन वसन रुचिर मिलि जांहीं । पति वियोग कर दुख मन मांहीं ।
एहि विधि वसहि मातगृह वाला । कछुक मास परिमित गा काला ॥

सो॰ ॥ नैध्रुव श्री मुनिनाथ अंध न्हइ तर एक दिन ॥ ॥
गहे शिष्य के हाथ गये शारदा के भवन ॥ ॥

दो॰ ॥ शारद के सव वंधुजन गये रहे कुछ काम ॥ ॥
कन्या देखा अंध मुनि आये हैं मम धाम ॥ ३ ॥

शारद वाला मन हर्षाई ॥ ॥ इष्ट देव सम लीन्हो जाई ॥ ॥
स्वागत श्री मुनिवर जन पावन । वैठहु आसन लेहु सोहावन ॥
करौं नाथ पद कंज प्रनामू ॥ करौं कौन रउर प्रिय कामू ॥
अस कहि प्रेम सहित पग धोये । व्यजन ढार मारग श्रम खोये ।
वहुरि म्रदुल आसन वैठारी ॥ कीन्हो उद्वर्तन वर नारी ॥
पुनि मुनि वर मज्जन करि लीन्हो । देव समर्चन विधि सों कीन्हो ।
वैठे सुख आसन मुनि राई ॥ तव शारद पूजा लै आई ॥
माला धूप तथा अनुलेपन ॥ प्रेम सहित कीन्हो मुनि पूजन ।
पुनि शारद भोजन करवाये । तृप्त भये मुनिवर हर्षाये ॥
मन प्रसन्न अतिशय मुनिराई । एहि विधि आशिष दियो सुनाई ।

सो॰ ॥ भर्त्ता सहित विहार करहु सुलोचनि यथा रुचि
ह्वैहै तनय उदार तुम्हरे सव गुन में प्रवर ४ ॥ ॥

दो॰ ॥ अति कीरति एहि लोक में ह्वैहै सुमुखि तुम्हारि
तोहि पर होहि प्रसन्न अति श्री गिरिजा त्रिपुरारि

एहि विधि सुनी अंध मुनि वानी । शारद निज उर विस्मय आनी ।
हाथ जोरि मुनि कहं शिर नायो । द्विज तनया एह वचन सुनायो ।
मुनिनायक फुर वचन तुम्हारा । कवहुं न म्रषा होय संसारा ॥
मंद भाग मैं हौं मुनिनायक । मोमें किमि ह्वैहै फलदायक

शुभगदृष्टि जिमि ऊसर पाई ॥ श्रुती माहिं जिमि कृपा सोहाई
तथा मंदभागिनि मोहि पाई ॥ ह्वै है विफल वचन मुनिराई ॥
मैं विधवा मुनि नाथ सुजाना ॥ प्रथम कर्म वश ज्ञान निधाना ॥
राउर वचन फले मोहि मांहीं ॥ सो विधि देखि परनि मोहि नाहीं
सुनि शारद वानी मुनि राई ॥ तासु उतर एह गिरा सुनाई ॥
तोहि देखे विन सुमुखि सयानी ॥ यद्यपि ग्रंथ कही मैं वानी ॥
तदपि करहि जो मोर सिखायो ॥ ह्वैहै सब आशिष जो पायो ९९

दो॰ ॥ उमा महेश्वर नाम व्रत जो तैं करव सयानि ॥ ः ॥
भोगिहे तासु प्रभाव सों उत्तम श्रेय सुवानि ॥ ः ॥

जो राउर अनुशासन होई ॥ वरु दुष्कर करिहौं मैं सोई ॥
वरनहु अभु व्रत केर विधाना ॥ सुनि वोले मुनि नाथ सुजाना ॥
अगहन तथा चैत जब होई ॥ शुक्ल पक्ष शुभ दिन युत सोई
निज गुरु वर अनुशासन पाई ॥ व्रत आरंभ करै मन लाई ॥ ः ॥
कृष्ण शुक्ल अष्टमी सयानी ॥ उभय पाख चौदशि शुभ जानी
प्रथमहि करि संकल्प सुजाना ॥ विधि सों करि अभात अस्नाना
देव पितर तर्पण निर्वाही ॥ वहुरि व्रती अपने गृह जाही ॥
तहां रचै मंडप सुठि पावन ॥ विताना दियुत परम सोहावन
फल पल्लव वर कुसुम सोहाये ॥ चहूं दिशि रुचिर होंहि जहं छाये
मंडफ महं पचरंग सोहायो ॥ रचै पद्म सुंदर छवि छायो ॥
वाहर के चौदह दल जानो ॥ भीतर के वाइस उर आनो ॥
तासु मध्य षोडश रचि लीजै ॥ तेहि के मध्य अष्ट दल कीजै ॥
चौरखूं दो तेहि करहि सुजाना ॥ भीतर गोल रचै गुन वाना ॥

दो॰ ॥ जव चाउर की राशि तहं साधक देहि लगाइ ॥ ः ॥
तेहि पर घट धारन करै सहित कूर्च मुनिराय ॥ ७ ॥

= रूं इति वीजं

कलशोपरि वर वसन सोहावा । धरै स्वर्ण संयुत मनभावा ॥
कंचन मय शिव गौरि वनाई । दुइ प्रतिमा तहं धरै सोहोई ॥
प्रेम सहित पूजे मन लाई ॥ यथा विभव विस्तार वढाई ॥
प्रथम महि पंचाम्रत अस्नाना । वहुरि शुद्ध जल सों गुनवाना ।
ग्यारह रुद्र जपै लौ लाई ॥२५॥ तथा पंचक्षर मुनिराई ॥२५॥
अष्टोत्तरशत जपहि सुजाना ॥ अभिमंत्रित मूरति गुनवाना ॥
करिकै कलशो परि संस्थापन । करै यथाविधि देव समर्चन ॥
शुद्धासन करि सहित विधाना । धारन करै श्वेत परिधाना ॥
वहुरि पीठ अभिमंत्र्य सुवानी । प्राणसंयमन करहि सयानी ॥
हाथ जोरि शिव कहं शिर नाई । एह संकल्प पढै मुनिराई ॥१०॥

छं॰ ॥ सौ जन्म महं जो घोर पातक नाथ मोसन वनिपरे
तिन अघन के प्रभु नाश हित एहु करहिं पूजन राउरे
सौभाग्य विजयारोग्य धर्मै श्वर्यव्रद्धि सोहावनी
पुनि स्वर्ग अरु अपवर्ग की गति देहु मोहि मनभावनी

सो॰ ॥ एहि विधि व्रती सुजान सावधान संकल्प करि
अंगन्यास विधान करि ध्यावै शिव गौरि कहं ॥८॥

कुंद इंदु सम धवल शरीरा । नागाऽऽभरण गजाजिन चीरा
चारि भुजा धारी श्री शंकर ॥ वर मृग अभैय परशु लीन्हे कर
कोटि तरुन रवि सरिस प्रकाशा । जिन सों जग आनंद विलाशा
पीत जटा शिर परम सुहाये ॥ सुरसरि जल मंडित छवि छाये
उरग राज फण मय मनभावन । महा मुकट शिर परम सोहावन
चंद्रकला मंडित सुखधामू ॥ उरगां गद भूषण अभिरामू
भाल विलोचन शंभु सुजाना । रवि शशि अनल नयन भगवाना
नानाभरण विभूषित शंकर ॥ वैठे रत्न सिंहासन ऊपर ॥ ८ ॥

१ = मंत्र २ = रुद्राध्याय ११ पाठ १ = मंत्र ३ = प्राणायाम

दो॰ नीलकंठ के वाम दिशि गौरी रुचिर विलास ॥

बाल दिवाकर अयुत सम तन द्युति परम प्रकाश ९

बाल वेष तनु अंग सुहाये ॥ । बाल चंद्र शेखर छवि छाये ॥

अंकुश पाश वरा ऽभय धारनि । चारि भुजा वर जग रखवारिनि

सुमुखि प्रसन्न अंब दुखहारिनि । अंबा लीला सरस विहारिनि

लसत कुरबक अशोक सुमन वर । चंपक अरु पुन्नाग रुचिर तर ॥

इन को शिर अब तंश सोहायो । बरनि न जाय महा छवि छायो

विकसित मल्ली दाम सँवारी । अलका वलि सुषुमा अति भारी

सुद्र घंटिका मुखर मनोहर ॥ । राजत जघनाभोग रुचिर तर

अति उदार किंकिणि वर जाला । श्री पद नूपुर परम विशाला

गंड विंब दर्पण छवि हारी ॥ । कुंडल रत्न जड़ित द्युति कारी ॥

विंबाधर की द्युति अरुनारी ॥ । तेहि सों रुचिर दशन छवि भारी

दो॰ ॥ ग्रीवा भूषण रत्न मय जिन कर मोल अपार ॥

अधिक विराजहिं मातु के उर में तारा हार १० ॥

नव मानिक के रुचिर अति कर कंकण छवि देहिं

अंगद अरु मणि मुद्रिका चितवत हरि लेहिं ११

पहिरे रत्न वसन परिधाना ॥ । रत्न माल नहिं जाय वखाना

युग्म उरोज पीनोन्नत भारी ॥ । पंकज कमल के छवि हारी ॥

लीला लोल अपांग भवानी ॥ । भक्तानुग्रह दानि सयानी ॥

शंभु पिता जग मातु भवानी । एहि विधि ह्वै मूरति उर आनी

जपहि मंत्र तद्रूप उदारा ॥ । करै बहुरि पूजा विस्तारा ॥

ह्वै प्रतिमा को करि आवाहन । करिये आसनादि परिकल्पन

शुचि जल मांहि सुगंध मिलाई । देय अर्घ्य एहु मंत्र सुनाई ॥

सो॰ ॥ नौमि उमावर नाथ वरद ऋषभ त्रैलोक पति

त्र्यंबक हमहिं सनाथ करहु गृहण कर अर्घ एह १२

दो॰॥ शरण गत भय हारिणी नौमि देवि वर दानि॥

गृहण करौ एहि अर्घ को श्री अंविका भवानि १३

एहि विधि तीन वेर व्रत धारी॥ देहि अर्घ द्वौ मंत्र उचारी॥ २२॥

गंध पुष्प आखत वर भामिनि धूप दीप विधि सों गज गामिनि

पाय स घृत युत मधुर सोहाई धरहि भोग आगे मुनि राई॥

मूल मंत्र सन व्रती सुजाना॥ करि शत आहुति हवन विधाना

बहुरि भोग कर साज वढाई॥ करै धूप आरति मन लाई॥

पान समर्पै मन अभिरामा॥ पुनि२ करै सप्रेम प्रनामा॥

द्विज दंपति पूजै मन लाई॥ देय दक्षिणा तिन्हहि जैं वाई

एही रीति सारुद्र को पूजन॥ करि पुनि पाय विप्र अनुमोदन

सो॰॥ बनो क्षीर में जौन हविष्यान्न भोजन करै॥ २॥

निशा समय गहि मौन एही रीति सों साल भरि १४

व्रत कीजे मन लाय उभय पाख महं भामिनी॥

जवहिं वर्ष ह्वै जाय व्रत को उद्यापन करै॥ १५

दो॰॥ शत रुद्री के जाप सों द्वौ मूरति अन्हवाय॥

आगमोक्त वर मंत्र सों पूजै भक्ति दृढाय १६

वस्त्र हेममय कलश युत प्रतिमा सहित सयानि

सदाचार निज गुरु वरहि देय सकल सन्मानि १७

द्विज भोजन करवाय सुजाना॥ करि द्विज पूजन सहित विधाना

देहि दक्षिणा विनय सुनाई॥ हेम वसन कपिलादि सोहाई

भोजन करै द्विजाज्ञा पाई इष्ट बंधु संयुत हर्षाई॥ २॥

जो एह व्रत त्रिलोक विख्याता करि सेवै शंकर सुर त्राता॥ २॥

सप्त चय निज कुल उद्धरई॥ अभिमत विषय भोग सो करई

इंद्रादिक लोकपगृह जाई ॥ ऐसे भोग अति दुर्लभ पाई ॥
ब्रह्म धाम हरि लोक विशाला शिव पुर रमै कल्प शत काला
विपुल भोग तहं भोगि करोरी लीन शिव चरन होय वहोरी
पुनि महाव्रत एहु सुखदाई ॥ जो करिहौ शिव भक्ति दृढाई ॥
अति दुर्लभ अभिलाष उदारा पूरो ह्वै है एहि संसारा ॥ २२ ॥
एहि प्रकार जब मुनि समुझायो शारद उर आनंद अति छायो
मुनि वर वचन परम हित जानी शिर माथे धरि लीन सयानी ॥

दो॰ ॥ तव आयो शारद पिता जननि बंधु समुदाय
देखा करि भोजन सुखी बैठे हैं मुनिराय ॥ १८ ॥

तुरतहि मुनि समीप चलि आये हाथ जोरि सब क्रुन शिर नाये ॥
द्रवहु रहम पर मुनि राई ॥ एहि विधि तिन बहु विनय सुनाई
शारद कृत पूजन मुनि पावा ॥ व्रत उपदेश सुनाम नभावा ॥
मन में सकल लोक हर्षाई ॥ हाथ जोरि एह विनय सुनाई ॥
मुनि नायक मम गृह पगु धारा भयो सफल एह धाम हमारा ॥
धन्य धन्य हम सब मुनि नाथा ॥ सह कुल पावन किये सनाथा ॥
एह शारद कन्या सुकुमारी ॥ विधवा भै पितु मातु दुलारी ॥
कठिन कर्म गति नहिं कहि जाई उल्लंघन तेहि कर कठिनाई

सो॰ ॥ सो एहि ने रउर चरन शरन गही मुनि नाथ ॥
दुख सागर सों काढि प्रभु एहि को करौ सनाथ १९

आप कृत वलौर हहु सुजाना ॥ हमरे गृह ढिग कृपानिधाना
एहि मठ में वसिये मुनि राई ॥ मज्जन पूजन उचित गोसाई
एह शारद सेवा सब करि है ॥ तव समीप व्रत विधि अनुसरि है
जौलौं तव समीप मुनि राया ॥ पूजहि व्रत क्रम नाथ सिखाया
तौलों अवशि रहो मुनि नाथा हम सब को प्रभु करहु सनाथा

शारद के माता पितु भाई ॥ ५ ॥
कहि तथैति बानी सुखदाई ॥
एहि विधि जब बहु विनय सुनाई
तेहि मठ में ठहरे मुनिराई ॥

सो॰॥ जिमि सिखयो मुनिराय ताही क्रम से शारदा
पूजन व्रत मन लाय उमा शंभु को करै नित २०

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे उमा माहेश्वर व्रताचरण प्रकाशनं नाम अष्टादशो विश्रामः १८

श्री गणेशायनमः ॥ श्री शंकरायनमः ॥ अथोनविंशः ॥

सो॰॥ गुरु समीप मुनिराय करहि शारदा व्रत सदा
नेम किये मन लाय एहि विधि पूरन वर्ष भरि १

बीतो संवत परिमित काला ॥
व्रत को उद्यापन करवायो ॥
दीनि दक्षिणा विनय सुनाई ॥
जननि जनक अनुमोदन पाई
जपहि धरे व्रत मंत्र उदारा ॥
जब प्रदोष बेरा शुभदाई ॥
निज गृह निकट रुचिर मठ माहीं
जप अर्चन विधि निरत सयानी
निश जागरन में हर्षाई ॥

पितु गृह में तब शारद बाला ॥
विप्रन को विधि सहित जेवायो
विदा किये द्विज वर शिरनाई
तेहि दिन शारद नेम दृढ़ाई ॥
जो उपदेश भयो मुनि द्वारा ॥
पूजे शंकर प्रेम बढ़ाई ॥
बैठी शारद श्री गुरु पाहीं ॥
परमेश्वर ध्यावै मन बानी ॥
बैठी शंकर ढिग मन लाई ॥

सो॰॥ शारद गुरु मुनिराय गिरिजा को शारद सहित ॥
जप तप ध्यान लगाय सब विधि परितोषित कियो २

दो॰॥ तासु भक्ति ब्रत नेम वश मुनि तप योग समाधि
मुदित भवानी प्रगट भै दिव्य रूप निरुपाधि ॥ ३ ॥

गौरी प्रगट भई जेहि काला ॥
जग मय मूरति परम विशाला

अंध मुनीश लहे द्वौ लोचन ॥ पायो जग जननी को दर्शन ॥
देखि मातु के चरन सोहाये ॥ शारद मुनि वर अति हर्षाये
दुहुन किये तब दंड प्रनामा भक्ति भाव पूरन उर धामा ॥
नयन वारि निज तन अन्हवाये परे चरन नहिं उठैं उठाये ॥
देखि दशा जग मातु भवानी ॥ हर्षित दिये उठाय सयानी ॥
कृपा प्रेम परिपूरन गाता ॥ मृदु वानी बोली जग माता

सो० ॥ हौं प्रसन्न मुनिराज तो पर शारद द्विज सुता
कौन तुम्हारो काज कहहु ताहि पूरन करौं ४ ॥

देवन हू कह दुर्लभ जोऊ ॥ २ ॥ अभिमत पावहुगे तुम सोऊ
देखि देवि गिरिजा हर्षानी मुनिवर बोलत भे एह वानी ॥
शारद नाम विप्र वर कन्या ॥ गुरु सुर भाव भरी अति धन्या
विधवा भई कर्म कठिनाई ॥ सो मैं मातु जानि नहिँ पाई ॥
दियो मुदित वरदान विशाला पति संग तुम विहरहु बहु काला
होहि पुत्र तव एह मम वानी ॥ करहु सत्य जग जननि भवानी
अस कहि मुनि २ कियो प्रनामा मुनि बोली गिरिजा अभिरामा
पहिले भव शारद मुनिराया ॥ द्राविड विप्र की दूसरि जाया ॥
भामिनि नाम चतुर अति रूपा कियो नाह वस भाव अनूपा
याही में आसक्त सुजाना ॥ मोह यंत्र यंत्रित विधि नाना ॥
एहि कारन कबहूं द्विजराई ॥ जेठि नारि के ढिग नहिं जाई ॥
भयो न पति संग भोग समाजा रही पुत्र वर्जित मुनिराजा ॥
सदा शोक संतप्त सुजाना ॥ काल पाय त्यागे तेहि प्राना ॥
रहत रहा भामिनि गृह तीरा एक भूमि सुर युवा शरीरा ॥
रुचिर अंग भामिनि लखि पायो तेहि भू सुर कहं काम सतायो
एक दिवस तेहि कर गहि लीन्हो क्रोध सहित एहि वारन कीन्हो

भोजपत्र पत्री

याही को सुमिरत दिन रयना ॥ मरल भयो द्विज अवगुन अयना ॥

छं· ॥ जेहि हेतु निज भर्त्तार कहँ एहि आपनी वश करि लियो ॥ अरु जेठि जाया सो वहिर्मुख नाथ को पुनि करि दियो ॥ २ ॥

तेहि पाप सों एह शारदा एहि जन्म में विधवा भई ॥ २ ॥ दुख दियें दुख पावै सनातन रीति नहिं कछु एह नई १

सो· ॥ करहिं जो खोटी नारि जाया पति अनहित क्रिया ॥ विधवा होंहि कुमारि एक विंश लौ जन्म महँ ५ ॥

मम पूजा उपवास जो एहि नेम महित कियो ॥ भयो पाप सब नाश तबहीं तासु प्रभाव सों ६ ॥

विरह विकल मृत जो द्विजराई ॥ सोई एहि भव में पुनि आई ॥

वर ह्वै पाणि गृह एं तेहि कीन्हो ॥ सर्प डसित निज तन तजि दीन्हो ॥

प्रथम जन्म को पति एहि केरा ॥ भयो विप्र गृह धन बहु तेरा ॥

पांड्य देश महँ वसत एहि काला ॥ दार सहित गृह साज विशाला ॥

प्रति निशि तेहि संग संगम पैहै ॥ स्वप्ने जागृत सम सुख ह्वै है ॥

त्रिशत षाष्टि योजन मुनिनायक ॥ वसहिं विप्र शारद रति दायक ॥

कर्म विवश सोउ द्विज मुनिराजा ॥ एहि संग प्रति निशि भोग समाजा ॥

लहिहै दरश परस्पर केरा ॥ पैहै चिर लौं सुख बहु तेरा ॥

दो· स्वप्न संग वश शारदा लहिहै पुत्र सुजान ॥ २ ॥ अंग सहित सब वेद को पारग ज्ञान निधान ॥ २ ॥

चिर संगम सों होहिगो जो सुत वर मुनिराय ॥ देखहिगे द्विज स्वप्न महँ प्रति निशि प्रेम हृदाय

सो· मम आराधन कीन पहिले भव में शारदा ॥ २ ॥ अब हम दर्शन दीन देन हेतु वरदान के ॥ ९ ॥

मुनिवर कहँ एह चरित सुनाई ॥ कह्यो देवि तेहि सन हर्षाई ॥

हे बडभागिनि सुनु मम बयना । जब पावहु निज पति गुन अयना
स्वप्नसमागम वश तेहि जानी । परम चतुर लैहौ पहिचानी
बहु देखिहै तुम्हहि सयानी । सकल स्वप्न लक्षण अनुमानी
उभया ऽऽ परुन्धिर तव ह्वै है॥ । दूनहु को संशय मिटि जैहै॥
तेहि निज तनय समर्पण करहू । ब्रत फल बहुरि तासु कर धरहू
तेहि दिन सों तेहि के वश माहीं । रहहु सदा तन संगम नाहीं॥
स्वप्नसमागम जो हम गावा । देहत्याग लौ रहिहि सो हावा
तजै देह जब द्विज सुखदाई । सती होहु तेहि संग हर्षाई॥
पतिसह ऐहौ तव मम धामा । तव सुत सकल लोक अभिरामा

सो॰॥ सब संपति सुख भूरि सुंदरि तव सुत पाइ है
हैहै सब दुख दूरि अंत लहहि गो परमपद १०॥
एहि विधि सकल सुनाय देय मनोरथ शारदहि
ह्वै देखत मुनिराय गौरी अंतर्हित भई॥ ११॥
एहु पायो बरदान करुनानिधि जग मातु सों॥
कीन्हो गुरु सन्मान परमानंद में मगन है॥ १२॥

विगत रयन जब भा भिनुसारा । पाये जिन मुनि नयन उदारा
शारद मातु पिता ढिग आई॥ । निशा चरित सब दियो सुनाई
सब सन बिदा मांगि मुनिराया । शारद घर करि कै अति दाया॥
तिन कर सब विधि काज सँवारा । गे मुनि नायक रुचि अनुसारा
तेहि दिन सों शारद हर्षानी॥ । स्वप्न समागम लहहि सयानी
बहुत दिवस लौ रति सुख पायो । गौरि प्रसाद भयो मन भायो
स्वप्नसमागम सो मुनि नायक । भयो गर्भ जन अचरज दायक
पति विहीन शारद अनुमानी । सुनि २ शारद गर्भ कहानी॥
सब बहुन धिग एह गिरा उचारी । कहैं जारिणी है एह नारी॥ ९॥

दो॰ ॥ सर्पडसो जेहि नाह को तासु वंधु मुनिराय ॥२॥ दुःसह सुनि एह वत कही चलि आये सव धाय ९३॥

ग्राम वृद्ध पंडित द्विज राजा ॥ शारद पितु ग्रह जुरी समाजा ॥
गर्भवती शारदा वोलाई ॥१॥ नीचे मुख कीन्हे तहँ आई ॥
क्रोध सहित का द्रूल लकारी ॥ एक नदीन्ही पीठि पछारी ॥२॥
अरी कुबुद्धि न एकु कह कीन्हा जार पंथ में पगु धरि दीन्हा
हमरे कुल कहँ अपयश दीन्हो वङ्गतन एहि विधि तर्जन कीन्हो
कहैं परस्पर जन समुदाया उचित कौन एहि केर उपाया
अति निर्दय कोई द्विज राया ॥ एहि विधि वरनन कीन उपाया
पाप बुद्धि अति कन्या एहा ॥ युग कुल नाशिनि विन संदेहा
एहि को करि शिर वपन सुजाना काटिलेह नाश अरु काना ॥
वहुरि नाम एहि कर नहिं लेहू तुरत ग्राम वाहेर करि देहू ॥
एहि विधि सव वङ्गन शोचि विचारी ॥ सोइ करिवे की कीनि तयारी
भई तुरत तेहि छिन नभ वानी नहिं पापिनि शारदा सयानी
कुल दूषन एहि ने नहिं कीन्हा निज व्रत भंग होन नहिं दीन्हा
सुंदर एहि कर सव आचरनू ॥ एहि को चरित दोष दुख हरनू
अव सों लै जारि निजः कोई ॥ कहिहै पुरुष नारि किन होई
सो अति दुसह दंड एह पैहै ॥ तुरत जीव ताकी फारि जैहै ॥

दो॰ ॥ व्योम गीरा सुनि लोग सव हर्षित भे मुनिराय जननि जनक मन मोद जो सो नहिं वरनि सिराय ९४

ग्राम वृद्ध सुनि सुनि नभ वानी अति अचरज सव वङ्गन भय मानी
सकल सभा जन मुख अँवधाई दुरघटिका रहिगे अरुगाई ॥
तिन महँ कोउ निश्चय वहि मानी कहन लगे मिथ्या नभ वानी ॥
द्विधा भई रसना तिन केरी ॥ वमन करी कृमि राशि घनेरी ॥

बाल वृद्ध सब लोग लोगाई । सकल प्रसंशाहिं अति हर्षाई
तब शारद कुलजन समुदाई । करी तासु पूजा मनलाई ॥ २ ॥
साधु २ ध्वनि सब कोउ करहीं । हर्ष बिंदु लोचन सों गिरहीं ॥
कुल नारिन कहं भा विश्वासा । प्रमुदित दूरि भई सब त्रासा ॥
तहां अपर बोले एह बानी ॥ देवगिरा सांची हम जानी ॥
धरा गर्भ केहि भांति सयानी । भई शील व्रत की नहिं हानी ॥

दो॰ ॥ एहि प्रकार सब सुभाजन अतिशय विस्मित देखि
एक वृद्ध बोलत भयो जेहि को ज्ञान विशेखि ९५ ॥

जो कछु देखि असुनि असुजाना । माया मय सब विश्व बखाना
क्षणभंगुर जानहु संसारा । सुघट कि दुर्घट कौन विचारा ॥
अकथनीय मिथ्या पुनि सोई । माया विवश प्रगट नित होई ॥
सो माया ईश्वर वश रहई । ईश चरित को जानत अहई
भये बहुत अचरज जग मांहीं । कछु सुनिये सब जन मोहि पांहीं
यूपकेतु नृप सुयश घनेरा ॥ जल में रेत गिरो तिन केरा ॥
तेहि जल को गनिका कृत पाना । रहा गर्भ एह सब जग जाना
मुनि विभांड को शुक्र सहित जल । पान करत हरणी वाही थल
रह्यो गर्भ सुंदर सुत जायो ॥ ऋष्यशृंग मुनि नाम कहायो
तिमि सुराष्ट्र नृप कर मुनिराया । तुरतहि हाथ छुअत शृंग जाया
रहा गर्भ एह विदित कहानी । भयो पुत्र मुनि तापस ज्ञानी
तैसेहि सत्यवती बर नारी ॥ मीन उदर जन्मी द्युति भारी ॥
तिमि महिषासुर अतिबलवाना । महिषी जायो सब जग जाना

सो॰ ॥ बहु नारिन मुनिराय प्रथम गर्भ धारन किये
ऋषि मुनि करुना पाय तथा रोहिणी गर्भ पुनि ९६
मथुरा मह वसुदेव नंद गांव मह रोहिणी ॥ २ ॥

तासु गर्भ वलदेव गये देवकी गर्भ सों १७ ॥
तेहिते द्विज समुदाय कछु यामें संशय नहीं
अघटित ह्वै ह्वै जाय सुर मुनि के वर शाप सों

मुनिवर शाप भयो जग जाना। शांव उदर ते मुशल सुजाना।
तिमि युवनाश्व महीपति केरे। मुनिवर मंत्र प्रभाव घनेरे ॥
घटजल पिअत गर्भ रहि गयेउ। भेदी कुक्षि पुत्र तव भयेउ ॥
शारद हू अति नेम दृढाई ॥ कीन्ही ऋषि सेवा मन लाई
वहुरि महाव्रत एहि करि पावा। रहा गर्भ शुचि तासु प्रभावा ॥
रहासि जाय पूछैं मृदु वानी ॥ शारद सों जे नारि सयानी ॥
दूर होव सव कर संदेहा ॥ सवन कह्यो सुंदर मत एहा
तव शारद निज निकट वोलाई। पूछा नारिन ढिग वैठाई ॥
अति अद्भुत निज चरित सुहावा। तिन कहँ शारद वरनि सुनावा।

दो॰ ॥ सव जाना तव सकल जन करि शारद सन्मान
मुदित प्रसंशा करत सव गे निज भवन सुजान १८

कछु दिन पर शुभ अवसर आयो। शारद ने सुंदर सुत जायो।
कमल नयन वालक गुनवाना। सविता सम अति तेज निधाना।
अति उदार लक्षण सुखदाई। वाल वयस विद्या वहु पाई
शारदेय पायो शुभ नामू ॥ भा जग विदित लोक अभिरामू
गुरुवर कीन्ह तासु उपनयना। वेद पठन लागो गुन अयना
अष्टम वर्ष पढो ऋग वेदा ॥ नव येयजुर्वेद विन खेदा ॥
दश मे साम वेद पढि लीन्हो। निज गुरु को कछु श्रम नाहिं दीन्हो
कछु दिन वीति गये एहि भांती। पुनि आई पावन शिवराती
गये लोग सव देश निवासी। गोकरणहि वटु गृही उदासी
शारद हू सह निज परिवारा। मुदित गोकरण कहँ पगु धारा

जातपंथ महँ तेहि लखि पायो प्रथम जन्म भर्त्ता मन भायो ॥
स्वप्न दृष्ट लक्षण सब देखी ॥ उर उमड़ी अति प्रीति विशेखी
पुलकावलि पूरन तन मांहीं ॥ चखजल गिर नदि शो तेहि नांही
ताहिवि लोकहि एक टक बांधे मारग में ठाढी चुप साधे ॥८॥
द्विजवर हू शारद कहँ देखा स्वप्न सुलक्षण लखे विशेखा
तुरतहि ताहि लियो पहिचानी स्वप्नकाल रति दायनि जानी ॥
तेहि में जन्म लियो निज द्वारा स्वप्न लखा सोउ दीरख कुमारा
विस्मय परम तासु उर छायो शारद के समीप तब आयो ॥

सो॰ प्रथम कह्यो एहु वयन तुम सन कछु पूछौं चहौं ॥८॥
बहुरि विप्रगुन अयन रहासि देश महँ लैगयो ३०

कोतुम वरनो सुमुखि सयानी कासु प्रिया मोहि कहहु वखानी
कौन देश केहि की तुम जाई ॥ नाम कहा मोहि देहु सुनाई ॥
एहि विधि जव पति वचन सुनाये शारद के लोचन भरि आये ॥
बहुरि चरित निज दियो सुनाई विधवा भै जेहि विधि लरिकाई
पुनि पूछा द्विज वर मृदु वानी केहि को एहु सुत कहहु सयानी
विधु सम सुत केहि के उर मांहीं रहा सुमुखि वरनो मोहि पांहीं
पति की सुनि शारद एह वानी तासु उत्तर एहु दीन्ह सयानी ॥
परम विशारद एहु सुत मेरा सब विद्या गुन जान घनेरा ॥
शारदेय संज्ञा गुन धामा ॥ जग में लही ख्याति मम नामा
एह वानी सुनि द्विज हँसि दीन्हो बहुरहु प्रश्न तर्क युत कीन्हो ॥
भामिनि सुनि २ चरित तुम्हारा मम उर बिस्मय होहि अपारा
होत विवाह नाह मरि गयेउ केहि प्रकार बालक तब भयेउ
तर्क सहित सुनि द्विज वर वानी पाई अति शय लाज सयानी ॥
कछुक देर रोदन तेहि कीन्हा पुनि धीरज धरि उत्तर दीन्हा

सो॰॥ जानि परिहास सुजान करहु मोहि तुम ज्ञानहू ।
तुम को मैं गुन वान भली भाँति पहिचानहूं २१

एहि में परम प्रमाण उदारा । जानि लेहु मन मोर तुम्हारा ॥
अस कहि सब निज चरित वखाना । जेहि प्रकार पायो वरदाना ॥
व्रत फल अर्द्ध समर्पण कीन्हा । तेहि कहं पुनि बालक दै दीन्हा ॥
पायो शुभ बालक गुन वाना । द्विजवर अति मन में हर्षाना ॥
शारद मातु पिता सुख पाई । लैगो शारद कहं द्विजराई ॥
विप्र भवन शारद वहु मासा । वसि पायो सब भाँति सुपासा ॥
भयो विप्र कर जेहि छिन मरनू । सती भई कीन्हो अनुगमनू ॥
देवरूप तव दंपति पाई ॥ दिव्य विमान वैठि हर्षाई ॥
प्रमुदित जात भये शिव धामा । लहे भोग सब मन अभिरामा ॥
एह चरित्र पावन मैं गायो ॥ भुक्ति मुक्ति प्रद परम सोहायो ॥
पठहि सुनहि नर वर मन लाई । तिन के धन संपति अधिकाई ॥
आयु वढै आमय सब जांहीं । धान्य वहुत तिन के गृह मांहीं ॥
रहैं सोहाग भरी नारि जन । सुख संतान केर एह साधन ॥

सो॰॥ मुनिवर दियो सुनाय एह अघौघ नाशन चरित
श्री गौरी गिरि राय व्रत पावन को कथन शुभ
एकहु दिन मन लाय पढे सुनै जो भक्ति युत ॥
पाय भोग समुदाय जाहि अंत महं परम पद २२

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे शारदाख्यानं नाम एकोन विंशो विश्रामः १९ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ विंश

दो॰॥ अव महिमा रुद्राक्ष की कहौं मुनीश सुजान ॥

सर्वपाप तिनके हरै पढैं सुनैं धरि ध्यान १॥

भक्त अभक्त नीच किन होई। अथवा परम नीच पुनि सोई
औ रुद्राक्ष धरै जो कोई॥ सब पापन सों छूटहि सोई
जो रुद्राक्ष धरै तन मांहीं॥ एहि सम और पुन्य कोउ नांहीं
जे मुनिवर ज्ञानी जग अहहीं। याहि महाव्रत ते सब कहहीं
सहस प्रमाण धरै जो कोई। श्री शंकर व्रत धर पुनि सोई
ताहि नवैं सब देव प्रधाना॥ सो नर यथा रुद्र भगवाना
मिलहिं सहस परिमित जो नांहीं। षोडश २ द्वै भुज मांहीं॥
धरहि शिखा में एक सुजाना। द्वै कर में चौबिश गुनवाना॥

दो॰॥ बत्तिस धरिये कंठ में चौंतिस मस्तक मांहिं
अष्टोत्तर शत माल सों धरै न्यून उर नांहि २॥

कै कै द्वै श्रुति में जो कोई॥ पूजनीय शंकर सम सोई॥
मोती मूंगा फटिक मिलाई। हेम रजत वैडूर्य सोहाई॥
जो नर प्रेम सहित मुनिराई। धरहि सो शिव स्वरूप ह्वै जाई
केवल हू जो परम सुजाना॥ यथा लाभ पहिरै गुनवाना
तेहि के ढिग पातक नहिं जाई। जिमि दिनकर ढिग तम समुदाई
अक्ष माल सों जपहि जो कोई। तेहि नर को अनंत फल होई
और माल सों जाप सुजाना। ते तोहि फल पावै नाहिं आना

दो॰॥ जेहि के अंग रुद्राक्ष नाहिं एकहु बहु फल दानि॥
तिमि त्रिपुंड बिन कहहिं मुनि भवानिः फल बिज्ञानि
सो॰॥ मस्तक में धरि जोय शिर स्नान जो नर करै॥
ताहि महा फल होय सुरसरि मज्जन किये कर ४

जल अभिषेक बिना जो कोउ नर। प्रतिदिन पूजहिं अक्ष निरंतर
शंभुलिंग पूजन फल जोई॥ निश्चय पावत है नर सोई॥

एक पांच ग्यारह मुख केरे ॥
तथा चतुर्दश मुख न घनेरे
शंभु स्वरूप जानि जो कोई
पूजहि तेहि कहँ एह फल होई
महादरिद्री जन किन होई ॥
धनद विभूति लहत है सोई
इहां एक पावनि एह गाथा
बुधवर बरनत हैं मुनिनाथा
कहत सुनत जो सब दुख हारी
पावनि महा पाप क्षय कारी
काश्मीर को नृपति सुजाना
भद्रसेन अति तेज निधाना

सो॰ ॥ तासु तनय बलवान नाम सुधर्मा बुध प्रवर
नृपति सचिव गुनवान तासु पुत्र तारक भयो ५

मंत्री सुत सुंदर जो जायो ॥
नृप सुत सखा भयो मन भायो
नृप किशोर अरु सचिव कुमारा
प्रीति परस्पर रूप उदारा ॥
विद्या साथ पढ़ै मन लाई ॥
खेलहिं संग २ हौ हर्षाई ॥
उभय पुत्र की भै एह रीती ॥
रुद्राभरण धरैं अति प्रीती
भस्म अंग धारन पुनि करहीं
सुभग मनोहर गात विचरहीं
करक हार केयूर सोहाये ॥
कुंडलादि भूषन मन भाये
हेम रत्न निर्मित सब त्यागी
अक्ष विभूषन के अनुरागी
माला कंकण कंठाभरनू ॥
धरहिं अक्ष निर्मित अघ हरनू
रुद्राभरण धरहिं एहि भांती
तहं अति प्रीति न सो कहि जाती

दो॰ ॥ हेम रत्न निर्मित रुचिर तिन्हहि न कबहू सोहाहिं
मांटी सम पाषाण सम ते भूषण दर्शाहिं ॥ ६ ॥

यद्यपि लोगन बहु समुझायो
तासु त्याग तिन को नहिं भायो
नाम पराशर मुनि गुन गाये
एक बेर नृप गृह चलि आये
श्री चतुरानन सरिस प्रभावा
पूजा करि नृप शीश नवावा ॥
बैठे जब सुख सों मुनिराई ॥
तब नरेश एह गिरा सुनाई
महाराज जो एह सुत मेरा ॥
तिमि एह बालक मंत्री केरा ॥

अक्षाभरण सदा द्वौ धरहीं
रत्नविभूषण धारन हेतू ॥
करिउ अघन वचन हमारा

रुचिर रत्नभूषन परिहरहीं
वहुसमुदायो मैं मुनि केतू
पहिरहिं सोइ नित प्रेम अपारा

दो॰ ॥ कवहुं काहू वाल कन कियो न एह उपदेश ॥
स्वाभाविक इनकी प्रकृति केहि विधि भई द्विजेश ७

सुनि नृप वचन कह्यो मुनिराई
प्रथम चरित दू नहु सुन केरा
नंदिग्राम पुरानन गायो ॥
तहाँ एक गनिका अभिरामा
काहि न जाय तेहि को वररूपा
महाविभव तेहि के ग्रह मांहीं
छत्र इंदु संकाश सोहावा ॥
रुचिर दंड चामर वहु तेरे
रत्नविभूषन वहु ग्रह मांहीं
कुंकुम केसर गंध मनोहर
चित्रमाल अवतंश सोहाये

सुनु भूपति सादर मन लाई
जेहि सुनि विस्मय होय घनेरा
सब प्रकार शोभित मन भावो
नाम महानंदिनि गुन धामा
ललिता ऽऽ कृति श्रृंगार अनूपा
वहु संपति नहिं वरनि सिराहीं
यान हेम निर्मित मन भावा
हेम पादुका पुनि जेहि केरे
सब अमोल वरने नहिं जांहीं
अंग कर्पूर विलेपन सुंदर
मधुर रुचिर भोजन मन भाये

दो॰ ॥ वडे मोल के वहु वसन जगमग द्युति वहु भास
चंद्र किरन सम सेज पुनि हेम पलंग सुप्रकाश ८ ॥

महिषी धेनु वहुत तेहि केरे
नवयौवन दासी वहु तेरी ॥
ग्रह में अन्न भरो विधि नाना
वहु साहस्र रत्न समुदाया ॥
एहि विधि विभव सहित गुनखानी
शिव पूजन नित करहि सप्रेमू

काज कुशल सेवक वहु तेरे
वरभूषण अंग प्रभा घनेरी
वहु रंग लागे चित्र विताना
धन संख्या कोटिन मुनिराया
काम विहारिनि परम सयानी
सत्य धर्म को अति दृढ नेमू ॥

शंभुचरित में प्रीति घनेरी॥ श्रीशिव नाम रेक जेहि केरी॥
दो॰ शिवभक्तन के चरन में नवहि सदा नित नेम॥
उमा नाथ पद भक्ति में निरत सदा दृढ प्रेम ९॥

रहा नृत्य मंडप तेहि के घर। तहँ विनोद हित वैठि निरंतर॥
मर्कट कुक्कुट उभय जिआये। तिनहिं अक्ष भूषण पहिराये॥
गीत गाय करताल वजावे। दूनहु को तहँ नित्य नचावे॥
तिनकी नृत्य देखि मन भाई। विहँसहि सखिन सहित हर्षाई॥
वानर करण भरण सोहाये। भुज केयूर धरे मन भाये॥
सिखयो गनिका ताल निधाना। नाचहिँ निलमति वाल समाना॥
कुक्कुट पुनि कपि को सहकारी। शिखा अक्ष मणि का शुभ धारी॥
नृत्य निपुण नित नर्तन करहीं। देखत अचरज सों उर भरहीं॥

दो॰॥ एक वार तेहि के भवन आयो वणिक सुजान।
धरे भस्म रुद्राक्ष शुभ निर्मम शिवव्रतवान १०॥

भस्म विशद तेहि कर के सुंदर। पहिरे तहँ कंकण अद्भुततर॥
जिन में महा रत्न विस्तारा॥ तहँ न अर्क सम तेज अपारा॥
तेहि कहँ गनिका आसन दीन्हा। हर्ष सहित पूजन वहु कीन्हा॥
वनिग हाथ वर कंकण देखी। वोली अचरज मानि विशेखी॥
राउर कर कंकण अति सुंदर। महा रत्नमय परम मनोहर॥
दिव्य नारि लायक एह भूषन। निज वैचित्र्य हरहि मेरो मन॥
एहि विधि गनिका रुचि अति देखी। हँसि कह वनिग उदार विशेखी॥
महादिव्य एह रत्न निहारी॥ एहि में जो रुचि होय तुम्हारी॥
तौ तुम एह हम सों लै लेहू॥ एहि कर मोल हमहिं कह देहू॥
एहि विधि सुनि तेहि की मृदु वानी। वोली गनिका परम सयानी॥
हम उपजी गनिका कुल माहीं। पतिदेवता नारि हम नाहीं॥

हमरे कुलकर एह ब्यवहारा ॥ हमको उचित सदा ब्यभिचारा
रत्नखचित कर भूषन एहा ॥ जो मोहि देहो सहित सनेहा
तो मैं तीनि दिवस अरु राती ॥ पत्नी ह्वै सेवहुं बहु भांती ॥

सो॰ जो एहु बचन तुम्हार बीर बल्लभे नहिं म्रषा ॥
देहौं रत्न उदार प्रिया होहु मम तीनि दिन ११ ॥
दो॰ ॥ सारी एहि ब्यवहार के रवि शशि परम उदार
सत्य सत्य पुनि सत्य कहि परशौ हृदय हमार १२
सो॰ ॥ तीनि दिवस अरु राति ह्वै हौं तव पत्नी प्रभो ॥
सेवहुंगी बहु भांति अस कहि परशो तासु उर १३

कंकण ताहि समर्पण कीन्हा पुनि गनि कहि एहु आयुध दीन्हा
मणिमय लिंग नएह पारवाना जानहु एहि मम प्राण समाना
धरहु याहि करि यत्न उदारा लिंग हानि महं मरण हमारा
भलेहि नायक हि तेहि लै लीन्हा न्रत्य भवन भीतर धरि दीन्हा
बहुरि तासु दिग सो चलि आई रयन समय तेहि संग हर्षाई
पलंग मनोहर सेज सोहाई सुख सोई आनंद सरसाई
आधी राति गई जेहि काला न्रत्य भवन में अनल बिशाला
प्रगटी तुरत जरन गृह लागे कामिनि उठी पलंग निज त्यागे

सो॰ ॥ खोलि दिये तेहि जाय कुक्कुट मर्कट बंध सों ॥
गये ते दूरि पलाय रारत अंग सो अग्नि कण १४

मंडप खंभ धरो पुनि जोई ॥ जरो लिंग खंडित है सोई ॥
देखि दशा दूनहु दुख पायो ॥ बनिग नाथ दुख अति सरसायो
जरो लिंग जब प्राण समाना ॥ देह त्याग निश्चय दृढ ठाना ॥
भाविराग पुनि दुख अति भारी गनिका सन एह गिरा उचारी
जरा मोर शिव लिंग पिआरा रहा सोई मम प्राण अधारा

चहहुं प्रिया अब एह तनु त्यागा। भयो मोहि अति अधिक विरागा॥
शिव पद में निज हृदय लगाई। करब प्रवेश अनल हर्षाई॥
ब्रह्म इंद्र माधव किन आई। वारहि मोहि बहु हठ दर्शाई॥
तदपि भामिनि मैं मति धीरा। तजब अनल महं अपन शरीरा॥
वनिग नाथ कर एहु हठ देखी। गनिका भै मन दुखित विशेखी॥
तुरतहिं निज सेवकन पठाई। बाहर नगर चिता रचवाई॥
वनिग नाथ शिव भक्त पुनीता। अनल प्रदक्षिण करि सुविनीता॥
परम धीर मन अग्नि समायो। ताप वार वनिता अति पायो॥

सो॰॥ गनिका अति दुख पाय अपन कर्म निर्मल सुमिरि।
सब निज बंधु बोलाय बोली एह करुना बचन॥९५॥

सुभग रत्न कंकण मैं लीन्हा॥ सत्य बचन एह भाषण कीन्हा॥
वनिता भाव तीनि दिन राती। गहि सेवा करिहौं बहु भांती॥
वनिग नाथ श्री शिव व्रत धारे। मरत भयो अति पाप हमारे॥
अनल प्रवेश कियो मम नाथा। तथा मैंहूं जैहों जरि साथा॥
मैं सधर्म चारणि अस भाषा। सो व्रत सत्य चहौं निज राखा॥
सत्य सदा सब विधि सुखदायक। जेहि के वश त्रिभुअन के नायक॥
सत्य समान धर्म कोउ नाहीं। सकल प्रतिष्ठित हैं तेहि पांहीं॥
स्वर्ग मुक्ति दायक पुनि सोई। नहिं असत्य सन सद्गति होई॥

दो॰॥ तेहि ते पालब सत्य मैं करिहौं अनल प्रवेश॥
यदपि बंधुजन कियो तेहि वारन बहुत नरेश॥

सत्य लोप कर भय उर आना। प्राण त्याग निज मन अनुमाना॥
शिव भक्तन कहं सर्वसु दीन्हा। ध्यान सदाशिव को बहु कीन्हा॥
अनल प्रदक्षिण त्रय पुनि दीन्ही। तहं प्रवेश इच्छा तेहि कीन्ही॥
गिरत हुताशन मैं तेहि देखी। निज चरनन महं प्रीति विशेखी॥

अगटे तहं शंकर भगवाना॥ तेहि बारन कियो कृपानिधाना
देख २ देखे भव मोचन॥ चंद्रकला धर शंभु त्रिलोचन
रवि शशि पावक कोटि प्रकाशा चकित हृदय बाढी उर त्रासा
विह्वल त्रसित जरी कृत जानी कंपत देखि करुना सरसानी
वारि विलोचन निकर गहि लीन्हा एह कहि समाधान प्रभु कीन्हा
सत्य धर्म धीरज तव प्रेमू॥ निज सेवा कर निश्चल नेमू
एह सब देखन हित वर नारी॥ तव गृह बनिग नाथ वपु धारी
मैं आयो नहिं कछु संदेहा॥ माया नल जारा तव गेहा॥
रत्नलिंग हम दियो जराई॥ पावक प्रविशो दुख सरसाई
गनिका जाति सदा छल कारिनि जन वंचक पुनि स्वैर विहारिनि
सो तुम सत्य सुमिरिनिः शेषा मम सह कीन्हो अनल प्रवेशा

दो॰॥ तेहि कारन सुनु भामिनी अति दुर्लभ जे भोग॥
सो तुम कहं अब देहुंगे जिन्हहि चहैं सुर लोग २७

आयु परम करि देहुं तुम्हारी विगत रोग संतति सुख भारी
जोइ २ चाहहु परम सयानी सोइ २ देहौं सुनि एह बानी॥
बोली गनिका बचन मनोहर सुनहु नाथ जनपाल कृपाकर
भूतल स्वर्ग रसातल मांहीं॥ भोग चाह शंकर मोहि नांहीं
नाथ चरन पंकज तजि आना चहौं न दूसर मैं वरदाना॥
मम दासी सेवक सुरराया॥ और बंधु परिजन समुदाया
हृदय वृत्ति तव चरनन वारी सकल नाथ पूजा व्रत धारी
मोहि समेत इन सबहि कृपाला। देहि लोक निज करहु निहाला

सो॰॥ बहुरि जन्म भय घोर मुक्त करहु प्रणमहुं चरन
साधु बचन सुनि तोर दियो तोहि वरदान एह २८

एह कहि प्रभु अनुमोदन कीन्हा। सब कहं शंभु परम पद दीन्हा

पृ॰ ॥

मंडफ दाह भयो तेहि काला॥ कुक्कुट कपि भये विकल विहाला
गृह सों वहुत दूर गे भागी॥ गये न ते शिवलोक अभागी
मर्कट कपि दून्हु नर राई॥ त्याग कियो तन अवसर पाई
मर्कट आप भयो तव वालक कुक्कुट भयो साचिव कुल पालक
नरपति शिक्षा भरन प्रभावा जन्म महाकुल में इन पावा॥
प्रथम जन्म अभ्यास नरेशा पहिरहिं अक्षा विनहि उपदेशा
एहि भव महँ करि शिव आराधन जैहैं शंकर लोक मुदित मन॥

दो॰॥ युगल वाल गाथा कही शिव भक्ता इतिहास
और सुनन की कहा रुचि सो पुनि करौं प्रकाश १

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी ७ राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे रुद्राक्ष माहात्म्य प्रकाशनं नाम विंशतिमो विश्रामः २०

श्री गणेशाय नमः॥ श्री शंकराय नमः॥ सोरठा॥

सो॰॥ कही महामुनिराय सुनि वानी पीयूष सम
नरपति पुनि हर्षाय हाथ जोरि वोलत भयो १

अहो संग महिमा मुनिराई जीवन को अघ देहि नशाई
काम क्रोध नाशक पुनि एहा सकल इष्ट प्रद नहिं संदेहा
भयो मोर माया तम नाशा ज्ञान दृष्टि कर सहज प्रकाशा
तव दर्शन सों मैं भगवाना भयो महामुनि अमर समाना
सुनि सव प्रथम चरित इनकेरा। भयो हृदय मम मोद घनेरा
निज सुत को भावी आचरना पूछत हौं मुनिवर गहि चरना
केती आयु तनय मम पाई भाग्य कहो एहि की मुनिराई
विद्या कीरति शक्ति प्रकारा वरनहु श्रद्धा भक्ति उदारा॥
मम सुत कर एह सकल गोसाईं। कहो कृपाकर जन सुखदाई

मैं सेवक अरु शिष्य तुम्हारा॥ लीन्ही राउर शरण उदारा॥

सो॰ सुनि नरपति के वचन व्यास तात दीलत भये
किमि वरनौ शुन अयन कहन योग जो वचन नाहिं २
जाहि सुने तत्काल धीरहु जन दुख पावही॥८॥
तदपि कहौं नरपाल निर्व्यलीक तव प्रश्न लखि

अकथनीय यद्यपि नरपाला॥ तदपि कहौं लखि प्रीति विशाला॥
वय द्वादश संबत की पाई॥ सो नरेश पूरन है आई॥
अब सप्तम दिन न्रप जब ऐहै तेहि दिन एह बालक मरिजै है
काल क्रूर सम परम कराला मुनि बानी एह सुनि नरपाला
महा शोक अति व्याकुल भयेऊ भूतल में सहसा गिरि गयेऊ॥
मुनि करुनानिधि न्रपहि उठाये सावधान करि एह समुझाये
मति डरपहु नरनाथ सुजाना तवहि तक कहहुं सुनहु धरि ध्याना
जब लौ विश्व प्रगट नहिं भयेऊ तौ लौ निर्विशेष प्रभु रहेऊ॥

दो॰ निरालोक निःकल परम एक चिदानंद रूप॥
सो केवल शिव ज्ञानमय चेतन ज्योति अनूप ४

प्रथम हिं तिन विरंचि उपजाये सृष्टि कर्म महं तिन्हहि लगाये
चारिउ वेद समर्पन कीन्हा॥ परम तत्व संग्रह पुनि दीन्हा॥
सब उपनिषदन को बर सारा नाम रुद्र अध्याय उदारा॥
जो प्रभु एक ब्रह्म अविनाशी ज्योति सनातन अज सुखराशी
परम तत्त्व शिवमय भगवाना तहां प्रतिष्ठित रहहिं सुजाना
तिन ब्रह्मा सब जग उपजायो वेदन को विस्तार बढायो॥
यजुर्वेद दक्षिण मुख द्वारा॥ प्रगट भयो तहं सो श्रुति सारा
अत्रि मरीचादिक मुनि नाथा धारन करि तेहि भये सनाथा

दो॰॥ तिन के शिष्यन देव तन ग्रहण कियो पुनि सोय॥

शिवप्रकाश

रुद्राध्याय

पुत्र शिष्य क्रम भगत नृपति प्रगट लोक महँ जोय

रुद्र रूप वेदन कर सारा ॥ एहु पर तप एहु मंत्र उदारा ॥
रुद्र अध्याय पाठ गुनवाना ॥ मुक्ति सुसाधन परम सुजाना ॥
महापातकी नर किन होई ॥ उपपातकन मांहि रत जोई ॥
ताहि जपत सब पाप नशावहिं ॥ पापी सकल परम गति पावहिं ॥
बहुरि रचा जग तीनि प्रकारा ॥ भये योनि बहु लख विस्तारा ॥
उत्तम मध्यम मध्य सुजाना ॥ सुर तिर्जग नर ज्ञान निधाना ॥
तिनके बहुरि कर्म उपजाये ॥ निज २ जन्म सरिस श्रुति गाये ॥
तिन में वर्तमान सब लोका ॥ भोगत हैं दुख सुख अरु शोका ॥

दो॰ सृष्टि प्रवाह हेतु नृप रचे विरंचि सुजान ॥ ८ ॥
धर्म हृदय सों पृष्ठ सों भा अधर्म गुनवान ६ ॥

धर्माचरन करहि जो कोई ॥ लहहि पुन्य तेहि कर फल सोई ॥
जे अधर्म के भे अनुरागी ॥ ते नर भये पाप फल भागी ॥
पुन्य कर्म फल स्वर्ग सोहायो ॥ नर्क पाप कर फल श्रुति गायो ॥
तिन दूनहु के पति भगवाना ॥ रचे इंद्र यमराज सुजाना ॥
काम क्रोध अरु लोभ महीपा ॥ मद मानादि अपर कुल दीपा ॥
सब अधर्म बालक मुनिराई ॥ भये नर्क नायक दुखदाई ॥
सुरापान गुरु तल्प सुजाना ॥ पुल्कस नारि गमन गुनवाना ॥
काम तनय ये भये प्रधाना ॥ सुनहु क्रोध संतान सुजाना ॥
जननी कर वध अरु पितु घाता ॥ रोष कुमार युगल भे ताता ॥
कन्या एक भई दुखदाई ॥ ८ ॥ नृपति ब्रह्महत्या श्रुति गाई ॥

सो॰ ॥ लीन्हो निकट बोलाय श्री यम पातक नायकन ॥
नर्काधिप मुनिराय तासु वृद्धि हित करि दियो ॥ ७

एहि प्रकार नव पातक राया ॥ जिमि यम को सिखवन सुनि पाया ॥

तेसव पालहिं नर्क घनेरे ॥ उपपातक सेवक तिन केरे ॥
जव महि में आयो नरपाला ॥ रुद्रजाप अध्याय विशाला ॥
जो कैवल्य केर वर साधन ॥ पातक नायक गण अपने मन
सव भय भीत भगे महीपाला यम मंदिर पहुंचे तत्काला ॥
महाराज जय देव सुरेशा ॥ हम तव किंकर मानि निदेशा
तर्क वृद्धि हित पल करां हीं ॥ महि अव ठहरि सकत हम नांहीं
वढो रुद्र अध्याय प्रभावा ॥ भये दग्ध है अति भय पावा ॥

दो॰ ॥ ग्राम ग्राम पुर नदी तट पुन्य थल न भगवान ॥
रुद्र जाप गा व्यापि अव सकल ठौर वलवान ८
प्रायश्चित्त सहस्र हम गनहि न यम पुर पाल
रुद्र जाप के वरन प्रभु सहि नहिं सकहिं कराल ९

अव हम रहनि वाह तहं नाहीं विचरहिं केहि प्रकार जग मांहीं
सकल लोक घातक सुरराया हम सव महा पाप समुदाया
रुद्र जाप भय प्रद भगवाना भयो हम हिं प्रभु गरल समाना
रुद्र जाप सों दुःख अपारा ॥ पायो हम जेहि कर नहिं पारा
एहि ते हम विनवहिं सुरराई दुःख नाश कर करहु उपाई ॥
पाप नायकन की एह वानी ॥ सुनि यम पुरपति विस्मय सानी
तुरत विरंचि धाम चलि आयो सकल चरित एहि भांति सुनायो

सो॰ ॥ देव २ जगदीश मैं आयो राउर शरण ॥ २२२॥
पापिन को मोहि ईश दंड देन हित प्रभु कियो १०

अव पापी प्रथिवी तल मांहीं सुरनायक देखिअत कहुं नांहीं
पापन को वड कुल जगदीशा रुद्र जाप सों भा प्रभु खीशा ॥
पापनाश भे जव भगवाना रीते रहिंगे नर्क सुजाना ॥ २ ॥
नर्क शून्यता जव सुर सांई ॥ निःफल राज हमार गोसांई

जेहि विधि मम अधिकार सुजाना। नाश होय नहिं कृपानिधाना
मोरि विनय सुनि कृपा दृढाई। वेगि नाथ कछु करहु उपाई॥
धर्मराज अति खेद समेता। विनय कीन्ह तब कृपानिकेता
रुद्रजाप कर नाश उपाया॥ एह विचारि कीन्हो सुरराया
सुता अविद्या की नरपाला। एक अश्रद्धा परम कराला
दूसरि दुर्मेधा अघ भारी॥ मेधा श्रद्धा मेटन हारी॥८॥
विधि प्रेरित जग में है आई। दीन्हो लोक विमोह वढाई

दो॰॥ रुद्रजाप सों विगत तब लोग गये मुनिराय॥
सावधान यमराज तब निज पुर गे हर्षाय॥
पूर्वजन्म कृत पाप सों अल्पायुष नर होय॥
रुद्रजाप सों पाप सब विनशहिं रहैं न कोय॥१२॥

पापक्षीण भे जब नरपाला। दीर्घायु बल धीर्य विशाला
रोग होय नहिं कोउ दुख दाई। ज्ञान विभव नित वाढत जाई
रुद्रजाप सों जे अभिषेका॥ करहिं शंभु कर सहित विवेका
तेहि जल सों जो मज्जन करई। नरपति मृत्यु परम भय तरई
रुद्रजाप मंत्रित जल जोई॥ तेहि सन मज्जन जो नर कोई
करहिं मृत्यु भय तिन कहँ नांहीं। जांहिं उमापति मंदिर मांहीं॥
रुद्रजाप सन शात अभिषेका। करहि पुरुष जो विमल विवेका
तेहि के सकल पाप मिट जांहीं। शिव कहँ तेहि सम कोउ प्रिय नांहीं

सो॰॥ एह तब पुत्र सुजान अयुत रुद्र मज्जन करै॥
अयुत वर्ष गुनवान महि में प्रमुदित इंद्र सम॥१३॥

अव्याहत बल विभव निरोगा। निहत शत्रु भोगि है बहु भोगा।
विगत पाप है है महराजा॥ करि है सुरव दर्भ अकंटक राजा॥
कृती शांत व्रतधर द्विजनायक। वेदपारगामी सब लायक॥

तपोनिष्ठ शिवभक्त सुजाना । बोलहु द्विजवर ज्ञाननिधाना

ते निर्मल मन विप्र उदारा ॥ करहिं रुद्र जप को विस्तारा

तिनके जप प्रभाव गुनवाना । ह्वै है तुरतहिं तव कल्याना

एहि प्रकार सुनि मुनिवर वयना । काश्मीर नरपति गुन अयना

मुनि को प्रथम वरन करि दीन्हा । सुखि आतिन्हहिं क्रियागुरु कीन्हा

दो॰॥ औरहु जे निर्लोभ मुनि तिन कहँ तुरत बुलाय

वरण कियो नृप मुदित मन मंडप रुचिर सजाय १४

ते सहस्र व्रतधर मुनिराया । सकल विमल उर सरल सुभाया

विमल रुचिर घट कलश धराये । पुन्य वृक्ष रस युक्त सोहाये

रुद्रजाप पुनि जपवायो ॥ नृपसुत को मज्जन करवायो

सप्तम वासर जेहि दिन आयो । विधि समेत पुनि तेहि अन्हवायो

मज्जन करत कछुक डरि गयेउ । छिन भरि लै मुर्छा गत भयेउ

मुनिवर कृत रक्षण नृप वाला । जागि उठो सहसा तत्काला ॥

कहन लगो एहि छिन हम देखा । क्रूर दंड धर पुरुष विशेखा

महा भयानक मुख मुनिराया । मोहि मारन को कियो उपाया

महा वीर कोउ तेहि छिन आये । सुंदर रुचिर वेष मन भाये ॥

ताहि वहुत ताडन तिन कीन्हा । हमको अभय दान तिन दीन्हा

लैगे ताहि पाश महँ वांधी ॥ अस कहि सुत रहिगो चुप साधी

एहि विधि वालक की सुनि वानी । मुदित भये सब ऋषिवर ज्ञानी

सुत को वहु आशिष तिन दीन्हा । नृप कहँ चरित निवेदन कीन्हा

तव नरेश अति मन हर्षाई । दीन दक्षिणा विपुल सोहाई

भक्ति सहित भोजन करवाई । मुनिगन के आशिष वर पाई

वंधु सहित पुनि भोजन कीन्हा । नृपति सभा महँ तव पग दीन्हा

दो॰॥ मुनिन संग जव सभा महँ कियो नृपति विश्राम ॥

चलि आये तहँ देवऋषि श्री नारद गुन धाम २५

मुनि को आवत देखि नृपाला । मुनिगण सभा सहित तत्काला
करि पूजा आसन वैठारे ॥ शिशु नाय नृप वचन उचारे
दीख होय अचरज जो कोई ॥ हम कहँ नाथ सुनावहु सोई
सकल सभासद सहित सुजाना । करहु नाथ वचनामृत पाना
हम नभ सों उतरत नरपाला । दिखा अचरज परम विशाला
ताहि सुनहु महिपाल विनीता । सव मुनिपुंगव वृंद सहीता
एहि छिन मृत्यु सकल दुखदायक । मारन हित तव सुत महिनायक
आयो दंड धरे विकराला ॥ जान्यो शंकर दीन दयाला
वीरभद्र कहँ आयसु दीन्हा । निज गण वृंद साथ करि दीन्हा
वीरभद्र तुरतहि चलि आयो । तव सुत निकट मृत्यु कहँ पायो
करि वहु क्रोध वांधि तेहि लीन्हा । वहुरि दंड गहि ताडन कीन्हा

दो॰ ॥ ईशानिकट कहँ लै चले जानि तुरत यमराय
जाय निकट शिर नाय कै दीन्हो वचन सुनाय १६

वीरभद्र प्रभु रुद्र विशाला ॥ पुनि २ प्रणमहु तोहि कृपाला
निरपराध एहु मृत्यु विचारा । करहु कौन हित क्रोध अपारा
कर्म विवश आगत आयु कुमारा । तासु घात जो मृत्यु विचारा
कहु अपराध तुम्हारो कीन्हा । वीरभद्र एह उत्तर दीन्हा ॥
दश सहस्त्र संवत यम राई । नृपसुत आयु परम सुखदाई
रुद्रस्नान भयो अघनाशा । तासु कौन विधि होय विनाशा
निश्चित मम वानी फुर एहा । जो पुनि होय तुम्हैं संदेहा ॥
चित्रगुप्त कहँ लेहु वोलाई ॥ पूछहु जेहि तव संशय जाई
धर्मराज तेहि तुरत वोलायो । चित्रगुप्त यम पहँ चलि आयो
पूछी तव सुत आयु प्रमाना ॥ चित्रगुप्त कह्यो कृपानिधाना

दो॰॥ द्वादशायु नरपाल सुत पुनि करि लेख विचार
अयुत वर्ष महि जिआहि गो सुख सों राजकुमार १७

सुनि भय भीत भये यमराजा ॥ फिर नायो तेहि सहित समाजा
बहुरि मृत्यु बंधन दुर्वारा ॥ खोलि दिओ तिन काहु प्रकारा
वीरभद्र खोला जब बंधन ॥ निज मंदिर यम गे अरिमर्दन
वीरभद्र गवने कैलाशा ॥ हम आये नृपवर तव पासा
एहि कारन तव सुत महि रावा ॥ तरो मृत्यु शिव जाप प्रभावा
रहिहै सदा सुखी दुख नाहीं ॥ दश सहस्र संवत महि मांहीं
अस कहि नारद गे सुरलोका ॥ नरपति प्रमुदित भयो विशोका
ऋषि मुनि सब जे नृपति बोलाये ॥ सकल मुदित निज धाम सिधाये

सो॰॥ एहि विधि मुदित नरेश रुद्र अध्याय प्रभाव सों ॥
तरि दुखसिंधु अशेश भयो कृतारथ पुत्र युत १८॥

छं॰॥ परमेश की महिमा रुचिर एह पढहिं जे नर गावहीं
पुनि पिअहिं जे नर करण पुट सो शंभु पद मन लावहीं
तिन किये जो भव कोटि महँ सो सकल पापन शाय कै
श्रीचंद्रशेखर लोक महँ सब जाहिं मन हर्षाय कै १॥

इति श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शित कैलाश मार्ग रुद्राध्याय महिमा प्रकाशनं नाम एक विंशो विश्रामः॥२१॥

श्री गणेशाय नमः॥ श्री शंकराय नमः॥ चौपाई॥

एह पंथा अति अय सुखदाई ॥ श्री शिव शंकर आपु देखाई ॥
संसृति बंधे जे नर मुनिनायक ॥ तिन कहँ वेगि मुक्ति की दायक
पुनि कुबुद्धि जे पुरुष गँवारा ॥ जिन्हहिं वेद में नहिं अधिकारा
नारी पुनि द्विज बंधु निकाया ॥ जे शरीर धारी मुनिराया ॥२॥

तिन कहं सुखदायक मम एहा। सुनहिं शंभु यश सहित सनेहा
परम मुक्ति साधन वर एहू ॥ सुर मुनि पूजित नहिं संदेहू ॥
भवभय सकल मिटावनिहारी शिव भक्तन कहं अतिशय प्यारी
अज्ञानिन कहं विप्र महीपा ॥ ज्ञान सिद्धि दायक वर दीपा
जे भव रोग बंधे दुख रूपा ॥ तिन कहं औषधि परम अनूपा
महा पाप सब शैल समाना ॥ वज्ररूप शिवचरित बखाना
कर्म बीज भर्जन मुनि राया ॥ सुख संपति को सहज उपाया
सकल लोक पावनि शिव गाथा सदा सुनहिं ते होंहिं सनाथा ॥
ते मनुष्य वर एहि जग मांहीं रुद्र रूप कछु संशय नांहीं ॥

सो॰ ॥ शिव गाथा अति रूरि सुनहिं तथा वरनन करहिं
तिन के पद की धूरि तीरथ सम मुनि गावहीं ॥ १ ॥

तेहि कारन मुनि ज्ञान निधाना जो नर चाहहिं निज कल्याना
ते नर वर अति भक्ति दृढाई ॥ सुनैं शंभु कीरति मन लाई
सदा सुनन को अवसर जाही जो नहिं मिलै उचित एह ताही
दुइ घटिका सो नर मुनि राई ॥ दिन प्रति श्रवण करै मन लाई
सुनि न सकै प्रति दिन पुनि जोई पुन्य मास दिन तिथि जब होई
तब शिव कथा पुरानन गाई ॥ श्रवण करै जो मन हर्षाई ॥
सो करि दग्ध कर्म वन सारा ॥ विन श्रम अवशि तरहि संसारा

सो॰ ॥ दुइ घटिका वा एक दिन भरि वा पावनि कथा ॥
प्रेम सहित गहि टेक सुनै न पावहिं अधम गति २

जो फल यज्ञन में श्रुति गायो ॥ जो फल दानन में दर्शायो ॥
सो सब फल पावहि नर सोई करहि पुराण श्रवण जो कोई
तजि पुराण गाथा मुनि राया कलि विशेष नहिं और उपाया
एहि सम और धर्म कोउ नांहीं मुक्ति पंथ दूसर जग मांहीं ॥

अवण पुराण सरिस जग मांहीं । अपर कीर्तन वर कोउ नांहीं
ताहि सुनैं जे लोग सुजाना ॥ फलदायक सुर विटप समाना ।
कलि के नर हीनायु अयाना ॥ दुर्वल अति पीडित अमनाना ।
बहुरि दुष्ट मेधा दुख भाजन ॥ धर्माचार रहित कलि के जन ॥
एह विचारि मुनि नाथ सुजाना । सत्यवती नंदन भगवाना ॥
विरचे तिनके हेतु पुराना ॥ परम स्वाद रस सुधा समाना ।
अमृत यत्न करि पीवहि जोई । अजरामर सोई नर होई ॥
शंभु कथामृत सेवहिं जोई ॥ कुल समेत अजरामर सोई ॥
बालक युवा वृद्ध बल हीना ॥ होहि दरिद्री वा अति दीना ।
पुराणज्ञ पंडित नर जोई ॥ पूजनीय सब ही करि सोई
कथा तासु वर्णित मुनि लीजे नीच बुद्धि तेहि में नहिं कीजै ॥
जासु बदन पंकज वर बानी ॥ काम धेनु के सरिस बखानी
गुरुवर बहु जग में गुन खाना । जन्म हेतु गुन हेतु सुजाना

दो॰॥ तिन सब में जो अति चतुर जानहिं विमल पुरान ॥
परम गुरू तेहि सन कहैं मुनिवर ज्ञान निधान ॥३॥

सो॰॥ जन्म कोटि शत पाय जिअत मरत दुख पावहीं
जो भव देय मिटाय तेहि समान को परम गुरु ४ ॥

वक्ता के लक्षण मुनि राई ॥ इहां कछुक में देहुं सुनाई ॥
पुराणज्ञ शुचि मत्सर हीना । शांत दांत अरु परम प्रवीना ।
साधु कृपानिधि वचन उदारा । पुन्य कथा कर ज्ञान न हारा
पौराणिक जन द्विज महिपाला । व्यासासन बैठे जेहि काला ॥
जो लौ प्रभु महिमा गुन गावै काहू को नहि शीश नवावै ॥
जिन कर सदा धूर्त व्यवहारा जिन कर पुनि खोटो आचारा
जीतन की इच्छा जे करहीं ॥ और बहुत पातक आचरहीं

सौरठ जे अति कुटिल अभागे । कहे कथा नहिं तिनके आगे

जहां शूद्र दुर्जन बहु तेरे ॥ विचरहिं श्वापद जंतु घनेरे

द्यूतभवन में नहिं पुनि जाई । कहे कबहूँ प्रभु कथा सोहाई

जहां होंहिं शुभ ग्राम सोहाये । सुजन जिहां निवसाहिं मनभाये

जे शुभ क्षेत्र देवस्थाना ॥ जे पावन सरित तट गुनवाना

तहां कहै शिव चरित सोहावन । देश होय सब बिधि जहँ पावन

शंभु प्रेम जिन के मन मांहीं ॥ दूसर काज मनोरथ नांहीं

सावधान गहि मौन सुजाना । ते श्रोता वर पुन्य निधाना

भक्ति रहित मनुजाधम जोई ॥ सुनहि शंभु यश पावन सोई ॥

बिन शिव भक्ति न कछु फल पावै । जन्म २ दुख पाप गँवावै ॥ः॥

सो॰ ॥ जिन पूजे नहिं व्यास तांबूलादिक भेर सों ॥ः॥

नित प्रति सहित हुलास सुनहिं भक्ति सों जो कथा ५

तिन कर पाप न शाय नहीं पापी ते कबहूं नर ॥ः॥

सुनि शौनक मुनिराय होंहिं दरिद्री ते सदा ६ ॥

दो॰ ॥ कथा होत जो नर अधम अनत कहूं चलि जाहिं ॥

तिनकी गृहणी संपदा नाशहिं बीचहि माहिं ७ ॥

पाग बांधि शिर महं जो कोई ॥ सुनै कथा पापी नर सोई ॥ः॥

मुनिवर ते नर अधम कहावहिं । अंतकाल में बकतन पावहिं

जे नर कथा श्रवण अनुसरहीं । तांबूल भक्षण नहं करहीं ॥

यमपुर निज पुरीष यम किंकर । तिन्हहिं खवावहिं परम भयंकर

दंभी उच्चासन आरूढा ॥ः॥ कथा सुनहि जे नर अति मूढा

अक्षय नर्क भोगि बहु काला ॥ होहिं काक पक्षी चांडाला ॥

जे वीरासन जे मंचासन ॥ः॥ कथा सुनहिं जे अति गर्वित मन

दो॰ ॥ अर्जुन पादप होंहि ते पुनि जे विनहि प्रनाम ॥ः॥

सुनहिं सकल नर होंहि ते विषपाद घदुख धाम॥

सुने सयन करिकै पुनि जोई
अजगर योनि लहै नर सोई
आसन वक्ता सरिस विछाई
सुने कथा वहु मान वढाई॥
भोगि पाप गुरु तल्प समाना
जाय नर्क महँ मनुज अयाना
कथा व्यास निंदा जे करहीं॥
ते शठ श्वान योनि अवतरहीं
जोहि छिन प्रभु कीरति शुभ होई
करै वतकही दुर्जन जोई॥
खर कै तन पावे अति पीरा॥
धरहि वहुरि कृकलाश शरीरा
प्रभु यश पावन सुखद अनूपा
कवहूं जे न सुनहिं अघ रूपा॥
ते नर भोगि नर्क वहु तेरे॥
लहहिं देह वन सूकर केरे॥

दो॰॥ कथा होत जे नर प्रवर अनुमोदहिं हर्षाय॥
विन हू सुने ते परम पद अवसि लहैं मुनिराय ६
कथा समय जे परम शठ विघ्न करैं तहँ जाय॥
वर्ष कोटि वहु नर्क महँ भोगहिं दुख समुदाय ७

नर्क भोगि जग मेंजव आवे॥
देह ग्राम सूकर की पावे॥ ८॥
जे पुराण गाथा अति पावनि
श्रवण करावैं जन मन भावनि
कल्प कोटि लौं ते मुनिराई॥
रहहिं ब्रह्म पद में हर्षाई॥
कंवल अजिन वसन मन भावन
मंच रुचिर फलक सोहावन
पौराणिक आसन के हेतू॥
देहिं महा सुकृती जन केतू॥
प्रथम हिं स्वर्ग लोक ते जाहीं॥
रुचिर भोग लहि अति हर्षाहीं
पुनि वसि ब्रह्मादि वर लोका॥
जाहिं निरमय पद हि विशोका
स्वत वसन अति रुचिर नवीना
व्यासहिं अर्पहिं परम प्रवीना
ते नर वरजवर तन गहहीं॥
ज्ञान भोग संयुत नित रहहीं
महापाप रत जे मुनिराया॥
कीन्हे उपपातक समुदाया
ते उ सुनि पुराण वर गाथा॥
जाहिं परम पद होहिं सनाथा

सो॰॥ इहां कहौं इतिहास अति पावन द्विजराज मैं ॥
सुनत पाप कर नाश अति विचित्र मनहारि शुभ ११

एक दक्षिण पथ महँ ग्रामू ॥ रह्यो वाष्कल तेहि कर नामू ॥
वसै मूढ़ जन कर समुदाया ॥ कर्म विवर्जित सब मुनिराया ॥
श्रुति स्मृति देखै नहिं कोई ॥ ब्रह्माचार कहाँ ते होई ॥ २॥
वेदपाठ जप आदि विहीना ॥ परवनिता रति दान प्रवीना ॥
वसहिं शस्त्रधर तहँ बहुतेरे तथा कृषी बल धाम घनेरे ॥
देवाराधन जानन कोई ॥ २॥ कोउ नहिं कुटिलाचार न जोई
परम धर्म जो ज्ञान विरागा ॥ नहिं जानैं सब गांव अभागा ॥
काम विवश नारी तहँ केरी ॥ स्वैरिनि कामिनि तिक्ष्ण बहुतेरी
कुटिल पंथ गत परम मलीना सदाचार वर्जित बुधि हीना ॥

सो॰॥ विंदुर नाम तहँ एक वसत रहा भूसुर अधम ॥
पूरन जेहि अविवेक तेहि वश गनिका वश भयो ॥

यद्यपि नारि रही गृह मांहीं॥ तदपि कुमारग धावहि ताही
साधु प्रिया निज भवन विहाई प्रतिदिन गनिका के गृह जाई ॥
तहाँ यथा रुचि करहिं विहारा नवयौवन मद भूसुर दारा ॥
नाम विंदुला यदपि सयानी॥ काम वेग वश अति अकुलानी
भयो जार संग मग्न अति प्रीती एहि प्रकार गे कछु दिन वीती
एक दिवस जब तेहि पति देखा धायो करि अति क्रोध विशेखा
देखत पतिहि जार गयो भागी पकरी नारि काम अनुरागी ॥
जब कीन्हो बहु मुष्टि प्रहारा ॥ नारि वाढ़ा क्रोध अपारा ॥ २॥
भर्ता को कुछ भय नहिं कीन्हा एहि विधि तेहि कोउ उत्तर दीन्हा
तुम नित गनिका के गृह जाई ॥ रमहु सदा अभिमत सुख पाई

दो॰॥ रूपवती नव योवना जो मैं नारि तुम्हारि ॥ २॥

कामव्यथा कैसे सहौं जेहि तुम दियो विसारि ॥९३

एहि उपायविन कागति मोरी । तुमहीं कहो विचारि वहोरी
जव एहि नारि गिरा सुनि पाई । भूसुर अधम कह्यो हर्षाई ॥
उचित कही भामिनि तुम वानी । सुनु अव निज हित परम सयानी
जारन सों अभिमत धन लेहू ॥ वहुरि तिन्हहिं रतिसुख नित देहू
सो धन दिक्षा करो मोहि कामिनि । मैं सो देवगनि कहि द्युति दामिनि
जो एह मानहु वचन हमारा ॥ ह्वै है काज हमार तुम्हारा ॥
भलेहि नाथ कहि पति अनुशासन । शिर धरि लीन्हो नारि मुदित मन
दंपति दुराचार मन भायो । एहि विधि करि कछु काल गंमायो
भयो विदुर द्विज कोपर लोकू । सुतन सहित नगर हगी लह्यो शोकू

दो॰॥ कछुक वर्ष निज गेह महं कीन्हो नारि निवास ॥
योवन को मद उतरि कै भा कुछ रूप उदास ९४

दैव योग शिव तिथि वर आई । पुन्य पर्व सव भांति सोहाई ॥
द्विज वनिता निज कुल जन साथा । गई गोकरन तीरथ नाथा ॥
करि तीरथ जल में अस्नाना । देखा रुचिर देव अस्थाना ॥
होत रही प्रभु कथा सोहाई । वैठि सुनन लागी मन लाई ॥
जार रक्त नारि जो कोई ॥ ८ ॥ पहुंचहि जव हिं नर्क महं सोई ॥
तप्त लोह परि घाय मकिंकर । क्षेपहिं पंचवाण के मंदिर ॥
वक्ता मुख सों एह भयकारी ॥ सुनि गाथा डरपी अति नारी
रहसि देखि वक्ता ढिग जाई ॥ शीश नाय एह विनय सुनाई
द्विजवर नाथ तरुण वय पाई । कामाचार कियो अधिकाई ॥
कुटिल पंथ में पगु धरि दीन्हा । जो नहिं उचित रहा सो कीन्हा

सो॰॥ विन जाने वड पाप द्विजवर मो सन वनि परो ॥
भयो हृदय संताप भय उपजी तव वचन सुनि ९५

पुनि २ कांपत मोर शरीरा ॥
मोगगण सों अति प्रीति बढ़ाई
मदन विमोहित हृदय हमारा
जेहि कारन थोरे सुख हेतू ॥
मरण काल केहि विधि यम किंकर
मम गल महँ वल करित पाशा
नर्कन महँ एह मोर शरीरा
तम्र जार कर्दम द्विज राया ॥
केहि प्रकार बहु योनि अपारा
भूमि हौं अति दुख पाय घनेरा
आजु दिवस ते मोहि द्विज राई
ऐहै नींद कौन विधि मोही ॥

समुझि दशा मन मैं अति पीरा
पाप करत मोहि लाज न आई
बार २ हम को धिक्कारा ॥ २ ॥
अति दुर्गति पैहों द्विज केतू ॥
नयनन दे खहुँ परम भयंकर
बांधहिं गे ह्वै है अति त्रासा ॥
छेदजनित ताकिमि सहिहै पीरा
गिरि किमि सहि हौं दुख समुदाया
कृमि खग कीटादिक विस्तारा
किमि सहिहैं पीडित मन मेरा
केहि प्रकार मोहि असन सोहाई
निज दुख किमि बरनौं प्रभु तोही ॥

छं० ॥ दाहत भई मैं दग्ध मम उर मधु विदीरण ह्वै गयो
हा विधि दई दुर्बुद्धि मोहि अति पाप में उरत भयो ॥
गिरि तुंग सों नर गिरत जो बेधित शूल सों दुख पाव जो
तेहि दुःख सों शत कोटि दुख ह्वै रहो मोहि नाथ सो
सो० ॥ सौ हय मेध विधान शत संवत लौ देव सरि ॥
यदपि करौं अस्नान शुद्ध हों हु नाहिं पाप अति १६
कहा करौं कहँ जाय केहि की शरण गति गहौं ॥
को अवलेत बचाय नर्क सिंधु महँ गिरत मोहि १७

तुमहीं गुरु पितु मात समाना
मैं शरणागत तब द्विज राया
अस कहि चरन गहे अकुलाई
द्विज पुंगव तेहि दीन उठाई ॥

करहु मोर उद्धार सुजाना ॥
दीन जानि कीजे अब दाया ॥
दुखी देखि करुना उर छाई ॥
कृपा सहित एह गिरा सुनाई

बडे भाग भामिनि शुभ तेरे। सुनि पुराण तैं जगी सवेरे ॥
मति डरपाहि अपने मन मांहीं। सुखद उपाय कहौं तोहि पांहीं
कथा प्रभाव न कछु संदेहा ॥ श्रवण करत उपजी मति एहा ॥
भयो विषय वैराग सयानी। भाअति ताप पाप उर आनी

सो॰ ॥ अघ करि जो पछिताय सकल पाप निःकृत परम
ताही सों वनि जाय प्रायश्चित सुजान को ॥ १८ ॥

प्रायश्चित्त शुभग अति सोई। जो करि पाप ताप उर होई ॥
कीन्हो निःकृत यथा विधाना। जेहि के उर नहिं ताप सुजाना
तेनर उत्तम गति नहिं पावैं। वेद पुराण प्रगट दर्शावैं ॥
शोधै पुनि २ जो नर कोई ॥ जिमि दर्पण अति निर्मल होई
तिमि सुनि २ प्रभु कथा सोहाई। चित्त महा निर्मल ह्वै जाई ॥
जब विशुद्ध पावन उर नर को। ध्यान वनहिं तब श्री शंकर को
जवहीं ध्यान सिद्ध ह्वै जाई ॥ मन वच क्रम मल सकल नशाई
तवही होय कृतारथ एह नर। पावहि शंभु परम पद सुंदर
वनो न जिन सब सुकृत घनेरा। साधन परम चरित प्रभु केरा
कथा सुनत वनि आवहि ध्याना। ध्यान करत निर्बाण बखाना
बिमल ज्ञान कीन्हे जो नर वर। सुनत रहै प्रभु चरित निरंतर
दूसरे जन्म ध्यान वनि आवे। करतहि ध्यान परम गति पावै
सकल श्रेय को बीज सोहायो। कथा श्रवण वेदन दर्शायो
तेहि विहीन पशु नर नहिं सोई। भव बंधन बिमुक्त किमि होई
एहि कारन अति भाक्ति दृढाई। विषय लालसा सकल वहाई
सुनहु कथा सादर मन लाई। तोर हृदय निर्मल ह्वै जाई
ताहि मन सों शिव ध्यान लगै है। अनपायिनी भाक्ति तैं पै है ॥

सो॰ ॥ जो तैं सहित सनेह ध्यावहिगी शिव को चरन ॥

है है बिन संदेह एही जन्म महँ मुक्ति तव ॥ २२ ॥

सत्य सत्य यह गिरा हमारी ॥ मानि आचरन करु द्विज नारि
एहि बिधि बिप्र वचन सुनि पाये नारि उभय लोचन जल छाये ॥
कियो कृतारथ मोहि द्विज राई अस कहि गे चरन लपिटाई
ताही थल में कीन्ह निवासा ॥ ताही द्विजवर के नित पासा ॥
गाथा मुक्ति दानि अघ हारी ॥ सुनहि प्रेम युत भूसुर नारी ॥
सो द्विज नायक अति उपकारी कथा विराग बढावनि हारी ॥
कहहि सदा सादर मन लाई ॥ सुनत विषय तृष्णा मिटि जाई
जस २ तेहि मन भयो विरागा ॥ मन निर्मल शिव पद अनुरागा

सो॰ ॥ तब बरनी द्विजराय भक्ति समान्वित शिव कथा ॥
गयो हृदय हर्षाय जिमि २ नारी विमल मन २९

तिमि २ शंभु चरित रुचि बाढी ध्यान योग निष्ठा अति गाढी ॥
भारजतम संभव मल दूरी ॥ सावधान सब गोगन रूरी ॥
क्रम २ मानस विमल भयो अति स्थिर भै उर मैं शिव मूरति ॥
एहि विधि गुरुवर की सेवकाई द्विज गृहनी सुंदर मति पाई ॥
कीन्हो बार २ शिव ध्याना ॥:॥ चिदानंद वपु शंभु सुजाना
नित तीरथ जल में मज्जन करि वल्कल जटा धरे तन सुंदरि ॥
भस्मोद्धूलित अंग सोहाये ॥ रुचिर अक्ष भूषन छवि छाये ॥
शंभु नाम जप में अति प्रेमू ॥ गह्यो मौन मित भोजन नेमू ॥
सावधान बैठे पद्मासन ॥ कथा श्रवण उत्कंठा अति मन
गुरु शुश्रूषा महँ रति मानी त्यागि दिये सुत बंधु सयानी
श्री गुरुवर जो दियो नियोगा शिव परितोष सोई करि योगा
दिन प्रति शिव पद प्रेम बढावै एहि प्रकार बहु विनय सुनावै

छं॰ ॥ विश्व प्रभव थिति जन्म लय कारन उमापति ध्यावहूं

हे विश्व वंदित शिव सनातन विश्वरूप मनावहूं ॥
कृत नाश सब भव भीति गुण अवभास एह सुनि लीजिये
श्रीमन्महाशिव मोहि पर करुना विलोकनि कीजिये ॥ २
हे शंभु विधु शेखर कृपानिधि शांत मूरति अघ हरे ॥
हे गंगधर वर अमर पूजित पादपद्म मनोहरे ॥ २२ ॥
नागेंद्र भूषण नंगनि के तन एह विनय सुनि लीजिये
भक्तार्त्ति हर हम पर सदा करुना विलोकनि कीजिये
श्री विश्वनायक कृपा मूरति शूलधर गिरजापते ॥
भूतेश त्रिभुवन गीत कीरति विश्व मूरति सद्गते ॥
हे नीलकंठ कृपाल मेरी एह विनय सुनि लीजिये
श्री मदन भर्जन भर्ग मोपर कृपाचित बनि कीजिये
दो॰ ॥ एहि विधि प्रतिदिन भक्ति सों विनती करत सुजान
सुनति कथा श्री शंभु की कर्म बंध बिलगान ॥ २२ ॥

एहि विधि करि शिवपद अनुरागा । द्विज तिहुँ काल पाय तन त्यागा
लेगे ताहि शंभु के किंकर ॥ २ ॥ पहुँची जाय जहाँ शिव मंदिर
गणपति नंद्यादिक वर देवा ॥ करहिं सकल गौरी पति सेवा ॥
पंच बदन सुंदर त्रय लोचन ॥ नील ग्रीव स्वजन भय मोचन
बाम अंग गिरिजा छवि धामा । चपला विधु सम अति अभिरामा
देखि ससंभ्रम नारि सयानी ॥ करि प्रणाम पुनि २ हर्षानी
नयनन में आनंद जल बाढे ॥ पुलक शरीर रोम भे ठाढे ॥
करुना कर शंकर भगवाना । तथा उमा कीन्हो सन्माना ई
दो॰ ॥ परानंद घन ज्योतिमय लोक सनातन जाय ॥
अचल बास पायो तहाँ मन सुख कहि न सिराय ॥
एक समय गौरी ढिग जाई ॥ २ ॥ करि प्रनाम बहु विनय सुनाई

॥ पर्वत

१४८ [illegible] ॥

रुख लखि एहु पूछा शिर नाई
कह्यो देवि तेरो पति सुन्दरि ॥
सो विंध्याचल में एहि काला
पुनि पूछ्यो तेहि करि विनती अति
एहि प्रकार सुनि द्विज तिय वानी
अति पावन वर चरित हमारा
तो समस्त दुर्गति तरि जैहै ॥

मेरे नाह कौन गति पाई ॥ २ ॥
नर्कन के बहु दुःख भोग करि
उपजो जाय पिशाच कराला
पैहै केहि उपाय उत्तम गति ॥
बोली हिमगिरि सुता सयानी
सुनि पावै जो नाह तुम्हारा ॥
एही लोक आनंद मय पैहै ॥

दो॰ ॥ सुनि गिरिजा के वचन वर द्विज तिय जोरे हाथ ॥
विनय कीन्ह निज नाह हित जेहि में होहि सनाथ ४

बार २ सुनि विनय सोहाई ॥
तब तुंबुर गंधर्व बोलायो ॥
विंध्याचल महँ जाहु सुजाना
तहँ कियो एक पिशाच बसेरा
तेहि के सन्मुख चरित हमारा
दुर्गति जबहिं मुक्त है जाई ॥
एहि विधि गिरिजा आयसु पाई
तेहि समेत चढ़ि रुचिर विमाना

गिरिजा करुनारस सरसाई
एहि विधि आयसु ताहि सुनायो
भूसुर तिय सहित गुन वाना
सो अति पापी पति एहि केरा
वरनहु पावन गुन विस्तारा
शिव ढिग लावहु यान चढाई
तुंबुरु उमा चरन शिर नाई ॥
विंध्याचल कहँ कीन्ह पयाना

दो॰ ॥ लाल विलोचन महा तनु धावहि सहित विलास ॥
कबहूँ रोवत हँसत लखि गहि बांधो दृढ पाश ५ ॥

एहि प्रकार तेहि धरि बैठारी ॥
गौरी पति गाथा विस्तारी ॥
भयो तुरत सब कलुष विनाशा
तजि पिशाच वपु दिव्य शरीरा
श्री गिरिजा पति कथा सोहाई

तुंबुरु वीणा रुचिर संवारी
सुनि पिशाच पावनि अघ हारी
कियो विमल उर ज्ञान प्रकाशा
भयो मुदित मन अति मति धीरा
सो उगावन लागो मन लाई ॥

दिव्य रूप चढ़ि रुचिर बिमाना। तुंबुरु प्रिया सहित हर्षाना॥
गावत श्री शिवचरित मनोहर। पहुँचो जाय दिव्य शिव मंदिर।
लोक सनातन अति सुख राशी। जहाँ मुक्ति प्रद शिव अविनाशी।
दुरित विनाशन चरित सोहावा। शिवयश मुनिवर तुम्हहि सुनावा।
परम ज्ञान साधन वर एहा॥ शंभु प्रीति कर नहिं संदेहा॥

छं॰॥ श्री शंभु को गुन गाथ पावन अति विचित्र सोहावनो।
हरु पाप परमानंद प्रद संसार रोग नशावनो॥ १॥
एह सुनहि जो नर नारि मन धरि पढ़हिं सुमिरहिं गावहीं।
एहि लोक में लहि भोग सुंदर परम गति पुनि पावहीं २॥
सो॰॥ मुनिवर तव बड़ भाग परम कृतारथ रूप सब॥
सदा सहित अनुराग कथा सुधा रस सेवहू॥ २६॥
छं॰॥ है जन्म तेहि को सफल जग में जो सदा शिव ध्यावही।
श्री शंभु के गुन परम पावन जासु रसना गावही॥ १॥
शुभ श्रवण पुट सों रुचिर कीरति सुधा सेवन करत जे।
पावहिं परम आनंद भव वारीश सुख सों तरत ते २॥
छं॰॥ जो विविध गुन के भेद सो विश्वरूप न लखि परै।
जग मांहि भीतर बाहिरे जो विभु निवास सदा करै॥
निज तेज में विहरहि सदा मन वचन सों अति दूरि जो॥
श्री शिव सनातन सघन आनंद शरण राखहु मोहि सो॥
सो॰ शौनक प्रति एह अति रुचिर गायो सूत सुजान॥
प्रभु प्रेरित भाषा कियो करि माधव हर ध्यान॥२७

एहि प्रकार हर चरित सोहावा। शंभु प्रसाद यथा मति गावा।
भक्ति प्रधान चरित शिव केरा। करहि काहि नहिं मोद घनेरा।
शंभु प्रेम दायिनि एह गाथा॥ सुनत नारि नर होंहिं सनाथा।